IX Class Hindi First Language

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

उमंग-1

IX Class Hindi First Language

कक्षा -9

FREE

हिंदी प्रथम भाषा

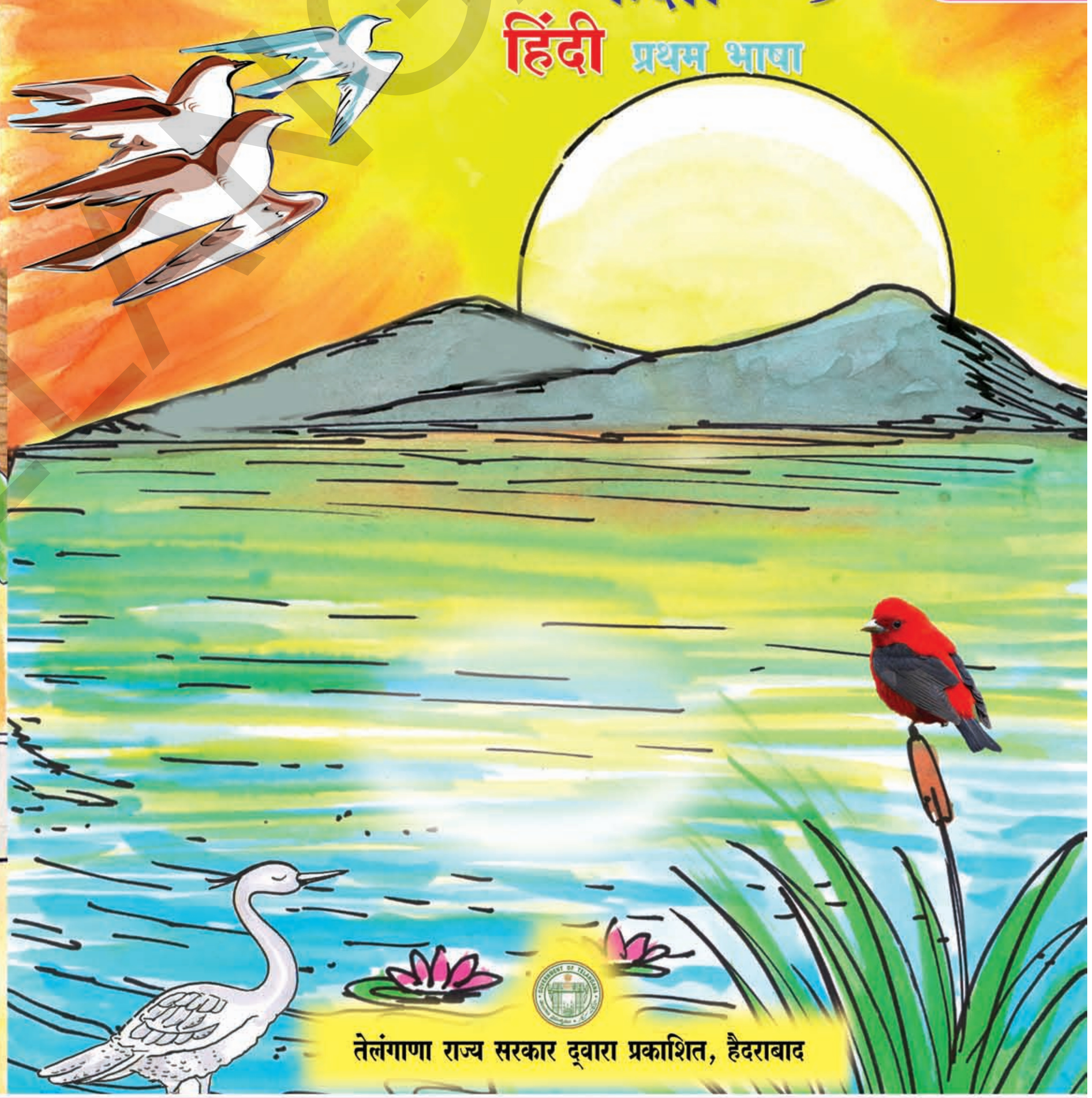

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ के अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण दिया गया है। इसके माध्यम से आपको सबसे पहले संज्ञा शब्दों, तत्पश्चात क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों द्वारा चर्चा करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'सुनो-बोलो' और 'पढ़ो' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। पढ़ो प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। इसका उद्देश्य आपमें पढ़ना व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें 'लिखो', 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' और 'प्रशंसा' के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए।
* हर पाठ में 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इसमें शब्द-भंडार व व्याकरणांश के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे आपको व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

SCERT TELANGANA

उमंग - 1

कक्षा - 9 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-IX Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त भाषाविद,
भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद, तेलंगाणा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस. याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर
निदेशक,
सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस,
तेलंगाणा, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2013

New Impressions 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2020-21

Printed in India
at Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana

— o —

SCERT TELANGANA

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इसके साथ ही एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई-2009, ए.पी.एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों को बाहरी जीवन से जोड़ा जाए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएगा।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा करने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनःनिर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री तथा सुवर्ण विनायक और पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसाइटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में अनेक विद्वतजनों का सहयोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस पाठ्यपुस्तक में जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, उनके एवं उनके प्रकाशकों के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद आपके सुझावों का स्वागत करेगी।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा राज्य सरकार

SCERT TELANGANA

शिक्षकों से...

- यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर तैयार की गई है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। यह भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है।
- पाठ्यक्रम के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। इसके लिए भाषा-शिक्षण की प्रचलित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है, क्योंकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है।
- हिंदी में अनेक बोली-भाषा और क्षेत्रीय प्रभावों का समावेश है। ये भाषा संसार के पोषक अंग हैं और धरोहर भी। इसलिए पाठों में आंचलिक पहचान के साथ लोक प्रचलित शब्द, मुहावरे, क्षेत्रीय परिवेश आदि का चित्रण है।
- पाठ्यपुस्तक के सोलह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इनके अतिरिक्त केवल पढ़ने के लिए दी गई पठन सामग्री का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक की सर्वांग आपूर्ति करना है।
- नवीं के विद्यार्थियों की भाषा और विचार-बोध का एक पूर्व आधार तैयार हो चुका है। अब उनके भाषिक दायरे और वैचारिक समृद्धि को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे हिंदी भाषा और साहित्य की पढ़ाई कर सकें। वे भाषिक रूप से इतने दक्ष हो जाएँ कि हिंदी उनके विमर्श और ज्ञान-विज्ञान की भाषा बन सके।
- इस पाठ्यपुस्तक में मुद्रण एवं टंकण की दृष्टि से विविध प्रकार की प्रचलित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है ताकि छात्र इनसे भी अवगत हो सकें।
- सृजनात्मक साहित्य हमारी भाषिक दक्षता को पुख्ता बनाता है और संवेदनशीलता को परिष्कृत करता है। साथ ही वह सौंदर्य-बोध को भी समृद्ध करता है। इसीलिए एक ऐसी पाठ्यपुस्तक बनाने की ज़रूरत महसूस की गई जिसकी पाठ्य सामग्री में विषयगत विविधता हो, नवीनता हो और वह स्तर के अनुकूल भी हो।
- इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी साहित्य की समृद्ध परंपरा की पहचान के लिए मध्यकालीन कविता का आस्वाद लें और आज के जीवन को जानने के लिए आधुनिक कविता का भी बोध प्राप्त करें। भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना को वे कबीर और वृंद की कविता के माध्यम से जानें और भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित होने के लिए ललद्यद को भी पढ़ें। स्वतंत्रता आंदोलन, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा को महत्व देने के लिए पुस्तक में हिंदी कविता के विभिन्न कालों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवियों की कविताएँ रखी गई हैं।
- इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि उन रचनाओं से बहुलवादी और धर्म-निरपेक्ष समाज का रूप भी सामने आए। हम साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कर सकें। भारतीय समाज के बहुभाषिक परिवेश को भी ध्यान में रखा गया है।
- इस पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है उसका नया प्रस्तुतीकरण। यह नया प्रस्तुतीकरण प्रश्न-अभ्यासों के माध्यम से किया गया है। पाठ्यपुस्तक में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और प्रश्न-अभ्यास उन रचनाओं को परखने और पाठ से गहराई से जुड़ने का मौका देते हैं। वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र और मौलिक रूप से सोचने की प्रेरणा भी देते हैं, इसलिए इस पुस्तक में संदर्भ को फैलाने वाले, कल्पना को विस्तार देने

SCERT TELANGANA

वाले और वैज्ञानिक तत्परता विकसित करने वाले प्रश्न पूछे गए हैं। बोध-प्रश्नों को सिलसिलेवार तरीके से पूछने की परिपाटी को तोड़ने का प्रयास किया गया है।

- अभ्यास के प्रथम चरण का शीर्षक **अर्थग्राह्यता-अभिव्यक्ति** है। इसके अंतर्गत दो बिंदु हैं- **विचार-विमर्श** तथा **पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार। विचार-विमर्श** के अंतर्गत आने वाले प्रश्नों का उद्देश्य बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना है। यह अभिव्यक्ति बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। अतः इस कौशल के अभ्यास में पाठ के संदर्भों पर बालक को विविध दृष्टिकोणों से सोचने और अपनी बात कहने का मौका मिले। **पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार** के अंतर्गत तीन चरण हैं जिनमें क्रमशः 'पाठ को पढ़ने के लिए प्रेरित करना', 'पाठ का भाव समझने के लिए अभ्यास करवाना' तथा 'पढ़ी हुई सामग्री का भाव विस्तार करने की योग्यता का विकास' का उद्देश्य शामिल है।
- **अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता-** इसके अंतर्गत कुल तीन स्तंभ हैं- **स्वाभिव्यक्ति, सृजनात्मक कार्य एवं प्रशंसा। स्वाभिव्यक्ति** में विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया गया है। यह बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। इसमें उनके स्वलेखन की झलक हो। **सृजनात्मक कार्य** को भाषा कौशल का चरम विकास माना जा सकता है। बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं। **प्रशंसा** के अंतर्गत इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।
- **भाषा की बात** का उद्देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है। साथ ही साथ शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का विविध संदर्भों में प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना भी है।
- विद्यार्थियों की अर्थबोध संबंधी कठिनाई के निवारण हेतु पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्द-संपदा दी गई है। इसमें शब्दों के अर्थ पाठ में आए संदर्भानुसार दिये गये हैं।
- सभी बच्चों की सहभागिता का विशेष महत्व है। छात्रों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर मुहैया कराएँ। बच्चों को विविध संदर्भों के विषय में बातचीत के अवसर दें। उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों में सहभागिता एवं सहयोग की भावना का विकास हो।
- प्रस्तावना प्रसंग का शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में हैं। प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। ये क्रियाकलाप मौखिक होने चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में परियोजना है। इसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।

शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करेंगे और आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे। परिषद पुस्तक के परिष्कार हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत करेगी।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन हैं हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, हैदराबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
जी.जी.एच.एस. सुल्तान बाज़ार,
हैदराबाद, तेलंगाणा

शेख़ हाजी नूरानी
ज़ेड.पी.एच.एस. चिट्याल,
वरंगल, तेलंगाणा

बी. जयप्रकाश जोसफ
ज़ेड.पी.एच.एस. गरुगुबिल्ली,
विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
पाठशाला सहायक हिंदी, एस.आर.जी,
जी.एच.एस. (जूनियर कॉलेज),
भुवनगिरि, नलगोंडा

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस.फॉर डेफ एंड डम, मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
जी.एच.एस. काचीगुड़ा,
हैदराबाद

चित्रांकन

श्री कुर्रेल्ला राघवाचारी
जेड.पी.एच.एस. नकरेकल, नलगोंडा

ले आउट & डिज़ाइन - श्री कुर्रा सुरेश बाबू एम.ए., एम.फिल., बी.टेक.

SCERT TELANGANA

विषय सूची

इकाई	क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	कबीर	कविता	जून	1
	2.	वह आवाज़	कहानी	जून	6
	3.	वृंद	कविता	जुलाई	13
	4.	तुम कब जाओगे, अतिथि!	कहानी	जुलाई	17
	उपवाचक	इस जल प्रलय में	संस्मरण	जुलाई	23
II.	5.	ललद्‌यद	कविता	अगस्त	29
	6.	दो बैलों की कथा	कहानी	अगस्त	34
	7.	कैदी और कोकिला	कविता	सितंबर	49
	8.	नाना साहब की पुत्री	रिपोर्ताज	सितंबर	56
	उपवाचक	रीढ़ की हड्डी	एकांकी	सितंबर	63
III.	9.	ग्रामश्री	कविता	अक्तूबर	73
	10.	साँवले सपनों की याद	संस्मरण	नवंबर	79
	11.	एक कुत्ता और एक मैना	निबंध	नवंबर	86
	12.	उपभोक्तावाद की संस्कृति	निबंध	नवंबर	94
	उपवाचक	माटीवाली	कहानी	दिसंबर	100
IV.	13.	खुशबू रचते हैं हाथ	कविता	दिसंबर	103
	14.	ल्हासा की ओर	यात्रा-वृत्तांत	जनवरी	108
	15.	बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता	जनवरी	116
	16.	मेरे बचपन के दिन	संस्मरण	फरवरी	121
	उपवाचक	अनोखा उपाय	कहानी	फरवरी	128
		शब्द संपदा			131

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

इस पाठ्यपुस्तक द्वारा अपेक्षित दक्षताएँ

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि में कही गई बातें अपने शब्दों में बता सकेंगे। उनके बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- ज्ञात विषय के बारे में चर्चा कर सकेंगे। उसके पक्ष-विपक्ष में अपना मत रख सकेंगे।
- संदर्भानुसार बातचीत कर सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, संवाद, निबंध, पत्र-लेखन, डायरी, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का उचित आरोहावरोह के साथ सस्वर वाचन कर सकेंगे। साथ ही साथ मौनवाचन करने में भी सक्षम होंगे।
- पढ़ी हुई सामग्री का भाव समझ सकेंगे, भाव स्पष्ट कर सकेंगे और समान भाव की अपठित सामग्री से तुलना कर सकेंगे।
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकालय की पुस्तकें आदि पढ़ने में रुचि लेंगे।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

- ज्ञात विषय के बारे में अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का सार लिख सकेंगे। इसका विस्तार व व्याख्या लिख सकेंगे।
- अपने लेखन में विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- बिना किसी वर्तनी दोष के अपने विचार लिख सकेंगे।
- स्वबोध, आध्यात्मिकता, नीति, आत्मविश्लेषण, जीवप्रेम, स्वतंत्रता, देशप्रेम, ग्रामीणता, जीवन कौशल, सामाजिकता, कर्मठता, श्रमिक महत्व, यात्रा, सद्भाव आदि का सामाजिक एवं नैतिक महत्व समझ सकेंगे। अर्जित ज्ञान का महत्व समझते हुए उसके प्रति प्रशंसा का भाव रख सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, आत्मकथा, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, सूक्ति वाक्य आदि रचने का प्रयास कर सकेंगे।
- कविताओं का गायन, भाषण, पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, साक्षात्कार आदि क्रियाकलाप कर सकेंगे।

3. भाषा की बात

- परिचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का संदर्भोचित प्रयोग कर सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का अर्थ समझ सकेंगे।
- विशेषण-विशेष्य, शब्द भेद, शब्द के रूप परिवर्तन, कारक विभक्तियाँ, शब्द शक्तियाँ, मुहावरे, प्रयोजन विशेष से बनने वाले शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, सामासिक शब्द आदि भाषिक तत्वों के प्रयोग समझ सकेंगे।

4. परियोजना कार्य

- अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार कर सकेंगे।
- विविध स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। प्राप्त ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

1. कबीर

रचनाकार

कबीर के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि सन् 1398 में काशी में उनका जन्म हुआ और सन् 1518 के आसपास मगहर में देहांत। कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी परंतु सत्संग, पर्यटन तथा अनुभव से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था।

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि कबीर की रचनाएँ मुख्यतः **कबीर ग्रंथावली** में संग्रहित हैं किंतु कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह **बीजक** ही प्रामाणिक माना जाता है। कुछ रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहेब' में भी संकलित हैं।

कबीर अत्यंत उदार, निर्भीक तथा सद्गृहस्थ संत थे। राम और रहीम की एकता में विश्वास रखने वाले कबीर ने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। उन्होंने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की। ईश्वर-प्रेम, ज्ञान तथा वैराग्य, गुरुभक्ति, सत्संग और साधु-महिमा के साथ आत्मबोध और जगतबोध की अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। कबीर की भाषा की सहजता ही उनकी काव्यात्मकता की शक्ति है। जनभाषा के निकट होने के कारण उनकी काव्यभाषा में दार्शनिक चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की शक्ति है।

प्रस्तावना प्रसंग

नर नारायण स्वरूप है, सारी दुनिया में परमेश्वर भरा है। इस परमेश्वर की सेवा हमारे हाथों होनी चाहिए। परमेश्वर की पूजा यानी दीन-दुखी जनों की सेवा।

–आचार्य विनोबा भावे

प्रश्न

1. विनोबा जी परमेश्वर की सेवा किसे मानते हैं?
2. आप किस प्रकार की सेवा करना चाहेंगे?
3. समाज सुधारक कबीर के बारे में आप क्या जानते हैं?

भूमिका

यहाँ संकलित साखियों में प्रेम का महत्व, संत के लक्षण, ज्ञान की महिमा, बाह्याडंबरों का विरोध आदि भावों का उल्लेख हुआ है। पहले सबद (पद) में बाह्याडंबरों का विरोध एवं अपने भीतर ही ईश्वर की व्याप्ति का संकेत है तो दूसरे सबद में 'ज्ञान की आँधी' के रूपक के सहारे ज्ञान के महत्व का वर्णन है। कबीर कहते हैं कि ज्ञान की सहायता से मनुष्य अपनी दुर्बलताओं से मुक्त होता है।

SCERT TELANGANA

साखियाँ

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।। ।1।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।। ।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।। ।3।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।। ।4।

हिंदु मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।। ।5।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।। ।6।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।। ।7।

SCERT TELANGANA

सबद (पद)

1. मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

2. संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी।।

हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।

जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

कहै कबीर भाँन के प्रगटे, उदित भया तम खीनाँ।।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? इस बारे में अपने विचार दीजिए।
2. हमें बड़ों की बातों का अनुसरण क्यों करना चाहिए? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. यह किस दोहे का संदेश है?
   क. जो ईश्वर–भक्ति में लीन हो जाता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं भटकता।
   ख. हमें परमात्मा के रहस्य को समझे बिना धार्मिक आडंबरों के बंधन में नहीं फँसना चाहिए।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बतायी है?
3. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है?
2. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?
3. कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस क्यों कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

नीचे दिए गए कबीर के दोहे पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगो, बहुरि करैगो कब।।1।।
धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय।।2।।

1. पहले दोहे का भाव क्या है?
2. दूसरे दोहे का भाव बताइए।
3. दोनों दोहे कबीर ने ही लिखे हैं। उन्होंने परस्पर विरोधी बातें क्यों कही होंगी?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?
2. ज्ञान का हमारे जीवन में क्या महत्व है?
3. कबीर ने धार्मिक आडंबरों का खंडन किया है लेकिन साथ–ही साथ वे ईश्वरीय सत्ता को भी स्वीकार करते हैं। आप किस प्रकार की भक्ति में विश्वास रखते हैं? अपने विचार लिखिए।
4. आज भी समाज में अनेक अंधविश्वास हैं। उन्हें दूर करने लिए आप क्या करना चाहेंगे?
5. धार्मिक सद्भावना सामाजिक एकता की कड़ी है। स्पष्ट कीजिए।

II. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेम और ज्ञान के बारे में कबीर के विचारों पर प्रकाश डालिए।
3. कबीर के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

इस पाठ से कुछ सूक्ति वाक्यों का निर्माण कीजिए। उसे चार्ट पर लिखकर दीवार पत्रिका पर लगाइए।

उदाहरण : महानता श्रेष्ठ कुल से नहीं, श्रेष्ठ कर्मों से प्राप्त होती है।

❖ प्रशंसा

वर्तमान समाज में जहाँ तीव्र गति से मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है, वहाँ कबीर जैसे संतों के उपदेशों का क्या महत्व है?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख

परियोजना कार्य

कबीरदास एक समाज सुधारक कवि के रूप में विख्यात हैं। उनकी तरह के किसी एक अन्य कवि की कोई एक रचना खोज कर लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

2. वह आवाज़

रचनाकार

विष्णु प्रभाकर हिंदी के प्रतिष्ठित नाटककार व कहानीकार हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने जीवनी, लघुकथा साहित्य में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी पहली लघुकथा **सार्थकता** मुंशी प्रेमचंद द्वारा संस्थापित/संपादित **हंस** पत्रिका में जनवरी 1939 के अंक में प्रकाशित हुई थी। इनके अब तक 'जीवन पराग', 'आपकी कृपा है' और 'कौन जीता कौन हारा' नामक तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन तीनों ही संग्रहों में लघुकथाएँ और बोध कथाएँ, दोनों साथ-साथ रखी गई हैं। इनकी कहानियों में मनुष्य-मनुष्य के बीच बनाई गई सीमाओं पर सहज व्यंग्य किया गया है, इनकी कुछ रचनाएँ भावनात्मक धरातल पर आकर सांप्रदायिक भेदभाव को भुलाने की प्रेरणा देती हैं। विष्णु प्रभाकर की सन् 1963 के बाद लिखी लघुकथाएँ मुख्य रूप से मानवीय संवेदनाओं की रचनाएँ हैं। उन्होंने द्वंद्व के माध्यम से छिपे शुभ और सुंदर तत्वों को उभारने का कलात्मक प्रयास किया है। इन रचनाओं की ताकत इनकी सजग सरलता व सहजता में है।

प्रस्तावना प्रसंग

हर किसी के भीतर
एक गीत सोता है।
जो उसी का
प्रतीक्षामान होता है।
कि कोई उसे छूकर जगा दे।
जमी परतें पिघला दे
और एक धार बहा दे।
– अज्ञेय

प्रश्न

1. 'हर किसी के भीतर एक गीत सोता है।' का क्या अभिप्राय है?
2. सबको अपने मन की बात सुननी चाहिए। इस बारे में आपका क्या विचार है?
3. हमारा मन हमें बुरे काम करने से कैसे रोकता है?

भूमिका

प्रस्तुत कथा में एक बालक के सामान्य अपराध पर उसके मन में मचलते द्वंद्व की झलक मिलती है। वह द्वंद्व निरंतर उसका पीछा करता रहता है। जब तक वह अपने भीतर की आवाज़ को पहचान कर अपराध स्वीकार नहीं कर लेता, उसे संतोष नहीं मिलता।

SCERT TELANGANA

मंटू जब स्कूल से लौटा तो वह बहुत थका-थका सा था। घर के दरवाज़े में प्रवेश करते ही वह अपनी माँ को मुस्कराते हुए पाता था। आज उसकी माँ वहाँ नहीं थी। वह अंदर घुसा चला आया। उसने अपने कमरे में जाकर बस्ता पटका और माँ की तलाश में निकल पड़ा। उसका जी कर रहा था कि वह झपट कर माँ के गले से लिपट जाये और रोना मुँह बनाकर उसे डाँट पिलाये, ''आज तुम दरवाज़े पर क्यों नहीं मिली? मुझे ज़ोरों की भूख लग रही है।''

भूख की याद आते ही उसे लगा कि वह जैसे सचमुच ही भूखा है। रोज़ ऐसा होता था। स्कूल से आने पर माँ उसे खाने के लिए दे देती थी, लेकिन आज सब कुछ उलट-पुलट हो गया। आखिर बात क्या है? माँ कहाँ गयी?

सोचता-सोचता वह रसोई के पास वाले कमरे में जा पहुँचा। वहीं बैठकर वे लोग खाना खाया करते थे। वे लोग बहुत अमीर नहीं थे। उनके घर में बढ़िया सी खाने की मेज़ भी नहीं थी लेकिन फिर भी जिस दिन किसी का खाना होता, उस दिन दो-तीन छोटी-छोटी मेज़ें जोड़कर उन पर चादर बिछा दी जाती थी और खाना लगा दिया जाता था।

अचरज से मंटू ने देखा कि आज भी सब कुछ उसी तरह लगा हुआ है। ज़रूर कोई खाने पर आने वाला होगा? तब तो बड़ा अच्छा, बढ़िया-बढ़िया चीज़ें खाने को मिलेंगी। यह सोचते-सोचते उसकी निगाह मेज़ पर गयी। उस पर सजा था खाने का सामान- सेब, चीकू, संतरे, रसगुल्ले, दालबीजी इत्यादि-इत्यादि।

उसने सोचा, माँ ज़रूर रसोईघर में समोसे बना रही होगी। हाँ, रामू भी दिखाई नहीं देता। वह ज़रूर बाज़ार गया होगा। पिताजी शायद अभी तक दफ़्तर से नहीं आए। वे मेहमान को लेकर आएँगे। वे हमेशा ही ऐसा करते हैं, पर पम्मी अभी तक क्यों नहीं आई? ज़रूर उसके स्कूल में आज कोई खास बात है।

उसे लगा जैसे वह अकेला है। आसपास कोई नहीं है। सामने फल और मिठाई देखकर उसके पेट में ज़ोर-ज़ोर से चूहे कूदने लगे।

तभी उसने सुना- जैसे कोई उसका नाम लेकर धीरे से पुकार रहा है- ''मंटू!''

मंटू चौंक पड़ा। उसने एकदम घूम कर पीछे की ओर देखा, लेकिन वहाँ तो कोई भी नहीं था।

तब तक वह मेज़ के बिल्कुल पास आ पहुँचा। अब वह सबकुछ भूल गया। उसने हाथ बढ़ाकर चीकू उठाया। एक रसगुल्ला लिया और इधर-उधर देखकर उसने दोनों चीज़ें खाईं। लेकिन बार-बार उसे ऐसा लगता रहा जैसे किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा है- ''मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। यह चोरी है। तुमने माँ से नहीं पूछा।''

इतने में चीखती-चिल्लाती उसकी बड़ी बहन पम्मी भी वहाँ आ पहुँची। उसने तेज़ी से अपना बस्ता पटका और बोली, ''अरे, मंटू भइया! जानते हो आज हमारे स्कूल में क्या हुआ?'' मंटू ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपने में खोया रहा। पम्मी ने यह देखकर पूछा, ''अरे, मंटू भइया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो? मम्मी कहाँ हैं?''

मंटू तल्खी से बोला, ''मैंने मम्मी को नहीं देखा।''

पम्मी बोली, ''तो आओ, हम देखते हैं। आज अशोक चाचा चाय पर आने वाले हैं। वह उन्हीं के लिए समोसे बना रही होगी।''

यह कहती हुई पम्मी रसोई की ओर भागी। मंटू उसके पीछे-पीछे चला।

माँ रसोई घर में नहीं थी। दोनों बच्चे निराश होकर लौट रहे थे, तभी उन्होंने माँ को आते हुए देखा। वह मुस्कराई और बोली, ''मुझे ज़रा देर हो गई। आज तुम्हारे अशोक चाचा आ रहे हैं। उनको हमारे मुहल्ले की बरफी बहुत अच्छी लगती है। वही लेने गई थी। अच्छा, आओ, कपड़े बदलो, हाथ-मुँह धोओ। मैं तुम्हारा नाश्ता तैयार करती हूँ।''

दोनों बच्चे तैयार होने के लिए चले गए। पम्मी ज़ोर-ज़ोर से कहानी पर कहानी सुनाती रही, लेकिन मंटू बराबर कुछ सोचता रहा। बराबर कहीं खोया रहा। उसने अपने कपड़े बजाय खूँटी पर टाँगने के एक कोने में फेंक दिए। हाथ-मुंह धोते समय दो बार लोटा उसके हाथ से छूट कर गिरा।

यहाँ तक कि चाचा के आने पर भी उसकी उदासी दूर नहीं हुई, उसे खुश करने के लिए चाचा ने कई गीत सुनाए, किन्तु वह नहीं हँसा। उस रात उसने एक सपना देखा- चीकू और रसगुल्ला उसके पेट में कूद रहे हैं और कह रहे हैं, ''मंटू, तुमने हमें अपनी मम्मी से बिना पूछे खाया था। तुमने ठीक काम नहीं किया।''

वह सवेरे उठा, किन्तु वह अब भी प्रसन्न नहीं था। उस दिन उसने स्कूल का काम भी मम्मी से ही कराया। स्कूल में सबसे पहला पीरियड गणित का था। आज उसके सारे सवाल ठीक थे। अध्यापक ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपाई और कहा, ''मंटू, तुम होशियार होते जा रहे हो। इस तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।''

मंटू ने अध्यापक की बातें सुनी। वह चुप रहा। उसे लगा जैसे किसी ने उसे पुकारा है, मंटू तुमने फिर गलत काम किया।

SCERT TELANGANA

मंटू चौंक पड़ा। लेकिन जितना ही वह चौंकता आवाज़ उतनी ही तेज़ होती। उसने साफ-साफ सुना। आवाज़ कह रही थी, ''मंटू, तुमने ठीक काम नहीं किया। सवाल तुमने अपने आप नहीं किये हैं। अपनी मम्मी से कराए हैं।''

मंटू ने सोचा, ''आखिर ये आवाज़ कहाँ से आती है? क्या मेरे अंदर से आती है? क्या रात के सपने की तरह सवाल भी मेरे पेट में बैठे हुए बोल रहे हैं?''

मंटू को लगा जैसे उसे पसीना आ रहा है, वह मशीन की तरह सीट से उठा और अध्यापक जी की मेज़ के पास आ गया। वह धीरे से बोला, ''सर! मैं आपको एक बात बताना भूल गया था।''

अध्यापक ने पूछा, ''क्या बात?''

मंटू ने धीरे से कहा, ''सर! ये सवाल मैंने नहीं, मेरी मम्मी ने किए थे।''

अध्यापक ने मंटू को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसकी आँखों में झाँका और मुस्कराकर बोले, ''तो क्या हुआ! आज तुमने अपनी मम्मी से पूछकर किए हैं, तो कल अपने आप कर लोगे। मुझे खुशी है कि तुमने सच बात बता दी।''

मंटू को लगा जैसे एक ही क्षण में सबकुछ पलट गया है। वह बिल्कुल हल्का हो गया है। मास्टर जी जो कुछ पढ़ा रहे हैं, वह सब उसे बहुत अच्छी तरह समझ आ रहा है। उसे बहुत खुशी हुई। वह दिन भर प्रसन्न रहा, लेकिन बीच-बीच में मिठाई की बात उसे याद आती रही।

छुट्‌टी मिलने पर वह सदा की तरह भागता हुआ घर आया। देखा, माँ दरवाज़े पर खड़ी मुस्करा रही है। वह उसके गले से चिपट गया। मंटू बोला, ''मम्मी, मम्मी मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया था। कल जब मैं घर आया था तो तुम मुझे यहाँ नहीं मिली थी। मुझे बड़ी भूख लग रही थी। तुमसे बिना पूछे मैंने एक रसगुल्ला और एक चीकू उठाकर खा लिया।''

मम्मी एक क्षण को गंभीर हुई, फिर मुस्करा कर बोली, ''तो कल तुमने चोरी की थी, लेकिन कोई बात नहीं। देर से सही, तुमने मुझे बता दिया। आओ, कपड़े बदलो। मैं तुम्हारे लिए नाश्ता लगाती हूँ। लेकिन, हाँ बेटे, तुम्हें अपना अपराध स्वीकार करने के लिए किसने कहा?''

मंटू ठिठका फिर बोला- ''पता नहीं मम्मी! तब से बराबर कोई मुझसे कह रहा है- 'मंटू तुमने गलती की है।' असल में मम्मी, वह चीकू और रसगुल्ला मेरे पेट में बैठे-बैठे बोल रहे हैं। सपने में मैंने उन्हें ही देखा था।''

मम्मी का चेहरा खिल उठा, वह बोली, ''मंटू, यह तुम्हारी अपनी ही आवाज़ है। जब कोई बुरा काम करता है तो वह आवाज़ तुरंत उसे चेता देती है।''

मंटू बोला, ''मम्मी, मैंने अध्यापक से भी कह दिया था कि आज ये सवाल मेरी मम्मी ने किए हैं, मैंने नहीं। वे बहुत खुश हुए।'' यह सुनते ही दोनों हाथ आगे बढ़ाकर मम्मी ने मंटू को अपनी छाती में भर लिया। फिर उसके गालों को बार-बार चूमती हुई बोली, ''तुम बहुत अच्छे हो, बहुत ही भोले और सच्चे हो।''

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. मंटू की तरह यदि आपने कोई गलती की जिससे आपके माता-पिता नाराज़ हुए हों तो ऐसी घटना बताइए।
2. यदि मंटू ने माँ से पूछकर खाया होता तो क्या माँ उसे मना करती? बड़ों से पूछकर या उन्हें बताकर काम करने से क्या लाभ है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ पढ़कर बताइए कि निम्नलिखित वाक्य किसने कहा?
   क. आज तुम दरवाज़े पर क्यों नहीं मिली।
   ख. अरे मंटू भैया! तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो?
   ग. इस तरह मेहनत करोगे तो क्लास में फर्स्ट आओगे।
2. मंटू जब स्कूल से घर पहुँचा तो उसे खाने की मेज पर क्या-क्या चीज़ें दिखायी दीं?
3. मंटू ने मम्मी और अध्यापक के सामने अपनी गलती कैसे स्वीकार की?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. मंटू की माँ ने उसके चाचा के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की थीं?
2. स्कूल छूटने के बाद मंटू जब घर आया तो उसकी माँ दरवाज़े पर खड़ी दिखायी नहीं दी। उस समय उसके मन में क्या-क्या विचार आए होंगे?
3. मंटू अपने आप को बिल्कुल हल्का क्यों महसूस करने लगा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

अनुच्छेद पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबेल का नाम कौन नहीं जानता। उनका जन्म 1833 में स्टॉकहोम में हुआ। लगातार अस्वस्थ रहने के कारण वे बराबर अपनी माँ के सामीप्य में बने रहे। माँ-पुत्र में असीम प्यार और लगाव था, जो जीवन भर बना रहा। माँ अपने दुर्बल एवं भावुक बेटे को मानसिक रूप से अत्यंत सबल बनाना चाहती थीं। इसलिए बाइबल और अन्य धर्मग्रंथों से प्रेरित कथाएँ पढ़-पढ़कर सुनाया करतीं। उनका विश्वास था कि उनका बेटा शारीरिक रूप से दुर्बल व अस्वस्थ रहते हुए भी संसार में कुछ अद्भुत कार्य करेगा।

SCERT TELANGANA

नोबेल एक विचारशील व्यक्ति थे। वे अपने और दूसरों द्वारा किए कार्यों, उनके व्यवहारों के बारे में सोचते रहते। उनपर चिन्तन-मनन करते। सर्वदा अपना आत्मविश्लेषण किया करते। वे दूसरों की बातों को तो महत्व देते ही थे, साथ ही साथ अपने मन की आवाज़ को भी अनसुनी नहीं करते। यही मार्ग उन्हें एक महान खोज की ओर ले गया। वे अपने आविष्कारों के कारण संसार भर में विख्यात हो गए। लेकिन वे मानवीयता के लिए भी बहुत कुछ करना चाहते थे। वे चाहते थे कि लोग वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों के लिए भी प्रेरित हों। इसके लिए उन्होंने अपने जीवन भर की कमाई का वसीयतनामा करवा दिया जिसके द्वारा आज भी नोबेल पुरस्कार देने की परंपरा कायम है।

1. नोबेल अपनी माँ के सामीप्य में अधिक क्यों बने रहे?
   क. क्योंकि उन्हें देखभाल की विशेष आवश्यकता थी।
   ख. क्योंकि वे बड़े डरपोक थे।
   ग. क्योंकि माँ उन्हें कहानियाँ सुनाती थीं।
   घ. क्योंकि वे महान बनना चाहते थे।

2. नोबेल ने क्या वसीयत की?
   क. उनकी धन-संपत्ति का समाज कल्याण के लिए उपयोग हो।
   ख. उनकी धन-संपत्ति आविष्कारों में लगायी जाए।
   ग. उनके आविष्कार का प्रचार उनके धन के माध्यम से किया जाए।
   घ. उनकी धन-संपत्ति का कलाओं के विकास के लिए उपयोग हो।

3. नोबेल अपने मन की आवाज़ को अधिक महत्व क्यों देते थे?

4. नोबेल को उनकी माँ धर्मग्रंथों से प्रेरित कथाएँ क्यों सुनाया करती थीं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. मंटू चोरी से मिठाई खाने के बाद उखड़ा-उखड़ा रहने लगा। आप से कोई गलती हो जाए तो आपको कैसा लगता है?
2. अपने मन की बात दूसरों को बताने से मन हल्का रहता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है। कैसे?

SCERT TELANGANA

3. मंटू ने रसगुल्ला और चीकू खाने की बात अपनी माँ को किस प्रेरणा के आधार पर बताई? उसको यह प्रेरणा कैसे मिली?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. अपराध स्वीकार कर लेने के बाद मम्मी और अध्यापक ने मंटू के संबंध में क्या सोचा होगा?
2. मंटू का चरित्र चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

पाठ के आधार पर मंटू, मम्मी और पम्मी का वार्तालाप लिखिए।

❖ प्रशंसा

अपनी गलती मान लेना अच्छे लोगों की निशानी है। ऐसा क्यों कहा जाता है? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
    - पेट में चूहे कूदना
    - खोए रहना
    - डाँट पिलाना
    - पीठ थपथपाना
2. आपको पढ़ते समय मालूम हुआ होगा कि कुछ शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं और कुछ स्त्री जाति का। जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराएँ, उन्हें **पुल्लिग** और जो स्त्री जाति का बोध कराएँ उन्हें **स्त्रीलिंग** कहते हैं। अप्राणी वस्तुओं के लिंग का निर्धारण व्यवहार के आधार पर होता है यद्यपि इनके भी नियम उपलब्ध हैं। कुछ अप्राणीवाचक शब्दों के उदाहरण देखिए-

    रसगुल्ला - **पुल्लिग**

    मिठाई - **स्त्रीलिंग**

    - पाठ में ऐसे अप्राणी शब्दों की सूची बनाइए। लिंग लिखिए।

परियोजना कार्य

पाठ में मेहमान को मेज़ पर खाना परोसने की बात दर्शायी गयी है। अपने घर के बड़ों से पूछकर जानिए कि उनके समय में खाना परोसने की कौन-कौनसी पद्धतियाँ प्रचलित थीं? उनके बारे में लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

3. वृंद

रचनाकार

वृंद मध्यकालीन युग के सरल, सुबोध एवं प्रभावपूर्ण कवियों में प्रथम श्रेणी में गिने जा सकते हैं। उनका प्रभाव जन-मानस पर उतना ही है जितना किसी मंच के कवि का श्रोताओं पर पड़ता है।

वृंद का पूरा नाम वृंदावन था। परंतु कविता करते हुए इन्होंने अपने को वृंद कहा है। इनका जन्म बीकानेर के मेंड़ता नामक स्थान पर हुआ था। कहा जाता है कि वे औरंगज़ेब और उनके पुत्र मुअज़्ज़न के दरबार में राज्याश्रित कवि थे। मुअज़्ज़न के पुत्र और औरंगज़ेब के पौत्र अज़ीमुश्शान के अध्यापक रहे हैं। उनके साथ इन्हें अनेक स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिला। इनकी मृत्यु किशनगढ़ में हुई थी।

वृंद की रचनाएँ हैं- **वृंद विनोद सतसई, नीति सतसई, गायक सतसई, भाव पंचाशिका, वचनिका, पवन पचीसी।**

इनके साहित्य में जनसामान्य की वाणी दिखायी देती है। वृंद के दोहे बहुत प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। इन दोहों में व्यक्ति अथवा समाज-सुधार, जीवन-आदर्शों आदि का बहुत ही सरल भाषा में वर्णन किया गया है। वृंद के दोहे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वृंद की रचना-शैली मुक्तक है। इनकी शैली में गंभीरता अथवा जटिलता नहीं है। जो कुछ कहा गया है वह हृदयस्पर्शी और प्रभावपूर्ण है।

प्रस्तावना प्रसंग

बुरे लगत सिख के वचन,
हिये बिचारौ आप।
करुबे भेसज बिन पिये,
मिटै न तन को ताप।।

प्रश्न

1. सीख के वचन कैसे लगते हैं?
2. कवि की बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
3. हमारे जीवन में सीख के वचन का क्या महत्व है?

भूमिका

आधुनिक समाज में तेजी से हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास की चुनौती से निपटने के लिए वृंद के दोहों की विशेष उपयोगिता है। इस महत्व को ध्यान में रखते हुए उनके कुछ दोहे प्रस्तुत हैं। आइए इन्हें पढ़ें। इनकी उपयोगिता को समझें और इनकी नीतियों को अपनाएँ, साथ ही साथ साहित्यिक रसास्वादन करें।

SCERT TELANGANA

वृंद के दोहे

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत जुद्ध में, नहिं सिंगार सुहात।। ।1।

प्रान तुषातुर के रहे, थोरेहूँ जलपान।
पीछे जलभर सहस घट, डारे मिलत न प्रान।। ।2।

रहे समीप बड़ेन को, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है, वृच्छ बराबर बेल।। ।3।

मधुर वचन तेजात मिटे, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सो मिटे, जैसे दूध उफान।। ।4।

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।। ।5।

जैसे बंधन प्रेम को, तैसो बंधन और।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकरे भौर।। ।6।

प्रकृति मिले मत मिलत है, अनमिलते न मिलाय।
दूध दही से जमत है, कांडी ते फटि जाय।। ।7।

उत्तम जन के संग में, सहजे ही सुखभासि।
जैसे नृप लावै इतर, लेत सभा जनवासि।। ।8।

ज्योति सरूपी हिये बसै, सब सरीर में ज्योति।
दीपक धरिये ताक में, सब घर आभा होति।। ।9।

भेस बनाये सूर को, कायर सूर न होय।
खाल उढ़ाए सिंह की, स्यार सिंह नहि होय।। ।10।

TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. वृंद ने कहा है कि मधुर वचन के प्रयोग से अभिमानियों का अभिमान कम हो जाता है। गर्व करना हमारे लिए किस प्रकार हानिकारक सिद्ध हो सकता है। चर्चा कीजिए।
2. समय पूर्ण होने के बाद कार्य करने की गणना असफलता में होती है। आप अपना काम समय पर करने के लिए क्या उपाय करेंगे?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. यह किस दोहे का संदेश है?
   - क. सही जगह पर सही बात शोभा देती है।
   - ख. अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।
   - ग. भले की संगति में रहने से भलाई ही होती है।
2. भौंरा कमल के फूल को छेद कर बाहर क्यों नहीं निकल पाता?
3. शेर की खाल पहनने से कोई व्यक्ति शेर नहीं हो जाता। यह उदाहरण वृंद ने अपने किस दोहे में दिया है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. सब शक्तिशाली व्यक्ति का साथ क्यों देते हैं?
2. वृंद के अनुसार प्रकृति के खिलाफ़ जाने से काम बिगड़ जाता है। उन्होंने इसे किस प्रकार समझाया है?
3. "ज्योति सरूपी हिये बसै, सब सरीर में ज्योति।" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति में रहना किस प्रकार लाभदायक है? इस बारे में वृंद ने क्या कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

रहीम द्वारा रचित निम्नलिखित दोहे पढ़िए। पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।1।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।2।।

प्रश्न :

1. पावस ऋतु में कोयल क्यों मौन साध लेती है?
2. रहीम ने सज्जन व्यक्ति की तुलना किससे की है?
3. 'बिन अवसर की बात' और 'वर्षा ऋतु में कोयल का मौन हो जाना' में क्या समानता है?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. जो छात्र समय पर अपना कार्य नहीं करते, उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है?
2. मीठे वचन से चारों ओर सुख फैलता है। इससे बिगड़े काम भी बन जाते हैं। इसके विपरीत कठोर वचन बोलने से क्या परिणाम हो सकते हैं?
3. आप अच्छी संगति किसे मानेंगे? धनवान की संगति को या विद्‌वान की। अपने उत्तर का कारण बताइए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. वृंद ने अपने दोहों के माध्यम से जीवन की किन सच्चाइयों पर प्रकाश डाला है?
2. वृंद अपनी नीति सिद्‌ध करने के लिए उसका एक व्यावहारिक उदाहरण देते हैं। ऐसा वे क्यों करते होंगे? इसी प्रकार उनके दोहों की अन्य विशेषताएँ लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

इन दोहों का गायन प्रस्तुत कीजिए। अपनी अनुभूति डायरी में लिखिए।

❖ प्रशंसा

आज के वैज्ञानिक युग के प्रभाव में इंसान यांत्रिक होता जा रहा है। उसकी सामाजिकता और नैतिकता कहीं खोती जा रही है। इन्हें बनाए रखने के लिए आप क्या प्रयास करना चाहेंगे?

भाषा की बात

वृंद ने **जुद्‌ध** शब्द का प्रयोग किया है, जिसका प्रचलित रूप **युद्‌ध** है। इसी प्रकार के कुछ और शब्द पाठ से चुनिए और उनका प्रचलित रूप लिखिए।

परियोजना कार्य

कुछ महापुरुषों के नीति संबंधी अनमोल वचन संकलित कीजिए और लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-I

4. तुम कब जाओगे, अतिथि!

रचनाकार

शरद जोशी का जन्म सन् 1931 में मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में हुआ। इनका बचपन कई शहरों में बीता। कुछ समय तक ये सरकारी नौकरी में रहे, फिर इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया। इन्होंने आरंभ में कुछ कहानियाँ लिखीं, फिर पूरी तरह व्यंग्य-लेखन ही करने लगे। व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य साहित्य को प्रतिष्ठा दिलाने वाले प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद जोशी भी एक हैं।

शरद जोशी की प्रमुख व्यंग्य-कृतियाँ हैं- 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलस्म', 'रहा किनारे बैठे', 'दूसरी सतह', 'प्रतिदिन'। दो व्यंग्य नाटक हैं- 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा'।

शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है। मुहावरों और हास-परिहास का हल्का स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है। धर्म, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण, कुछ भी शरद जोशी की पैनी नज़र से बच नहीं सका है। इन्होंने अपनी व्यंग्य-रचनाओं में समाज में पायी जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है। पाठक इस चित्रण को पढ़कर चकित भी होता है और बहुत कुछ सोचने को विवश भी।

प्रस्तावना प्रसंग

मेहमाँ जो हमारा होता है,
वो जान से प्यारा होता है।

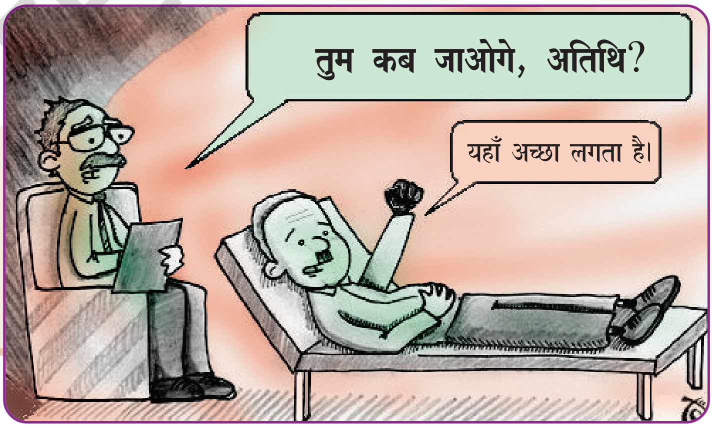

प्रश्न

1. मेहमाँ से क्या तात्पर्य है?
2. गीत पंक्तियाँ और चित्र के भाव की तुलना कीजिए।
3. क्या आज भी मेहमान को जान से प्यारा माना जाता है?

भूमिका

प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' में शरद जोशी ने ऐसे व्यक्तियों की खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना कोई पूर्व सूचना दिए चले आते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते, भले ही उनका टिके रहना मेज़बान पर कितना ही भारी क्यों न पड़े। अच्छा अतिथि कौन होता है? वह, जो पहले से अपने आने की सूचना देकर आए और एक-दो दिन मेहमानी कराके विदा हो जाए या वह, जिसके आगमन के बाद मेज़बान वह सब सोचने को विवश हो जाए, जो इस पाठ के मेज़बान निरंतर सोचते रहे।

SCERT TELANGANA

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है तो यह चौथा दिन है, तुम्हारे शतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया था। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। उसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था। जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, ''मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।''

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की वेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

SCERT TELANGANA

''किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।?'' मैंने कहा। मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

''कहाँ है लॉण्ड्री?''

''चलो चलते हैं।'' मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

''कहाँ जा रहे हैं?'' पत्नी ने पूछा।

''इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।'' मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर दी थी। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुसकराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, ''कब तक टिकेंगे ये।''

मैंने कंधे उचका दिए, ''क्या कह सकता हूँ!''

''मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हलकी रहेगी।''

''बनाओ।''

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि!

SCERT TELANGANA

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! मैं जानता हूँ। दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाये गये हैं। होम को इसी कारण स्वीट होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की पड़ी किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊंगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ!

उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि?

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. प्रसिद्ध उक्ति है- अतिथि देवो भवः। इसके पक्ष-विपक्ष में चर्चा कीजिए।
2. आज की बदली हुई परिस्थिति में अतिथि के आगमन पर हमारा क्या उत्तरदायित्व है?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ में आये निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए।
   क. अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।
   ख. लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।
   ग. मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।
2. निम्नलिखित भाव से संबंधित पंक्तियाँ कहानी में ढूँढ़िए और उन्हें रेखांकित कीजिए।
   क. लेखक द्वारा बढ़िया भोजन करवाना, सिनेमा दिखाना

ख. अतिथि की बात पर लेखक की पत्नी की आँखें बड़ी-बड़ी हो जाना।

ग. अतिथि के आगमन की आरंभिक अवस्था में लेखक के साथ विविध विषयों पर चर्चा।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. लेखक ने मेहमान की तुलना एस्ट्रॉनाट्स से क्यों की?
2. पति और पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?
3. "अतिथि सदैव देवता नहीं होता, मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।" इस कथन से आप क्या समझते हैं?
4. लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?
5. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए और क्यों?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ' का अंश दिया जा रहा है। पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

एक दिन संध्या समय एक महात्मा ने आकर उसके द्वार पर डेरा जमाया। तेजस्वी मूर्ति थी, पीताम्बर गले में, जटा सिर पर, पीतल का कमंडल हाथ में, खड़ाऊँ पैर में, ऐनक आँखों पर संपूर्ण वेश उन महात्माओं का-सा था, जो रईसों के प्रासादों में तपस्या, हवागाड़ियों पर देवस्थानों की परिक्रमा और योग सिद्धि प्राप्त करने के लिए रुचिकर भोजन करते हैं। घर में जो जौ का आटा था, वह उन्हें कैसे खिलाता? प्राचीन काल में जौ का चाहे जो महत्व रहा हो, पर वर्तमान युग में जौ का भोजन सिद्ध पुरुषों के लिए दुष्प्राप्य होता है। बड़ी चिन्ता हुई महात्माजी को क्या खिलाऊँ, पर गाँव भर में गेहूँ का आटा न मिला। गाँव में सब मनुष्य ही मनुष्य थे, देवता एक भी न था, अतएव देवताओं का खाद्य पदार्थ कैसे मिलता? सौभाग्य से गाँव के विप्र महाजन के यहाँ से थोड़े से गेहूँ मिल गये। उनसे सवा सेर गेहूँ उधार लिया और स्त्री से कहा पीस दे। महात्मा ने भोजन किया और लंबी तानकर सोये। प्रातःकाल आशीर्वाद देकर राह ली।

प्रश्न 1. महात्मा जी के आगमन पर चिंता क्यों हुई?

2. आगंतुक के घर के मालिक से क्या संबंध रहे होंगे?

3. "गाँव में सब मनुष्य ही मनुष्य थे, देवता एक भी न था, अतएव देवताओं का खाद्‌य पदार्थ कैसे मिलता?" इसके माध्यम से प्रेमचंद ने किस प्रकार का व्यंग्य किया है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आप अतिथि बनकर कहीं जाते हैं तो आपकी क्या अपेक्षाएँ होती हैं?

SCERT TELANGANA

2. घर आए अतिथि को आप अपनी कौन-कौनसी वस्तुएँ प्रसन्नता पूर्वक देना चाहेंगे?
3. गाँव और शहरों के आतिथ्य सत्कार में आपको क्या अंतर दिखाई देता है?
4. आपकी दृष्टि में अच्छे अतिथि के क्या लक्षण हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. "संबंधों के संक्रमण के दौर से गुज़रना" इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।
2. लेखक ने अतिथि को क्या-क्या सुविधाएँ प्रदान कीं?
3. आपके यहाँ एक सप्ताह के लिए यदि आपके नाना-नानी आकर रहें तो आप उनकी किस प्रकार सेवा करेंगे?

❖ सृजनात्मक कार्य

इस कहानी को संवाद रूप में लिखिए। उसका कक्षा-कक्ष में अभिनय कीजिए।

❖ प्रशंसा

"मेहमाँ जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है।" भारतीय संस्कृति की महानता में इस विचार की प्रमुख भूमिका रही है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति की कुछ विशेषताएँ लिखिए।

भाषा की बात

1. पर्याय शब्दों के संदर्भ में बेमेल छाँटिए।

चाँद - शशि, सोम, अनल, सुधाकर
अतिथि - अदिति, आगंतुक, मेहमान, पाहुन
दिवस - दिन, वार, वासर,
कमल - सरोज, जलज, पंकज, कुटज
अंतरंग - घनिष्ठ, दोस्ताना, मैत्रीपूर्ण, अंतःपुर

2. पाठ में आए इन वाक्यों में **चुकना** क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए।

क. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित **कर चुके**।
ख. तुम मेरी काफ़ी मिट्टी **खोद चुके**।
ग. आदर सत्कार के जिस उच्च बिन्दु पर हम तुम्हें ले **जा चुके** थे...
घ. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के **विषय चुक गए**।
ङ. तुम्हारे भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली **जा चुकी** और तुम यहीं हो।

परियोजना कार्य

अतिथि सत्कार के संदर्भ में कोई कहानी ढूँढ़कर पढ़िए और उसे अपने शब्दों में कक्षा में सुनाइए।

SCERT TELANGANA

इस जल प्रलय में

उपवाचक

- फणीश्वरनाथ रेणु

मेरा गाँव ऐसे इलाके में है जहाँ हर साल पश्चिम, पूरब और दक्षिण की कोसी, पनार, महानंदा और गंगा की बाढ़ से पीड़ित प्राणियों के समूह आकर पनाह लेते हैं, सावन-भादों में ट्रेन की खिड़कियों से विशाल और सपाट परती पर गाय, बैल, भैंस, बकरों के हज़ारों झुंड-मुंड देखकर ही लोग बाढ़ की विभीषिका का अंदाज़ा लगाते हैं।

परती क्षेत्र में जन्म लेने के कारण अपने गाँव के अधिकांश लोगों की तरह मैं भी तैरना नहीं जानता। किंतु दस वर्ष की उम्र से पिछले साल तक- ब्वॉय स्काउट, स्वयंसेवक, राजनीतिक कार्यकर्ता अथवा रिलीफ़वर्कर की हैसियत से बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों में काम करता रहा हूँ और लिखने की बात? हाईस्कूल में बाढ़ पर लेख लिखकर प्रथम पुरस्कार पाने से लेकर- धर्मयुग में 'कथा-दशक' के अंतर्गत बाढ़ की पुरानी कहानी को नए पाठ के साथ प्रस्तुत कर चुका हूँ। जय गंगा (1947), डायन कोसी (1948), हड्डियों का पुल (1948), आदि छुटपुट रिपोर्ताज के अलावा मेरे कई उपन्यासों में बाढ़ की विनाश-लीलाओं के अनेक चित्र अंकित हुए हैं। किंतु, गाँव में रहते हुऐ बाढ़ से घिरने, बहने, भंसने और भोगने का अनुभव कभी नहीं हुआ। वह तो पटना शहर में सन् 1967 में ही हुआ, जब अट्ठारह घंटे की अविराम वृष्टि के कारण पुनपुन का पानी राजेंद्रनगर, कंकड़बाग तथा अन्य निचले हिस्सों में घुस आया था। अर्थात बाढ़ को मैंने भोगा है, शहरी आदमी की हैसियत से। इसीलिए इस बार जब बाढ़ का पानी प्रवेश करने लगा, पटना का पश्चिमी इलाका छाती भर पानी में डूब गया तो हम घर में ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, सिगरेट, पीने का पानी और कांपोज की गोलियाँ जमाकर बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे।

सुबह सुना, राजभवन और मुख्यमंत्री-निवास प्लावित हो गया है। दोपहर में सूचना मिली, गोलघर जल से घिर गया है! (यों, सूचना बाँग्ला में इस वाक्य से मिली थी- 'जानो! गोलघर डूबे गेछे!') और पाँच बजे जब कॉफ़ी हाउस जाने के लिए (तथा शहर का हाल मालूम करने) निकला तो रिक्शेवाले ने

SCERT TELANGANA

हँसकर कहा- ''अब कहाँ जाइएगा? काफ़ी हाउस में तो 'अबले' पानी आ गया होगा।''

''चलो, पानी कैसे घुस गया है, वही देखना है।'' कहकर हम रिक्शा पर बैठ गए। साथ में नई कविता के एक विशेषज्ञ-व्याख्याता-आचार्य-कवि मित्र थे, जो मेरी अनवरत-अनर्गल-अनगढ़ गद्यमय स्वगतोक्ति से कभी बोर नहीं होते (धन्य हैं!)।

मोटर, स्कूटर, ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, ट्रक, टमटम, साइकिल, रिक्शा पर और पैदल लोग पानी देखने जा रहे हैं, लोग पानी देखकर लौट रहे हैं। देखने वालों की आँखों में, जुबान पर एक ही जिज्ञासा- ''पानी कहाँ तक आ गया है?'' देखकर लौटते हुए लोगों की बातचीत- ''फ्रेजर रोड पर आ गया! आ गया क्या, पार कर गया। श्रीकृष्णापुरी, पाटलिपुत्र कालोनी, बोरिंग रोड? इंडस्ट्रियल एरिया का कहीं पता नहीं...अब भट्टाचार्जी रोड पर पानी आ गया होगा। ....छाती भर पानी है। वीमेंस कॉलेज के पास 'डुबाव-पानी' है। ..आ रहा है! ...आ गया!! ...घुस गया ....डूब गया ....डूब गया ....वह गया!''

हम जब कॉफ़ी हाउस के पास पहुँचें, कॉफ़ी हाउस बंद कर दिया गया था। सड़क के एक किनारे एक मोटी डोरी की शक्ल में गेरुआ-झाग-फेन में उलझा पानी तेज़ी से सरकता आ रहा था। मैंने कहा- ''आचार्य जी, आगे जाने की ज़रूरत नहीं। वो देखिए- आ रहा है....मृत्यु का तरल दूत!''

आतंक के मारे दोनों हाथ बरबस जुड़ गए और सभय प्रणाम-निवेदन में मेरे मुँह से कुछ अस्फुट शब्द निकले (हाँ, मैं बहुत कायर और डरपोक हूँ!)।

रिक्शावाला बहादुर है कहता है- 'चलिए न, थोड़ा और आगे!'

भीड़ का एक आदमी बोला- ''ए रिक्शा, करेंट बहुत तेज़ है। आगे मत जाओ।''

मैंने रिक्शा वाले से अनुनय भरे स्वर में कहा- ''लौटा ले भैया। आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं।''

रिक्शा मोड़कर हम 'अप्सरा' सिनेमा हॉल (सिनेमा-शो बंद!) के बगल से गांधी मैदान की ओर चले। पैलेस होटल और इंडियन एयरलाइंस दफ़्तर के सामने पानी भर रहा था। पानी की तेज़ धारा पर लाल-हरे 'नियन' विज्ञापनों की परछाइयाँ सैकड़ों रंगीन साँपों की सृष्टि कर रही थीं। गांधी मैदान की रैलिंग के सहारे हज़ारों लोग खड़े देख रहे थे। दशहरा के दिन रामलीला के 'राम' के रथ की प्रतीक्षा में जितने लोग रहते हैं, उससे कम नहीं थे... गांधी मैदान के आनंद-उत्सव, सभा सम्मेलन और खेलकूद की सारी स्मृतियों पर धीरे-धीरे एक गैरिक आवरण आच्छादित हो रहा था। हरियाली पर शनैः शनैः पानी फिरते देखने का अनुभव सर्वथा नया था। इसी बीच एक अधेड़, मुस्टंड और गँवार ज़ोर-ज़ोर से बोल उठा- ''ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए...अब बूझो!''

मैंने अपने आचार्य-कवि मित्र से कहा- ''पहचान लीजिए। यही है वह 'आम आदमी', जिसकी खोज हर साहित्यिक गोष्ठियों में होती रहती है। उसके वक्तव्य में 'दानापुर' के बदले 'उत्तर बिहार' अथवा कोई भी बाढ़ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्र जोड़ दीजिए .....''

शाम के साढ़े सात बज चुके और आकाशवाणी के पटना केंद्र से स्थानीय समाचार प्रसारित हो रहा था। पान की दुकानों के सामने खड़े लोग, चुपचाप, उत्कर्ण होकर सुन रहे थे .....।

''...पानी हमारी स्टूडियों की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।''

समाचार दिल दहलाने वाला था। कलेजा धड़क उठा। मित्र के चेहरे पर भी आतंक की कई रेखाएँ

SCERT TELANGANA

उभरीं। किंतु हम तुरंत ही सहज हो गए; यानी चेहरे पर चेष्टा करके सहजता ले आए, क्योंकि हमारे चारों ओर कहीं कोई परेशान नज़र नहीं आ रहा था। पानी देखकर लौटते हुए लोग आम दिनों की तरह हँस-बोल रहे थे, बल्कि आज तनिक उत्साहित थे। हाँ, दुकानों में थोड़ी हड़बड़ी थी। नीचे के सामान ऊपर किए जा रहे थे। रिक्शा, टमटम, ट्रक और टेम्पो पर सामान लादे जा रहे थे। खरीद-बिक्री बंद हो चुकी थी। पानवालों की बिक्री अचानक बढ़ गई थी। आसन्न संकट से कोई प्राणी आतंकित नहीं दिख रहा था।

....पानवाले के आदमकद आईने में उतने लोगों के बीच हमारी ही सूरतें 'मुहर्रमी' नज़र आ रही थीं। मुझे लगा, अब हम यहाँ थोड़ी देर भी ठहरेंगे तो वहाँ खड़े लोग किसी भी क्षण ठठाकर हम पर हँस सकते थे- ''ज़रा इन बुज़दिलों का हुलिया देखो!'' क्योंकि वहाँ ऐसी ही बातें चारों ओर से उछाली जा रही थीं- ''एक बार डूब ही जाए! ...धनुष्कोटि की तरह पटना लापता न हो जाए कहीं!... सब पाप धुल जाएगा....चलो, गोलघर के मुँडे पर ताश की गड्डी लेकर बैठ जाएँ....बिस्कोमान बिल्डिंग की छत पर क्यों नहीं?...भई, यही माकूल मौका है। इनकम टैक्सवालों को ऐन इसी मौके पर काले कारबारियों के घर पर छापा मारना चाहिए। आसामी बा-माल...''

राजेंद्रनगर चौराहे पर 'मैगज़ीन कॉर्नर' की आखिरी सीढ़ियों पर पत्र-पत्रिकाएँ पूर्ववत् बिछी हुई थीं। सोचा, एक सप्ताह की खुराक एक ही साथ ले लूँ। क्या-क्या ले लूँ?... हेडली चेज़, या एक ही सप्ताह में फ्रेंच/जर्मन सिखा देने वाली किताबें अथवा 'योग' सिखाने वाली कोई सचित्र किताब? मुझे इस तरह किताबों को उलटते-पलटते देखकर दुकान का नौजवान मालिक कृष्णा पता नहीं क्यों मुसकराने लगा। किताबों को छोड़ कई हिंदी-बाँग्ला और अंग्रेज़ी सिने पत्रिकाएँ लेकर लौटा। मित्र से विदा होते हुए कहा- ''पता नहीं, कल हम कितने पानी मे रहें। ....बहरहाल, जो कम पानी में रहेगा। वह ज़्यादा पानी में फँसे मित्र की सुधि लेगा।''

फ़्लैट में पहुँचा ही था कि 'जनसंपर्क' की गाड़ी भी लाउडस्पीकर से घोषणा करती हुई राजेंद्रनगर पहुँच चुकी थी। हमारे 'गोलंबर' के पास कोई भी आवाज़, चारों बड़े ब्लॉकों की इमारतों से टकराकर मँडराती हुई, बार-बार प्रतिध्वनित होती है। सिनेमा अथवा लॉटरी की प्रचारगाड़ी यहाँ पहुँचते ही- 'भाइयो' पुकारकर एक क्षण के लिए चुप हो जाती है। पुकार मँडराती हुई प्रतिध्वनित होती है-भाइयो... भाइयो.. भाइयो...! एक अलमस्त जवान रिक्शाचालक है जो अकसर रात के सन्नाटे में सवारी पहुँचाकर लौटते समय इस गोलंबर के पास अलाप उठता है- 'सुन मेरे बंधु रे-ए-न...सुन मोरे मितवा-वा-वा-य...'

गोलंबर के पास जनसंपर्क की गाड़ी से ऐलान किया जाने लगा- ''भाइयो.! ऐसी संभावना है... कि बाढ़ का पानी...रात्रि के करीब बारह बजे तक...लोहानीपुर, कंकड़बाग और राजेंद्रनगर में घुस जाए। अतः आप लोग सावधान हो जाएँ।''

(प्रतिध्वनि-सावधान हो जाएँ! सावधान हो जाएँ!)

मैंने गृहस्वामिनी से पूछा- ''गैस का क्या हाल है?''

''बस, उसी का डर है। अब खत्म होने वाला है। असल में सिलिंडर में 'मीटर-उटर' की तरह कोई चीज़ नहीं होने से कुछ पता नहीं चलता। लेकिन, अंदाज़ है कि एक या दो दिन...कोयला है। स्टोव है। मगर किरासन एक ही बोतल....''

''फिलहाल, बहुत है....बाढ़ का भी यही हाल है। मीटर-उटर की तरह कोई चीज़ नहीं होने से पता

नहीं चलता कि कब आ धमके।''-मैंने कहा।

सारे राजेंद्रनगर में 'सावधान-सावधान' ध्वनि कुछ देर गूँजती रही। ब्लॉक के नीचे की दुकानों से सामान हटाए जाने लगे। मेरे फ़्लैट के नीचे के दुकानदार ने, पता नही क्यों, इतना कागज़ इकट्ठा कर रखा था। एक अलाव लगाकर सुलगा दिया। हमारा कमरा धुएँ से भर गया।

सारा शहर जगा हुआ है। पश्चिम की ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा करता हूँ...हाँ पीरमुहानी या सालिमपुरा-अहरा अथवा जनक किशोर-नवलकिशोर रोड की ओर से कुछ हलचल की आवाज़ आ रही है। लगता है, एक-डेढ़ बजे रात तक पानी राजेंद्रनगर पहुँचेगा।

सोने की कोशिश करता हूँ। लेकिन नींद आएगी भी? नहीं, कांपोज की टिकिया अभी नहीं। कुछ लिखूँ? किंतु क्या लिखूँ...कविता? शीर्षक-बाढ़ आकुल प्रतीक्षा?

नींद नहीं, स्मृतियाँ आने लगीं-एक-एक कर। चलचित्र के बेतरतीब दृश्यों की तरह!

1947.....मनिहारी (तब पूर्णिया, अब कटिहार ज़िला) के इलाके में गुरुजी (स्व. सतीनाथ भादुड़ी) के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में हम नाव पर जा रहे हैं। चारों ओर पानी ही पानी। दूर, एक 'द्वीप' जैसा बालूचर दिखाई पड़ा। हमने कहा, वहाँ चलकर ज़रा चहलकदमी करके टाँगें सीधी कर लें। भादुड़ी जी कहते हैं- ''किंतु, सावधान! ऐसी जगहों पर कदम रखने के पहले यह मत भूलना कि तुमसे पहले ही वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे'' और सचमुच-चींटी-चींटे से लेकर साँप-बिच्छू और लोमड़ी-सियार तक यहाँ पनाह ले रहे थे..भादुड़ी जी की हिदायत थी- हर नाव पर 'पकाही घाव' (पानी में पैर की उँगलियाँ सड़ जाती हैं। तलवों में भी घाव हो जाता है) की दवा, दियासलाई की डिबिया और किरासन तेल रहना चाहिए और, सचमुच हम जहाँ जाते, खाने-पीने की चीज़ से पहले 'पकाही घाव' की दवा और दियासलाई की माँग होती...

1949 ....उस बार महानंदा की बाढ़ से घिरे बापसी थाना के एक गाँव में हम पहुँचे। हमारी नाव पर रिलीफ़ के डाक्टर साहब थे। गाँव के कई बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जाना था। एक बीमार नौजवान के साथ उसका कुत्ता भी 'कुंई-कुंई' करता हुआ नाव पर चढ़ आया। डाक्टर साहब कुत्ते को देखकर 'भीषण भयभीत' हो गए और चिल्लाने लगे- ''आ रे! कुकुर नहीं, कुकुर नहीं...कुकुर को भगाओ!'' बीमार नौजवान छप-से पानी में उतर गया- ''हमार कुकुर नहीं जाएगा तो हम हुँ नहीं जाएगा।'' फिर कुत्ता भी छपाक पानी में गिरा- ''हमार आदमी नहीं जाएगा तो हम हुँ नहीं जाएगा''....परमान नदी की बाढ़ में डूबे हुए एक 'मुसहरी' (मुसहरों की बस्ती) में हम राहत बाँटने गए। खबर मिली थी वे कई दिनों से मछली और चूहों को झुलसाकर खा रहे हैं। किसी तरह जी रहें हैं। किंतु टोले के पास जब हम पहुँचे तो ढोलक और मंजीरा की आवाज़ सुनाई पड़ी। जाकर देखा, एक ऊँची जगह 'मचान' बनाकर स्टेज की तरह बनाया गया है। 'बलवाही' नाच हो रहा था। लाल साड़ी पहनकर काला-कलूटा 'नटुआ' दुलहिन का हाव-भाव दिखला रहा था; यानी, वह 'धानी' है। 'घरनी' (धानी) घर छोड़कर मायके भागी जा रही है और उसका घरवाला (पुरुष) उसको मनाकर राह से लौटाने गया है। इस पद के साथ ही ढोलक पर द्रुत ताल बजने लगा -'धागिड़गिड़-धागिड़गिड़-चकैके चकधुम चकैके चकधुम-चकधुम चकधुम!' कीचड़ पानी में लथपथ भूखे-प्यासे-नर-नारियों के झुंड में मुक्त खिलखिलाहट लहरें लेने लगती है। हम रिलीफ़ बाँटकर भी ऐसी हँसी उन्हें दे सकेंगे क्या! (शास्त्री जी, आप कहाँ है?) बलवाही नाच की बात उठते ही मुझे अपने परम मित्र भोला शास्त्री की याद हमेशा क्यों आ जाती है? यह एक बार,

SCERT TELANGANA

1937 में, सिमरवनी-शंकरपुर में बाढ़ के समय 'नाव' को लेकर लड़ाई हो गई थी। मैं उस समय 'बालचर' (ब्वाय स्काउट) था। गाँव के लोग नाव के अभाव में केले के पौधे का 'भेला' बनाकर किसी तरह काम चला रहे थे और वहीं जमींदार के लड़के नाव पर हरमोनियम-तबला के साथ झिंझिर (जल-विहार) करने निकले थे। गाँव के नौजवानों ने मिलकर उनकी नाव छीन ली थी। थोड़ी मारपीट भी हुई थी...।

और 1967 में जब पुनपुन का पानी राजेंद्रनगर में घुस आया था, एक नाव पर कुछ सजे-धजे युवक और युवतियों की टोली किसी फ़िल्म में देखे हुए कश्मीर का आनंद घर-बैठे लेने के लिए निकली थीं। नाव पर स्टोव जल रहा था- केतली चढ़ी हुई थी, बिस्कुट के डिब्बे खुले हुए थे, एक लड़की प्याली में चम्मच डालकर एक अनोखी अदा से नेस्कैफे के पाउडर को मथ रही थी- 'एस्प्रेसो' बना रही थी, शायद। दूसरी लड़की बहुत मनोयोग से कोई सचित्र और रंगीन पत्रिका पढ़ रही थी। एक युवक दोनों पाँवों को फैलाकर बाँस की लग्गी से नाव खे रहा था। दूसरा युवक पत्रिका पढ़ने वाली लड़की के सामने, अपने घुटने पर कोहनी टेककर कोई मनमोहक 'डायलॉग' बोल रहा था। पूरे 'वाल्यूम' में बजते हुए 'ट्रांजिस्टर' पर गाना आ रहा था- 'हवा में उड़ता जाए, मोरा लाल दुपट्टा मलमल का, हो जी हो जी!' हमारे ब्लॉक के पास गोलंबर में नाव पहुँची थी कि अचानक चारों ब्लॉक की छतों पर खड़े लड़कों ने एक साथ किलकारियों, सीटियों, फब्तियों की वर्षा कर दी और इस गोलंबर में किसी भी आवाज़ की प्रतिध्वनि मँडरा-मँडराकर गूँजती है। सो सब मिलाकर स्वयं ही जो ध्वनि संयोजन हुआ, उसे बडे-से-बड़े गुणी संगीत निर्देशक बहुत कोशिश के बावजूद नहीं कर पाते। उन फूहड़ युवकों की सारी 'एक्ज़बिशनिज़्म' तुरंत छुमंतर हो गई और युवतियों के रंगे लाल-लाल ओंठ और गाल काले पड़ गए। नाव पर अकेला ट्रांजिस्टर था जो पूरे दम के साथ मुखर था- 'नैया तोरी मंझधार, होश्यार होश्यार'!

"काहो रामसिंगार, पनियां आ रहलो है?"

"ऊँहूँ, न आ रहलौ है।"

ढाई बज गए, मगर पानी अब तक आया नहीं, लगता है कहीं अटक गया, अथवा जहाँ तक आना था आकर रुक गया, अथवा तटबंध पर लड़ते हुए इंजीनियरों की जीत हो गई शायद, या कोई दैवी चमत्कार हो गया! नहीं तो पानी कहीं भी जाएगा तो किधर से? रास्ता तो इधर से ही है...चारों ब्लॉकों के प्रायः सभी फ़्लैटों की रोशनी जल रही है, बुझ रही है। सभी जगे हुए हैं। कुत्ते रह-रहकर सामूहिक रुदन करते हैं और उन्हें रामसिंगार की मंडली डाँटकर चुप करा देती है। चौप...चौप..!

मुझे अचानक अपने उन मित्रों और स्वजनों की याद आई जो कल से ही पाटलीपुत्र कॉलोनी, श्रीकृष्णपुरी, बोरिंग रोड के अथाह जल में घिरे हैं...जितेंद्र जी, विनीता जी, बाबू भैया, इंदिरा जी, पता नहीं कैसे हैं- किस हाल में हैं वे! शाम को एक बार पड़ोस में जाकर टेलीफ़ोन करने के लिए चोंगा उठाया- बहुत देर तक कई नंबर डायल करता रहा। उधर सन्नाटा था एकदम। कोई शब्द नहीं- 'टुंग फुंग' कुछ भी नहीं।

बिस्तर पर करवट लेते हुए फिर एक बार मन में हुआ, कुछ लिखना चाहिए। लेकिन क्या लिखना चाहिए? कुछ भी लिखना संभव नहीं और क्या ज़रूरी है कि कुछ लिखा ही जाए? नहीं। फिर स्मृतियों को जगाऊँ तो अच्छा....पिछले साल अगस्त में नरपतगंज थाना चकरदाहा गाँव के पास छातीभर पानी में खड़ी एक आसन्नप्रसवा हमारी ओर गाय की तरह टुकुर-टुकुर देख रही थी....

नहीं, अब भूली-बिसरी याद नहीं, बेहतर है, आँखें मूँदकर सफ़ेद भेड़ों के झुंड देखने की चेष्टा करूँ...उजले-उजले सफ़ेद भेड़...सफ़ेद भेड़ों के झुंड। झुंड..किंतु सभी उजले भेड़ अचानक काले हो गए। बार-बार आँखें खोलता हूँ, मूँदता हूँ। काले को उजला करना चाहता हूँ। भेड़ों के झुंड भूरे हो जाते हैं। उजले भेड़...उजले भेड़..काले भूरे...किंतु उजले...उजले...गेहुएँ रंग के भेड़...।

'ओई दूयाखो- एसे गेछे जल'! -झकझोरकर मुझे जगाया गया। घड़ी देखी, ठीक साढ़े पाँच बज रहे थे। सवेरा हो चुका था...आ रहलौ है! आ रहलौ है पनियां! पानी आ गेलौ। हो रामसिंगार! हो मोहन! रामचन्नर-अरे हो...

आँखें मलता हुआ उठा। पश्चिम की ओर, थाना से सामने सड़क पर मोटी डोली की शक्ल में- मुँह में झाग-फेन लिए -पानी आ रहा है ठीक वैसा ही जैसा शाम को कॉफ़ी हाउस के पास देखा था। पानी के साथ-साथ चलता हुआ, किलोल करता हुआ बच्चों का एक दल.... उधर पश्चिम-दक्षिण कोने पर दिनकर अतिथिशाला से और आगे भंगी बस्ती के पास बच्चे कूद क्यों रहे हैं? नहीं, बच्चे नहीं, पानी है। वहाँ मोड़ है, थोड़ा अवरोध है- इसलिए पानी उछल रहा है ....पश्चिम -उत्तर की ओर, ब्लॉक नंबर एक के पास पुलिस चौकी के पिछवाड़े में पानी का पहला रेला आया...ब्लॉक नंबर चार के नीचे सेठ की दुकान के बाएँ बाजू में लहरें नाचने लगीं।

अब मैं दौड़कर छत पर चला गया। चारों ओर शोर-कोलाहल-कलरव-चीख-पुकार और पानी का कलकल रव। लहरों का नर्तन। सामने फुटपाथ को पार कर अब पानी हमारे पिछवाड़े में सशक्त बहने लगा है। गोलबर के गोल पार्क के चारों ओर पानी नाच रहा है...आ गया, आ गया! पानी बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है, चढ़ रहा है, करेंट कितना तेज़ है? सोन का पानी है। नहीं, गंगा जी का है। आ गैलो...

सामने की दीवार की ईंटें जल्दी-जल्दी डूबती जा रही हैं। बिजली के खंभे का काला हिस्सा डूब गया। ताड़ के पेड़ का तना क्रमशः डूबता जा रहा है....डूब रहा है।

....अभी यदि मेरे पास मूवी कैमरा होता, अगर एक टेप-रिकार्डर होता! बाढ़ तो बचपन से देखता आया हूँ, किंतु पानी का इस तरह आना कभी नहीं देखा। अच्छा हुआ जो रात में नहीं आया। नहीं तो भय के मारे न जाने मेरा क्या हाल होता..देखते ही देखते गोल पार्क डूब गया। हरियाली लोप हो गई। अब हमारे चारों ओर पानी नाच रहा था..भूरे रंग के भेड़ों के झुंड। भेड़ दौड़ रहे हैं -भूरे भेड़, वह चायवाले की झोंपड़ी गई, चली गई। काश, मेरे पास एक मूवी कैमरा होता, एक टेप-रिकार्डर होता? अच्छा है, कुछ भी नहीं। कलम थी, वह भी चोरी चली गई। अच्छा है, कुछ भी नहीं-मेरे पास।

प्रश्न-

1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?
2. बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?
3. 'मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?
4. आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।
5. 'ईह! जब दानापूर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए...अब बूझो!'- इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गयी है?

SCERT TELANGANA

इकाई-II

5. ललद्यद

रचनाकार

ललद्यद कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय संत-कवयित्री हैं। इनका जन्म सन् 1320 के लगभग कश्मीर स्थित पांपोर के सिमपुरा गाँव में हुआ था। उनके जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। ललद्यद को लल्लेश्वरी, लला, ललयोगेश्वरी, ललारिफा आदि नामों से भी जाना जाता है। उनका देहांत सन् 1391 के आसपास माना जाता है।

लोक-जीवन के तत्वों से प्रेरित ललद्यद की रचनाओं में तत्कालीन पंडिताऊ भाषा संस्कृत और दरबार के बोझ से दबी फारसी के स्थान पर जनता की सरल भाषा का प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि ललद्यद की रचनाएँ सैकड़ों सालों से कश्मीरी जनता की स्मृति और वाणी में आज भी जीवित हैं। वे आधुनिक कश्मीरी भाषा का प्रमुख स्तंभ मानी जाती हैं।

विद्यार्थियों को भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना और उसके अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित कराने के उद्देश्य से यहाँ ललद्यद के चार वाखों का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। पहले वाख में ललद्यद ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासों की व्यर्थता की चर्चा की है। दूसरे में बाह्याडंबरों का विरोध करते हुए यह कहा गया है कि अंतःकरण से समभावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती है। दूसरे शब्दों में इस मायाजाल में कम से कम लिप्त होना चाहिए। तीसरे वाख में कवयित्री के आत्मालोचन की अभिव्यक्ति है। वे अनुभव करती हैं कि भवसागर से पार जाने के लिए सद्कर्म ही सहायक होते हैं। भेदभाव का विरोध और ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध चौथे वाख में है। ललद्यद ने आत्मज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना है। प्रस्तुत वाखों का अनुवाद मीरा कांत ने किया है।

प्रस्तावना प्रसंग

खिलौना माटी का ही था
एक दिन होना ही था नाश।
पुरानी चीज़ नहीं टूटे
नई की कैसे हो फिर आस।

खिलौना यह सारी दुनिया
खेलता ऊपर वाला है।
हमीं यह समझ नहीं पाते
अजब यह खेल निराला है।

–राजीव कृष्ण सक्सेना

प्रश्न

1. यहाँ माटी का खिलौना किसे कहा गया होगा?
2. 'खिलौना यह सारी दुनिया' स्पष्ट कीजिए।
3. इन पंक्तियों का संदेश क्या है?

भूमिका

ललद्यद की काव्य शैली को **वाख** कहा जाता है। जिस तरह हिंदी में कबीर के दोहे, मीरा के पद, तुलसी की चौपाई और रसखान के सवैये प्रसिद्ध हैं, उसी तरह ललद्यद के वाख प्रसिद्ध हैं। अपने वाखों के ज़रिए उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के ऐसे रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया जिसका जुड़ाव जीवन से हो। उन्होंने धार्मिक आडंबरों का विरोध किया और प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया।

SCERT TELANGANA

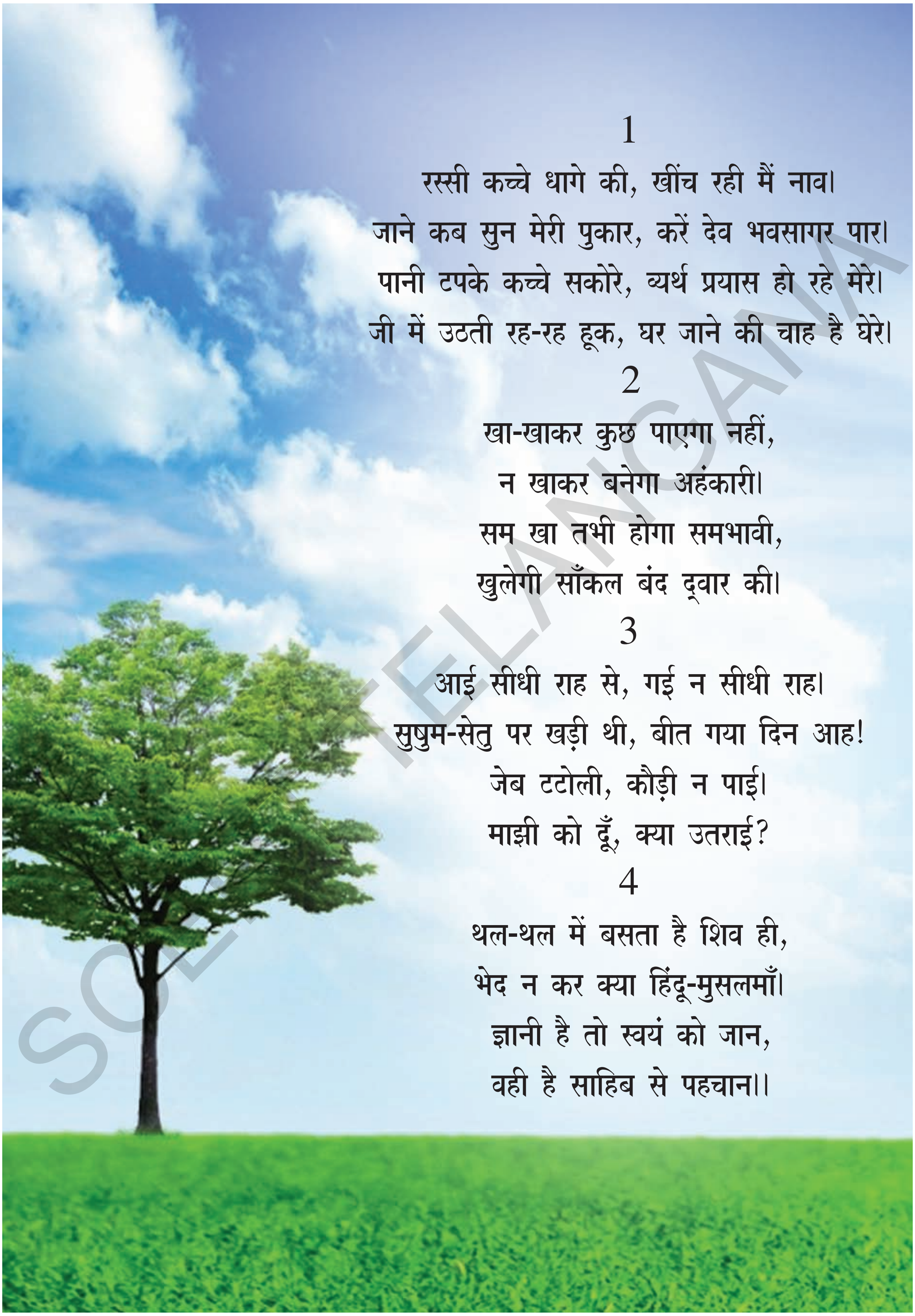

1

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

2

खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

3

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

4

थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमाँ।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।।

SCERT TELANGANA

❖

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखायी देता है-
   क. आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
   ख. आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. "ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।" यह भाव जिन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है, उन्हें लिखिए।
2. कवयित्री ने कच्चे धागे की तुलना किससे की है?
3. कवयित्री क्या प्रयास कर रही है जो व्यर्थ हो रहा है?
4. "ज्ञानी वही है जो स्वयं को पहचानता है और उसी के माध्यम से ईश्वर को जान पाता है।" यह भाव पाठ की किन पंक्तियों का है, ढूँढ़कर लिखिए।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।" इसके माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?
2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के प्रयत्न बेकार क्यों हो रहे हैं?
3. बंद द्वार की साँकल को किस प्रकार खोला जा सकता है? यहाँ बंद द्वार से क्या अभिप्राय है?
4. माँझी के समक्ष कवयित्री क्यों परेशान है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

अनुच्छेद पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क्या आपने उन साधु-संन्यासियों, फ़कीरों को देखा है जो हाथ में एकतारा, सारंगी, चिमटा या डफ आदि लेकर कुछ गा-गाकर सुनाते हैं। या फिर आप उन पुराने मंदिरों व दरगाहों में कभी

SCERT TELANGANA

गये हैं, जहाँ हारमोनियम, ढोलक, मंजीरों को बजाते हुए अलग किस्म के गीत गाये जाते हैं? अगर हाँ तो आप फिर ये भी जानना चाहते होंगे कि गानों से कुछ अलग तरीके की यह क्या चीज़ है। यह आजकल के गानों से भिन्न गायी जाने वाली एक विधा है। पहले समय में जब रेडियो, टी.वी., अखबार आदि नहीं थे। लोग घूम-घूमकर नेकी और भलाई के उपदेश दिया करते थे तथा लोगों में भक्ति व मानवता का भाव जगाने के लिए सूफी और संत कवियों की रचनाएँ गाते थे। ये काव्य आज भी हमारे लिए अनमोल निधि से कम नहीं हैं।

प्रश्न 1. साधु-संन्यासी-फ़कीर गीत गाते समय वाद्यों का उपयोग क्यों करते थे?

2. प्राचीन और आज के गीतों में क्या अंतर है?
3. साधु-संन्यासी-फ़कीर किसके कहने पर घूम-घूम कर नेकी और भलाई के संदेश देते होंगे?
4. आज घूम-घूमकर नेकी और भलाई के संदेश देने वाले साधु-संन्यासी-फ़कीर आदि क्यों कम हो गये हैं?
5. यदि रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र आदि आधुनिकतम संचार के साधन न हों तो हमारे सामने कैसी समस्याएँ आ सकती हैं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. संत कवियों ने नैतिकता पर विशेष महत्व क्यों दिया होगा?
2. मुक्ति का क्या अभिप्राय है? मनुष्य को मुक्ति कैसे मिल सकती है?
3. धार्मिक एकता की स्थापना के लिए हम क्या प्रयास कर सकते हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवयित्री ने परमात्मा प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?
2. कवयित्री परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में किसे बाधक मानती है?
3. आपने कबीर को पढ़ा है। ललद्यद महिला होते हुए भी धर्म की संकीर्णताओं पर वैसे ही प्रहार करती हैं, जैसे कबीर। कबीर से तुलना करते हुए इनकी विशेषताएँ लिखिए।

SCERT TELANGANA

❖ सृजनात्मक कार्य

ललद्यद कश्मीर की कवयित्री हैं। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। किसी स्थान के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए एक छोटी कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

❖ प्रशंसा

प्राचीन काल में अधिकतर महिलाएँ पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। उस काल में भी ललद्यद की कविताएँ उनकी ज्ञानपिपासुता को दर्शाती हैं, जो सराहनीय है। महिलाओं की शिक्षा समाज के लिए कितनी श्रेयस्कर है? इस पर अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

ललद्यद ने अपनी वाखों में मुहावरेदार प्रयोग किये हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

- हूक उठना
- भवसागर पार होना
- बंद साँकल खोलना
- जेब टटोलना
- कौड़ी न पाना
- थल-थल में बसना

परियोजना कार्य

भक्तिकाल में ललद्यद के अतिरिक्त तमिलनाडु की आंडाल, कर्नाटक की अक्क महादेव और राजस्थान की मीरा जैसी अन्य महिला कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-II

6. दो बैलों की कथा

रचनाकार

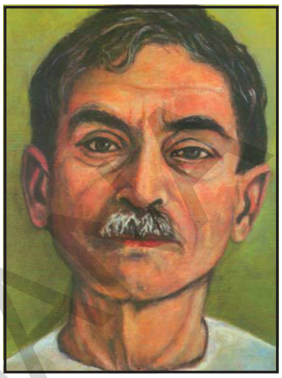

प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में बनारस के लमही गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचंद का बचपन अभावों में बीता और शिक्षा बी.ए. तक ही हो पाई। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। सन् 1936 में इस महान कथाकार का देहांत हो गया।

प्रेमचंद की कहानियाँ **मानसरोवर** के आठ भागों में संकलित हैं। **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान** उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने **हंस, जागरण, माधुरी** आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया। कथा साहित्य के अतिरिक्त प्रेमचंद ने निबंध एवं अन्य प्रकार का गद्य लेखन भी प्रचुर मात्रा में किया। प्रेमचंद साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया। उसकी अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में मिलती है। किसानों और मज़दूरों की दयनीय स्थिति, दलितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद के कथा साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। उसमें मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों को भी अद्भुत आत्मीयता मिली है। बड़ी से बड़ी बात को सरल भाषा में सीधे और संक्षेप में कहना प्रेमचंद के लेखन की प्रमुख विशेषता है। उनकी भाषा सरल, सजीव व मुहावरेदार है तथा उन्होंने अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया है।

प्रस्तावना प्रसंग

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना।
वो बाग़ की बहारें, वो सब का चहचहाना।
क्या बदनसीब हूँ मैं घर को तरस रहा हूँ
साथी तो हैं वतन में, मैं कैद में पड़ा हूँ।

प्रश्न

1. पक्षी क्या सोच रहा है?
2. पक्षी स्वयं को बदनसीब क्यों मान रहा है?
3. पालतू एवं स्वतंत्र जानवरों में कौन अधिक सुरक्षित हैं? क्यों?

भूमिका

दो बैलों की कथा के माध्यम से प्रेमचंद ने कृषक समाज और पशुओं के भावात्मक संबंध का वर्णन किया है। इस कहानी में उन्होंने यह भी बताया है कि स्वतंत्रता सहज में नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार परोक्ष रूप से यह कहानी आज़ादी के आंदोलन की भावना से जुड़ी है। इसके साथ ही इस कहानी में प्रेमचंद ने पंचतंत्र और हितोपदेश की कथा-परंपरा का उपयोग और विकास किया है।

SCERT TELANGANA

1

जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याही हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ़्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते

SCERT TELANGANA

हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफ़ों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे 'हीरा' और 'मोती'। दोनों पछाई जाति के थे- देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाते थे, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे- विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते- तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह नहीं डाला। दिल भारी हो रहा था जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों-से लगते थे।

SCERT TELANGANA

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, एक दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में उस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद् हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा- ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।

दूसरे ने समर्थन किया- इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।

तीसरा बोला- बैल नहीं हैं वे उस जनम के आदमी हैं।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को दूवार पर देखा, तो जल उठी। बोली- कैसे नमकहराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका- नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना न दिया होगा, तो क्या करते?

स्त्री ने रोब के साथ कहा- बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।

झूरी ने चिढ़ाया- चारा मिलता तो क्यों भागतें?

स्त्री चिढ़ी- भागे इसलिए कि वे लोग तुम-जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ, कहाँ से खली और चोकर मिलता है। सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खाएँ चाहें मरें।

वही हुआ। मजूर को कड़ी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला, तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट, न कोई रस! क्या खाएँ? आशा-भरी आँखों से दूवार की ओर ताकने लगे।

झूरी ने मजूर से कहा- थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता?

'मालकिन मुझे मार ही डालेंगी'

'चुराकर डाल आ'

'न दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी कहोगे।'

2

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। 'अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था।

संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा!

नाँद की तरफ आँखें तक न उठायीं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते- मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा- भागना व्यर्थ है।

मोती ने उत्तर दिया- तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।

'अब की बड़ी मार पड़ेगी'

'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?'

'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।'

मोती बोला- कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया- नहीं भाई! खड़े हो जाओ।

'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!'

'नहीं हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

SCERT TELANGANA

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गयी। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गयी थी।

दोनों दिन भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती।

प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!

'क्या करना चाहते हो?'

'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।'

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ हो जाएगी?'

'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।'

'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।'

'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ तुड़ाकर भाग चलें।'

'हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?'

'इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।'

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गयी, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछे खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनके नाकों में नाथ डाल दी जाए।

उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा- अब चलते क्यों नहीं?

SCERT TELANGANA

हीरा ने कहा-चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफ़त आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई- दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा- मालूम होता है, राह भूल गए।

'तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।'

'उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें?'

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह-रहकर आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए और एक-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ तक कि वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा और फिर मोती से मिल गया। मोती ने देखा- खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया।

3

अरे! यह क्या? कोई साँड डौंकता चला आ रहा है। हाँ, साँड ही है। वह सामने आ पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड पूरा हाथी है। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नज़र आती। इन्हीं की तरफ आ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है।

मोती ने मूक भाषा में कहा- बुरे फँसे। जान बचेगी? कोई उपाय सोचो।

हीरा ने चिंतित स्वर में कहा- अपने घमंड में भूला हुआ है। आरज़ू-विनती न सुनेगा।

'भाग क्यों न चलें?'

'भागना कायरता है।'

'तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ-दो ग्यारह होता है।'

'और जो दौड़ाए?'

'तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द।'

SCERT TELANGANA

'उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें? मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है; पर दूसरा उपाय नहीं है।'

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्यों ही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड उसकी तरफ़ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा। साँड चाहता था कि एक-एक करके दोनों को गिरा ले; पर ये दोनों भी उस्ताद थे। उसे वह अवसर न देते थे। एक बार साँड झल्लाकर हीरा का अंत कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दिया। साँड क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर बेचारा ज़ख्मी होकर भागा और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा- मेरा जी चाहता था कि बच्चा को मार ही डालूँ।

हीरा ने तिरस्कार किया- गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।

'यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।'

'अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।'

'पहले कुछ खा लें, तो सोचें।'

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा, पर उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाए थे कि दो आदमी लाठियाँ लिए दौड़ पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था उसके खुर कीचड़ में धँसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया गया। हीरा ने देखा, संगी संकट में हैं, तो लौट पड़ा। फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

प्रातःकाल दोनों मित्र कांजीहौस में बंद कर दिए गए।

4

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब ज़मीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमज़ोर हो गए थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

रात को भी जब कुछ भोजन न मिला तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला- अब तो नहीं रहा जाता मोती!

मोती ने सिर लटकाए हुए जवाब दिया- मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।

'इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई! यहाँ से भागने का कोई उपाय निकालना चाहिए।'

'आओ दीवार तोड़ डालें।'

'मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा।'

'बस इसी बूते पर अकड़ते थे।'

'सारी अकड़ निकल गई।'

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मज़बूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए और ज़ोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। उसने दौड़-दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय कांजी हौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाज़िरी लेने आ निकला। हीरा का उजड्डपन देखकर उसने उसे कई डंडे रसीद किए और मोटी सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा- आखिर मार खायी, क्या मिला?

अपने बूते-भर ज़ोर तो मार दिया।

'ऐसा ज़ोर मारना किस काम का कि और बंधन में पड़ गए।'

'जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बँधन पड़ते जाएँ।'

'जान से हाथ धोना पड़ेगा।'

'कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती, तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बंद हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो-चार दिन और यही हाल रहा, तो सब मर जाएँगे।'

'हाँ, यह बात तो है। अच्छा, तो ला, फिर मैं भी ज़ोर लगाता हूँ।'

मोती ने भी दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी-सी मिट्टी गिरी और फिर हिम्मत बढ़ी। फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह ज़ोर करने लगा, मानो किसी प्रतिद्वंद्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की ज़ोर-आज़माई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गई। उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसें भी खिसक गयीं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा- तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?

एक गधे ने कहा- जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएँ।

SCERT TELANGANA

'तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।'

'हमें तो डर लगता है, हम यहीं पड़े रहेंगे।'

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा- तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए।

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा- तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ।

हीरा ने कहा- बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जाएँगे, यह तुम्हारी शरारत है।

मोती गर्व से बोला- जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता! इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की ज़रूरत नहीं। बस, इतना ही काफ़ी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

5

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे। किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला। हाँ, एक बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था। दोनों इतने दुर्बल हो गए थे कि उठा तक न जाता था, ठठरियाँ निकल आई थीं।

एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गए। तब दोनों मित्र निकाले गए और उनकी देखभाल होने लगी। लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते। ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीददार होता?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हों में उँगली गोदकर मुंशी जी से बातें करने लगा। उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे। वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह न हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा- गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी।

मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया- कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती?

SCERT TELANGANA

'भगवान के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचाएँगे?'

'यह आदमी छुरी चलाएगा। देख लेना। '

'तो क्या चिंता है? माँस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जाएँगे।

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह ज़रा भी चाल धीमी हो जाने पर ज़ोर से डंडा जमा देता था।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार में चरता नज़र आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज़ होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह! यह लो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे, यही कुआँ है। मोती ने कहा- हमारा घर नगीच आ गया।

हीरा बोला- भगवान की दया है।

'मैं तो अब घर भागता हूँ।'

'यह जाने देगा?'

'इसे मैं मार गिराता हूँ।'

SCERT TELANGANA

'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जाएँगे।'

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा- मेरे बैल हैं।

'तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिए आता हूँ।'

'मैं तो समझा हूँ चुराए लिए आते हो! चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है?'

'जाकर थाने में रपट कर दूँगा।'

'मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को ज़बरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका; पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था, दढ़ियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता'

'अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।'

'जो गोली मरवा दे?'

'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।'

'इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।

ज़रा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था। उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि कार्य में पशुओं का विशेष योगदान है। आज के वैज्ञानिक युग में कृषि के क्षेत्र में पशुओं का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।
2. जानवरों को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए या नहीं। आपका इस संबंध में क्या विचार है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. पाठ ध्यान से पढ़िए। उन पंक्तियों को रेखांकित कीजिए जिनसे हीरा के गुस्सैल स्वभाव का पता चलता है?
2. हीरा और मोती की दोस्ती प्रकट करने वाली पंक्तियाँ पाठ में रेखांकित कीजिए।
3. सही विकल्प पर ✓ निशान लगायें।

   गया ने हीरा–मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि–

   क. गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

   ख. गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

   ग. वह हीरा–मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

   घ. उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. आशय स्पष्ट कीजिए।

   क. अवश्य ही उनमें ऐसी कोई गुप्त शक्ति थी जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

   ख. उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।
2. हीरा, मोती की अपेक्षा अधिक मानवतावादी था। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
3. कांजीहौस में पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?
4. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

SCERT TELANGANA

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है। इसका मतलब है कि वे एक-दूसरे का आशय बखूबी समझ लेते हैं। यह बात तो है कि पशु-पक्षियों की मनुष्यों जैसी सुविकसित भाषा नहीं होती, पर वे सीधी-सादी आवाज़ों और क्रियाओं से अपनी बात कह पाते हैं। ये बड़ी आसानी से खुशी, भय, चेतावनी, आमंत्रण जैसी कई भावनाओं को दर्शा सकते हैं। किसी पक्षी द्वारा किए गए इशारे कोई अन्य पक्षी भी पहचान सकता है। खतरा आने पर दिया जानेवाला इशारा हर पशु-पक्षी समझते हैं।

मनुष्य जैसी सुलझी हुई भाषा पशु-पक्षी नहीं बोल पाते। इसलिए वे अपने संवाद में निरंतरता नहीं बना सकते और एक-दूसरे की अभिव्यक्तियाँ ठीक तरह से संप्रेषित नहीं कर पाते। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इनमें कुछ विशेष नहीं है। सभी प्राणियों की अपनी कुछ अनोखी विशेषताएँ होती हैं, जो उन्हें विशेष बनाती हैं।

1. बखूबी का अर्थ क्या है?

   क. ठीक नहीं ख. अच्छी तरह ग. कठिनाई घ. बहुत
2. आवाज़ का पर्याय क्या है?

   क. चहचहाना ख. शोर ग. ध्वनि घ. भाषा
3. इस गद्यांश का उचित शीर्षक सुझाइए।
4. किसी एक प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।
5. मनुष्यों जैसी सुलझी हुई भाषा पशु-पक्षियों की क्यों नहीं हो सकती?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. मनुष्यों के साथ अमानुषिक व्यवहार गलत माना जाता है, किन्तु मनुष्य पशुओं के साथ अमानुषिक व्यवहार करता है। उनसे कठिन परिश्रम करवाता है। ऐसी स्थिति के कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. अगर हीरा-मोती को सही समय पर उनका मालिक झूरी न मिलता तो कहानी का अंत कैसे होता?
3. घर, गाँव, झूरी को देखते ही हीरा-मोती में साहस फूट पड़ा। मोती ने दढ़ियल को गाँव के बाहर खदेड़ दिया। हीरा और मोती ने खरीद कर ले जाते समय ही दढ़ियल का विरोध क्यों नहीं किया? इस साहस के उत्पन्न होने का क्या कारण रहा होगा?
4. कहानी में किसानों के पशु प्रेम को दर्शाया गया है। इससे पता चलता है कि किसान और उसके पशु एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

SCERT TELANGANA

5. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है। यह भूले जाते हो।" -हीरा के इस वचन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति विषय उभर कर आये हैं?
2. "इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।" -मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।
3. हीरा-मोती का शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाना और प्रताड़ना सहना हमें क्या प्रेरणा देता है? विस्तार से लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

किसी ऐसे जानवर की आत्मकथा लिखिए जो चिड़ियाघर में बंदी हो गया हो।

❖ प्रशंसा

अक्सर देखा जाता है कि बच्चे अकारण ही अपनी गली के कुत्तों, बिल्लियों आदि को पत्थर मारते या सताते हैं। ऐसे बच्चों को आप किस प्रकार पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम रखने के बारे में समझाएँगे?

भाषा की बात

1. पाठ में आए मुहावरे ढूँढ़िए और उनमें से किन्हीं पाँच मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. बस इतना 'ही' काफ़ी है।

   फिर मैं 'भी' ज़ोर लगाता हूँ।

   'ही', 'भी', वाक्य में किसी बात पर ज़ोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ है।
3. रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उनके भी भेद लिखिए।

   क. दीवार का गिरना था कि अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

   ख. सहसा एक दढ़ियल आदमी जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया।

   ग. हीरा ने कहा- गया के घर से नाहक भागे।

   घ. मैं बेचूँगा तो बिकेंगे।

   ङ. अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

परियोजना कार्य

पशु-पक्षियों से संबंधित एक अन्य कहानी एकत्र कीजिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-II

7. कैदी और कोकिला

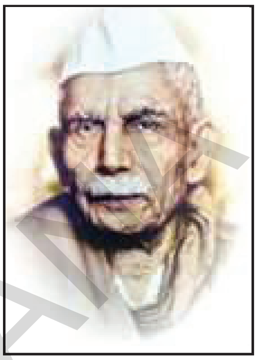

रचनाकार

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के बाबई गाँव में सन् 1889 में हुआ। मात्र 16 वर्ष की अवस्था में वे शिक्षक बने। बाद में अध्यापन कार्य छोड़कर उन्होंने **प्रभा** पत्रिका का संपादन शुरू किया। वे देशभक्त कवि एवं प्रखर पत्रकार थे। उन्होंने **कर्मवीर** और **प्रताप** का भी संपादन किया। सन् 1968 में उनका देहांत हो गया।

हिम किरीटनी, साहित्य देवता, हिम तरंगिणी, वेणु लो गूँजे धरा उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। उन्हें पद्मभूषण एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ राष्ट्रीय भावना से युक्त हैं। उनमें स्वतंत्रता की चेतना के साथ देश के लिए त्याग और बलिदान की भावना मिलती है। इसीलिए उन्हें **एक भारतीय आत्मा** कहा जाता है। इस उपनाम से उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं। वे एक कवि-कार्यकर्ता थे और स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कई बार जेल गए। उन्होंने भक्ति, प्रेम और प्रकृति संबंधी कविताएँ भी लिखी हैं।

चतुर्वेदी जी कविता में शिल्प की तुलना में भाव को अधिक महत्व देते हैं। उन्होंने परंपरागत छंदबद्धता एवं तत्सम शब्दावली के स्थान पर बोलचाल की भाषा के साथ-साथ उर्दू, फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

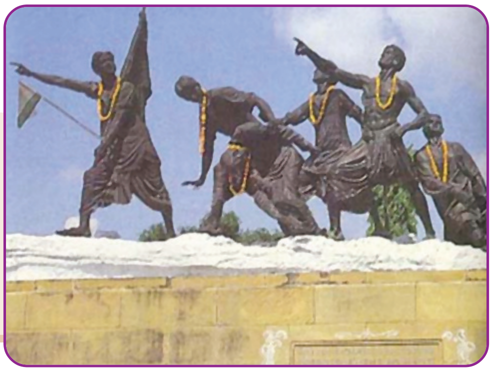

प्रस्तावना प्रसंग

वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें जीवन न रवानी है।
जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं है पानी है।

प्रश्न

1. 'वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं।' भाव स्पष्ट कीजिए।
2. परवश होकर बहनेवाले खून को कवि ने पानी क्यों कहा है?
3. इस कविता से आपको क्या संदेश मिलता है?

भूमिका

ब्रितानी उपनिवेशवाद के शोषण तंत्र का बारीक विश्लेषण करती **कैदी और कोकिला** कविता बहुत लोकप्रिय रही है। यह कविता भारतीय स्वाधीनता सेनानियों के साथ जेल में किए गए दुर्व्यवहारों और यातनाओं का मार्मिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

कवि जेल में एकाकी और उदास है। कोकिल से अपने मन का दुख, असंतोष और ब्रितानी शासन के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करते हुए वह कहता है कि यह समय मधुर गीत गाने का नहीं बल्कि मुक्ति का गीत सुनाने का है। कवि को लगता है कि कोयल भी पूरे देश को कारागार के रूप में देखने लगी है इसलिए अद्र्धरात्रि में चीख उठी है।

SCERT TELANGANA

क्या गाती हो?
क्यों रह-रह जाती हो?
कोकिल बोलो तो!
क्या लाती हो?
संदेशा किसका है?
कोकिल बोलो तो!

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट-भर खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?

क्यों हूक पड़ी?
वेदना बोझ वाली-सी,
कोकिल बोलो तो!
क्या लूटा?
मृदुल वैभव की
रखवाली-सी,
कोकिल बोलो तो!

क्या हुई बावली?
अर्द्धरात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखीं?
कोकिल बोलो तो!

SCERT TELANGANA

क्या?-देख न सकती ज़ंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश-राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ?-जीवन की तान,
गिट्टी पर अँगुलियों ने लिखे गान!
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में ग़ज़ब ढा रही आली?

इस शांत समय में,
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज
इस भाँति बो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,

मेरी काल कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह-श्रृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की ब्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली!

इस काले संकट-सागर पर
मरने की, मदमाती!
कोकिल बोलो तो!
अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो!

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली!
तेरा नभ-भर में संचार
मेरा दस फुट का संसार!
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी-मेरी
बजा रही तिस पर रणभेरी!

इस हुंकृति पर,
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
कोकिल बोलो तो!
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!
कोकिल बोलो तो!

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. इस कविता में स्वतंत्रता सेनानियों की विचारधारा का अद्भुत चित्रण हुआ है। अनुमान लगाइए कि उस समय भारत देश में किस प्रकार का माहौल रहा होगा?
2. भारत की आज़ादी के लिए अनेक लोगों ने त्याग और बलिदान दिया। अपना सर्वस्व देश के लिए न्यौछावर कर दिया। आज हम स्वतंत्र हैं। स्वतंत्रता के स्थायित्व के लिए हम क्या योगदान दे सकते हैं?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया हुई?
2. कविता में तुम्हें कौनसी पंक्तियाँ अच्छी लगीं और क्यों?
3. कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बतायी?
4. कवि ने अँग्रेज़ी शासन की तुलना तम के प्रभाव से क्यों की है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. भाव स्पष्ट कीजिए।

   क. मृदुल वैभव की रखवाली–सी, कोकिल बोलो तो!

   ख. हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।

   ग. चुपचाप मधुर विद्रोह–बीज, इस भाँति बो रही क्यों हो?
2. अर्द्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा है?
3. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?
4. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?
5. "काली तू ..... ऐ आली!" – इन पंक्तियों में **काली** शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

SCERT TELANGANA

ग. **पढ़ने की योग्यता का विस्तार**

कविता पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

था उचित कि गाँधीजी की निर्मम हत्या पर
तारे छिप जाते, काला हो जाता अंबर
केवल कलंक अवशिष्ट चंद्रमा रह जाता
कुछ और नज़ारा था जब ऊपर गई नज़र
अंबर में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों
नभबात किसी के स्वागत में चिरचंचल था
उस महाशोक में भी मन में अभिमान था
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ
प्रतिफलित हुआ धरती के तप से कुछ ऐसा
जिसका अमरों के आंगन में सम्मान हुआ।

1. इस कविता का उचित शीर्षक दीजिए।
2. आकाश में खुशनुमा माहौल क्यों था?
3. अमरों के आँगन से क्या अभिप्राय है?
4. लेखक को महाशोक में भी अभिमान क्यों हुआ?

अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आपके विचार में स्वतंत्रता सेनानियों और तत्कालीन अपराधियों के साथ अँग्रेज़ सरकार एक-सा व्यवहार क्यों करती थी?

SCERT TELANGANA

2. कवि चाहता तो दीवारों से भी बातें कर सकता था। उसने इस कविता को कहने के लिए कोयल को माध्यम क्यों बनाया होगा?
3. स्वतंत्रता सेनानी स्वतंत्रता से अत्यंत प्रेम करते थे, लेकिन वे हँसते-हँसते जेल भी जाते थे। इसका क्या कारण रहा होगा?
4. अनुमान लगाइए कि जेल में बंद कैदियों की दिनचर्या कैसी रहती होगी?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवि के स्मृति पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं?
2. कैदी और कोकिला कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

देश की स्वतंत्रता एवं अखंडता को बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हुए पाँच नारे लिखिए।

❖ प्रशंसा

महात्मा गाँधी का मानना था कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। इस विचार के अनुसार अपराधियों को सुधारने की ज़िम्मेदारी भी समाज की ही है। इसके लिए क्या किया जाना चाहिए?

भाषा की बात

1. कविता पढ़िए। कविता के भाव के आधार पर निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए। इनसे एक-एक नए वाक्य बनाइए।
   हिमकर, मृदुल, दावानल, श्रृंखला, नसीब, विषमता
2. **काल कोठरी काली,** कवि ने इस प्रकार के ध्वन्यात्मक आवृत्ति वाले शब्दों का प्रयोग किया है। इससे भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। कविता पढ़िए। इस प्रकार के शब्द समूह लिखिए।

परियोजना कार्य

किन्हीं दो स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और लिखिए जिनमें एक महिला तथा एक पुरुष हों।

SCERT TELANGANA

इकाई-II

8. नाना साहब की पुत्री

रचनाकार

चपला देवी द्विवेदी युग की लेखिका के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं हो पायी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पुरुष-लेखकों के साथ-साथ अनेक महिलाओं ने भी अपने-अपने लेखन से आज़ादी के आंदोलन को गति दी। उनमें से एक लेखिका चपला देवी भी रही हैं। कई बार अनेक रचनाकार इतिहास में दर्ज होने से वंचित रह जाते हैं, चपला देवी भी उन्हीं में से एक हैं।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि सन् 1857 की क्रांति के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब की पुत्री बालिका मैना आज़ादी की नन्हीं सिपाही थीं जिसे अंग्रेजों ने जलाकर मार डाला। बालिका मैना के बलिदान की कहानी को चपला देवी ने इस गद्य रचना में प्रस्तुत किया है। यह गद्य रचना जिस शैली में लिखी गई है उसे हम रिपोर्ताज का प्रारंभिक रूप कह सकते हैं।

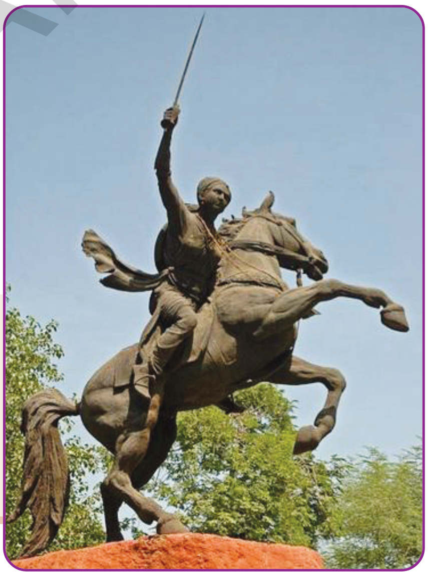

प्रस्तावना प्रसंग

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी।
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी।
हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी।

प्रश्न

1. ऊपर दी हुई पंक्तियों में किसका वर्णन है? अनुमान लगाइए।
2. कवयित्री ने रानी के बारे में 'मनुज नहीं अवतारी थी' क्यों कहा?
3. कुछ अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताइए।

भूमिका

मातृभूमि की स्वतंत्रता और उसकी रक्षा के लिए जिन्होंने अपने प्राण न्योछावर कर दिए उनके जीवन का उत्कर्ष हमारे लिए गौरव और सम्मान की बात है। उस गौरवशाली किंतु विस्मृत परंपरा से किशोर पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से इस रचना को **हिंदू पंच** के **बलिदान** अंक से लिया गया है। हिंदी गद्य के प्रारंभिक रूप को विद्यार्थी जान पाएँ इसलिए इस रचना के मुद्रण और वर्तनी में अधिक परिवर्तन नहीं किया गया है।

SCERT TELANGANA

सन् 1857 ई. के विद्रोही नेता धुंधूपंत नाना साहब कानपुर में असफल होने पर जब भागने लगे, तो वे जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। देवी मैना बिठूर में पिता के महल में रहती थी; पर विद्रोह दमन करने के बाद अंगरेज़ों ने बड़ी क्रूरता से उस निरीह और निरपराध देवी को अग्नि में भस्म कर दिया। उसका रोमांचकारी वर्णन पाषाण हृदय को भी एक बार द्रवीभूत कर देता है।

कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद अंगरेज़ों का सैनिक दल बिठूर की ओर गया। बिठूर में नाना साहब का राजमहल लूट लिया गया; पर उसमें बहुत थोड़ी सम्पत्ति अंगरेजों के हाथ लगी। इसके बाद अंगरेज़ों ने तोप के गोलों से नाना साहब का महल भस्म कर देने का निश्चय किया। सैनिक दल ने जब वहाँ तोपें लगायीं, उस समय महल के बरामदे में एक अत्यंत सुन्दरी बालिका आकर खड़ी हो गयी। उसे देख कर अंगरेज़ सेनापति को बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि महल लूटने के समय वह बालिका वहाँ कहीं दिखाई न दी थी।

उस बालिका ने बरामदे में खड़ी होकर अंगरेज़ सेनापति को गोले बरसाने से मना किया। उसका करुणापूर्ण मुख और अल्पवयस देखकर सेनापति को भी उस पर कुछ दया आयी। सेनापति ने उससे पूछा कि ''क्या चाहती है?''

बालिका ने शुद्ध अंगरेज़ी भाषा में उत्तर दिया,-

''क्या आप कृपा कर इस महल की रक्षा करेंगे?''

सेनापति - ''क्यों, तुम्हारा इससे क्या उद्देश्य है?''

बालिका - ''आप ही बताइए, कि यह मकान गिराने में आपका क्या उद्देश्य है?''

सेनापति- ''यह मकान विद्रोहियों के नेता नाना साहब का वास स्थान था। सरकार ने इसे विध्वंस कर देने की आज्ञा दी है।''

बालिका,- आपके विरुद्ध जिन्होंने शस्त्र उठाये थे, वे दोषी हैं; पर इस जड़ पदार्थ मकान ने आपका क्या अपराध किया है? मेरा उद्देश्य इतना ही है, कि यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है, इसी से मैं प्रार्थना करती हूँ, कि इस मकान की रक्षा कीजिए।

सेनापति ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, कि कर्तव्य के अनुरोध से मुझे यह मकान गिराना ही होगा। इस पर उस बालिका ने अपना परिचय बताते हुए कहा, कि- ''मैं जानती हूँ, कि आप जनरल 'हे' हैं। आपकी प्यारी कन्या मेरी में और मुझ में बहुत प्रेम संबंध था। कई वर्ष पूर्व मेरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे यहाँ आते थे और मुझे अपनी पुत्री के ही समान प्यार करते थे। मालूम होता है, कि आप वे सब बातें भूल गये हैं। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुःखी हुई थी; उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है।''

यह सुनकर सेनापति के होश उड़ गये। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, और फिर उसने उस बालिका को भी पहचाना, और कहा,- ''अरे यह तो नाना साहब की कन्या मैना है!''

सेनापति 'हे' कुछ क्षण ठहरकर बोले- ''हाँ, मैंने तुम्हें पहिचाना, कि तुम मेरी पुत्री मेरी की सहचरी हो! किन्तु मैं जिस सरकार का नौकर हूँ, उसकी आज्ञा नहीं टाल सकता। तो भी मैं तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।''

इसी समय प्रधान सेनापति जनरल अउटरम वहाँ पहुँचे, और उन्होंने बिगड़ कर सेनापति से कहा,- ''नाना का महल अभी तक तोप से क्यों नहीं उड़ाया गया?''

सेनापति 'हे' ने विनय पूर्वक कहा-, ''मैं इसी फिक्र में हूँ; किन्तु आपसे एक निवेदन है। क्या किसी तरह नाना का महल बच सकता है?''

अउटरम- ''गवर्नर जनरल की आज्ञा के बिना यह सम्भव नहीं। नाना साहब पर अंगरेज़ों का क्रोध बहुत अधिक है। नाना वंश या महल पर दया दिखाना असम्भव है।''

सेनापति 'हे',- ''तो लॉर्ड केनिंग (गवर्नर जनरल) को इस विषय का एक तार देना चाहिए।''

अउटरम,- ''आखिर आप ऐसा क्यों चाहते हैं? हम यह महल विध्वंश किये बिना, और नाना की लड़की को गिरफ़्तार किये बिना नहीं छोड़ सकते।''

सेनापति 'हे' मन में दुःखी होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद जनरल अउटरम ने नाना का महल फिर घेर लिया। महल का फाटक तोड़कर अंगरेज़ सिपाही भीतर घुस गये, और मैना को खोजने लगे, किन्तु आश्चर्य है, कि सारे महल का कोना-कोना खोज डाला; पर मैना का पता नहीं लगा।

उसी दिन संध्या समय लार्ड केनिंग का एक तार आया, जिसका आशय इस प्रकार था-

''लण्डन के मंत्रिमंडल का यह मत है, कि नाना का स्मृति-चिह्न तक मिटा दिया जाये। इसलिए वहाँ की आज्ञा के विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता।''

उसी क्षण क्रूर जनरल अउटरम की आज्ञा से नाना साहब के सुविशाल राजमंदिर पर तोप के गोले बरसने लगे। घंटे भर में वह महल मिट्टी में मिला दिया गया।

SCERT TELANGANA

उस समय लंडन के सुप्रसिद्ध ''टाइम्स'' पत्र में छठी सितंबर को यह एक लेख में लिखा गया - ''बड़े दुःख का विषय है, कि भारत-सरकार आज तक उस दुर्दान्त नाना साहब को नहीं पकड़ सकी, जिस पर समस्त अंगरेज़ जाति का भीषण क्रोध है। जब तक हम लोगों के शरीर में रक्त रहेगा, तब तक कानपुर में अंगरेज़ों के हत्याकांड का बदला लेना हम न भूलेंगे। उस दिन पार्लमेंट की 'हाउस आफ़ लार्ड्स' सभा में सर टामस 'हे' की एक रिपोर्ट पर बड़ी हँसी हुई, जिसमें हे ने नाना की कन्या पर दया दिखाने की बात लिखी थी। 'हे' के लिए निश्चय ही यह कलंक की बात है- जिस नाना ने अंगरेज़ नर-नारियों का संहार किया, उसकी कन्या के लिये क्षमा! अपना सारा जीवन युद्ध में बिता कर अन्त में वृद्धावस्था में सर टामस 'हे' एक मामूली महाराष्ट्र बालिका के सौन्दर्य पर मोहित होकर अपना कर्तव्य ही भूल गये! हमारे मत से नाना के पुत्र, कन्या तथा अन्य कोई भी संबंधी जहाँ कहीं मिले, मार डाला जाये। नाना की जिस कन्या से 'हे' का प्रेमालाप हुआ है, उसको उन्हीं के सामने फाँसी पर लटका देना चाहिए।''

सन् 57 के सितम्बर मास में अर्द्ध रात्रि के समय चाँदनी में एक बालिका स्वच्छ उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए नाना साहब के भग्नावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी रो रही थी। पास ही जनरल अउटरम की सेना भी ठहरी थी। कुछ सैनिक रात्रि के समय रोने की आवाज़ सुनकर वहाँ गये। बालिका केवल रो रही थी। सैनिकों के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देती थी।

इसके बाद कराल रूपधारी जनरल अउटरम भी वहाँ पहुँच गया। वह उसे तुरंत पहिचानकर बोला- ''ओह! यह नाना की लड़की मैना है!'' पर वह बालिका किसी ओर न देखती थी और न अपने चारों ओर सैनिकों को देखकर जरा भी डरी। जनरल अउटरम ने आगे बढ़कर कहा- ''अंगरेज़ सरकार की आज्ञा से मैंने तुम्हें गिरफ़्तार किया।''

मैना उसके मुँह की ओर देखकर आर्त्त स्वर में बोली- ''मुझे कुछ समय दीजिये, जिसमें आज मैं यहाँ जी भरकर रो लूँ।''

पर पाषाण-हृदय वाले जनरल ने उसकी अंतिम इच्छा भी पूरी होने न दी। उसी समय मैना के हाथ में हथकड़ी पड़ी और वह कानपुर के किले में लाकर कैद कर दी गयी।

उस समय महाराष्ट्रीय इतिहास वेत्ता महादेव चिटनवीस के ''बाखर'' पत्र में छपा था-

''कल कानपुर के किले में एक भीषण हत्याकांड हो गया। नाना साहब की एकमात्र कन्या मैना धधकती हुई आग में जलाकर भस्म कर दी गयी। भीषण अग्नि में शांत और सरल मूर्ति उस अनुपमा बालिका को जलती देख, सबने उसे देवी समझ कर प्रणाम किया।''

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. स्वतंत्रता संग्राम में अनेक लोगों ने अपना बलिदान दिया। उनका बलिदान स्वयं तक ही सीमित न था, उनका परिवार व सगे–संबंधी भी आज़ादी की भेंट चढ़ गये। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली क्या हो सकती है? चर्चा कीजिए।
2. इस पाठ में इतिहास की एक ऐसी घटना का चित्रण है जो तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को उजागर करती है। देशभक्ति एवं देश के लिए कुर्बानी की कथाएँ पढ़ने के पीछे हमारा क्या उद्देश्य हो सकता है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - मैना की अंतिम इच्छा
   - मैना की हत्या के बाद छपा समाचार
2. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन–कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया?
3. सर टामस 'हे' के मैना पर दया–भाव के क्या कारण थे?
4. 'टाइम्स' पत्र ने 6 सितंबर को लिखा था– "बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार आज तक उस दुर्दांत नाना साहब को नहीं पकड़ सकी।" इस वाक्य में 'भारत सरकार' से क्या आशय है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों?
2. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?
3. बिठूर का राजमहल नष्ट करने के पीछे अँग्रेज़ों का क्या उद्देश्य रहा होगा?
4. बालिका मैना के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

SCERT TELANGANA

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आज़ाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और आदर दोनों मिले। सरकारों ने उन्हें पैसों से तोलना चाहा। कई वर्ष पहले पंजाब में उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री दरबारा सिंह ने उन्हें 51 हज़ार रुपये भेंट किये। भाभी ने वे रुपये वापस कर दिये। कहा- "जब हम आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ या उपलब्धि की अपेक्षा नहीं थी। केवल देश की स्वतंत्रता ही ध्येय था। उस ध्येय पथ पर हमारे कितने ही साथी अपना सर्वस्व निछावर कर गए, शहीद हो गए। मैं चाहती हूँ कि मुझे जो 51 हज़ार रुपये दिए गए हैं, उस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बना दिया जाए, जिसमें क्रांतिकारी इतिहास का अध्ययन और अध्यापन हो, क्योंकि देश की नई पीढ़ी को इसकी बहुत आवश्यकता है।"

मुझे याद आता है सन् 1937 का ज़माना, जब कुछ क्रांतिकारी साथियों ने गाज़ियाबाद तार भेजकर भाभी से चुनाव लड़ने की प्रार्थना की थी। भाभी ने तार से उत्तर दिया- चुनाव में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। अतः लड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मुल्क के स्वाधीन होने के बाद की राजनीति भाभी को कभी रास नहीं आई। अनेक शीर्ष नेताओं से निकट संपर्क होने के बाद भी वे संसदीय राजनीति से दूर ही बनी रहीं। शायद इसलिए अपने जीवन का शेष हिस्सा नई पीढ़ी के निर्माण के लिए अपने विद्यालय को उन्होंने समर्पित कर दिया।

1. स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी का सम्मान किस प्रकार किया गया?
2. दुर्गा भाभी ने भेंट स्वरूप प्रदान किए गए रुपये लेने से इंकार क्यों कर दिया?
3. दुर्गा भाभी संसदीय राजनीति से दूर क्यों रहीं?
4. आज़ादी के बाद उन्होंने अपने को किस प्रकार व्यस्त रखा?
5. दुर्गा भाभी के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता आप अपनाना चाहेंगे?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में इस प्रकार के लेखन की क्या भूमिका रही होगी?
2. यदि आप उस समय होते तो मैना की हत्या की खबर पढ़ने के बाद आपके मन में क्या विचार आते?

SCERT TELANGANA

3. इस पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

4. नाना साहब के बारे में आप क्या जानते हैं?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. मैना की कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

2. इस रिपोर्ताज की लेखिका महिला हैं। खबर भी महिला के बारे में है। गुलामी के दिनों में इस तरह घटना की खबर लिखने वाले भी क्रांतिकारी माने जाने चाहिए। इन तथ्यों के आधार पर स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान पर एक लेख लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

कल्पना कीजिए कि मैना के बलिदान की यह खबर आपको रेडियो पर प्रस्तुत करनी है। इन सूचनाओं के आधार पर आप एक रेडियो समाचार तैयार करें और कक्षा में भावपूर्ण शैली में पढ़ें।

❖ प्रशंसा

आप किसी ऐसे बालक/बालिका के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए जिसने कोई बहादुरी का कार्य किया हो?

भाषा की बात

भाषा और वर्तनी का स्वरूप बदलता रहता है। इस पाठ में हिन्दी गद्य का प्रारंभिक युग व्यक्त हुआ है जो लगभग 75-80 वर्ष पहले था। इस पाठ के किसी पसंदीदा अनुच्छेद को वर्तमान हिन्दी रूप में लिखिए।

परियोजना कार्य

इस पाठ में रिपोर्ताज के प्रारंभिक रूप की झलक मिलती है लेकिन आज अखबारों में अधिकांश खबरें रिपोर्ताज की शैली में लिखी जाती हैं। आप-

क. कोई दो खबरें किसी अखबार से काटकर अपनी कॉपी में चिपकाइए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

ख. अपने आसपास की किसी घटना का वर्णन रिपोर्ताज शैली में कीजिए।

SCERT TELANGANA

रीढ़ की हड्डी

-जगदीशचंद्र माथुर

उपवाचक

मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाज़े से आते हुए जिन महाशय की पीठ नज़र आ रही है वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं, एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।

बाबू : अबे धीरे-धीरे चल...अब तख्त को उधर मोड़ दे...उधर..बस, बस!

नौकर : बिछा दूँ साहब?

बाबू : (जरा तेज़ आवाज़ में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?...बिछा दूँ साब! ...और यह पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्त बिछाता है) ही-ही-ही।

बाबू : हँसता क्यों है?...अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं, कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज़ है?...उसे सीधा कर...यों...हाँ बस। ...और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही। (नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेज़पोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ़ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा आती हैं। गंदुमी रंग, छोटा कद, चेहरे और आवाज़ से ज़ाहिर होता है किसी काम में बहुत व्यस्त हैं। उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है- खाली हाथ। बाबू साहब (रामस्परूप) दोनों तरफ़ देखने लगते हैं...)

प्रेमा : मैं कहती हूँ तुम्हें इस वक्त धोती की क्या ज़रूरत पड़ गई एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में...!

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो, और फिर न जाने किसलिए ...

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था- धोबी के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला...अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का।

प्रेमा : अच्छा, जा पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं! न उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

SCERT TELANGANA

प्रेमा : दरी यहीं तो रक्खी है, कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए) और बीबी जी के कमरे में से हरिमोनियम उठा ला, और सितार भी।...जल्दी जा।

(रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए! और तुम उसकी माँ, किस मर्ज़ की दवा हो? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवक़ूफ़ी से सारी मेहनत बेकार जाए तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना ज़माना अच्छा था। 'आ ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो 'स्त्री-सुबोधिनी' में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं- ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई होगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं...

रामस्वरूप : ग्रामोफ़ोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे तब रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेम : हटो भी। तुम्हें ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में।

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि ज़रा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीज़ों से न जाने किस जन्म की नफ़रत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं बाज़ आई तुम्हारी इस लड़की से!

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है! वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारबार चलता है।

प्रेमा : अरे मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेंस ही पास करा देते- लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती। पर तुम तो...

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप चुप..(दरवाज़े में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी ज़बान पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन सब लोगों के सामने ज़िक्र और ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी!

SCERT TELANGANA

प्रेमा	:	अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्ज़ी हो, करना। बस मुझे तो मेरा काम बता दो।
रामस्वरूप	:	तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लाकर भेज देना उसे। और, नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन?... इधर ला, इधर! बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल।... पकड़ तो ज़रा उधर से। (चद्दर बिछाते हैं)
प्रेमा	:	नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज़्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीज़ें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।
रामस्वरूप	:	क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ़्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए, सो नखरों के मारे...
प्रेमा	:	यहाँ काम कौन ज़्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही। बाजा-सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबर वाले कमरे में ट्रे में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज़ खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा..दो आदमी ही तो हैं।
रामस्वरूप	:	हाँ एक तो बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि ज़रा करीने से आए। ये लोग ज़रा ऐसे ही है..गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज़्यादा पढ़ी-लिखी न हो।
प्रेमा	:	और लड़का?
रामस्वरूप	:	बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...
रतन	:	(जो अब तक दरवाज़े के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी) बाबू जी, बाबू जी!
रामस्वरूप	:	क्या है?
रतन	:	कोई आते हैं।
रामस्वरूप	:	(दरवाज़े से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अंदर करते हुए) अरे ए प्रेमा, वे आभी गए। (नौकर पर नज़र पड़ते ही) अरे, तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ़। गया नहीं मक्खन लाने?... सब चौपट कर दिया। अबे उधर से नहीं, अंदर के दरवाज़े से जा (नौकर अंदर आता है)...और तुम जल्दी करो प्रेमा। उमा को समझा देना थोड़ा-सा गा देगी। (प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ़ आती है। उसकी धोती ज़मीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)
प्रेमा	:	उँह। यह बाजा वह नीचे ही रख गया है, कम्बख्त।

SCERT TELANGANA

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ...जल्दी।
(प्रेमा जाती है, बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। आइए, आइए...हँ-हँ-हँ।
(बाबू गोपाल प्रसाद और उसके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक चतुराई टपकती है। आवाज़ से मालूम होता है कि काफ़ी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज़ पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ-हँ इधर तशरीफ़ लाइए इधर। (बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं मगर बेंत गिर पड़ता है।)

रामस्वरूप : यह बेंत..! लाइए मुझे दीजिए। (कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।)
हँ-हँ-हँ। मकान ढूँढ़ने में तकलीफ़ तो नही हुई?

गो. प्रसाद : (खँखार कर) नहीं। ताँगे वाला जानता था। ..और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ़ तो दी..

गो. प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके- हँ-हँ-सेवक ही हैं-हँ-हँ। (थोड़ी देर बाद लड़के की ओर मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालिज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक-एण्ड' में चला आया था।

रामस्वरूप : आपके कोर्स खत्म होने में तो अब सालभर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल दो साल?

शंकर : हँ-हँ-हँ!...जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ ...

गो. प्रसाद : बात यह है कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों की इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी-की-वैसी ही भूख!

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस ज़माने में पैसे की दो आती थीं।

गो. प्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी बालाई आती थी। और अकेले दो आने की हज़म करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं स्कूल

SCERT TELANGANA

में। तब न कोई वॉली-बॉल जानता था, न टेनिस न बैडमिंटन। बस कभी हॉकी या क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमज़ोर है।

(शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ, उस ज़माने की बात ही दूसरी थी..हँ-हँ!

गो.प्रसाद : (जोशीली आवाज़ में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस ज़माने का मैट्रिक भी वह अंग्रेज़ी लिखता था, फ़र्राटे की, कि आजकल के एम. ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही ।

गो. प्रसाद : माफ़ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस ज़माने की जब याद आती है, अपने को ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!..जी हाँ वह तो रंगीन ज़माना था, रंगीन ज़माना। हँ-हँ-हँ! (शंकर भी हीं-हीं करता है।)

गो. प्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा, तो साहब,'बिज़नेस' की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिज़नेस? बिज..(समझकर) ओह...अच्छा,अच्छा। लेकिन ज़रा नाश्ता तो कर लीजिए।

गो.प्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ़ किस बात का? हँ-हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ-हँ!...माफ़ कीजिएगा ज़रा। अभी हाज़िर हुआ। (अंदर जाते हैं)

गो. प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में) आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर : जी...

(कुछ खँखारकर इधर-उधर देखता है।)

गो. प्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'...

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय का ट्रे लिए हुए। मेज़ पर रख देते हैं)

SCERT TELANGANA

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी ?

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और ज़रा चीनी ज़्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फ़ैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफ़ी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो ज़ायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं। (प्याला पकड़ाते हैं।)

शंकर : (खँखारकर) सुना है सरकार अब ज़्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गो. प्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं) मज़ाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए, सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : (ज़ोर से हँसते हुए) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के ज़माने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ़ बढ़ाते हैं) लीजिए!

गो. प्रसाद : (समोसे उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ़ मुखातिब होकर) आपका क्या खयाल है शंकर बाबू?

शंकर : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गो. प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत ज़रूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राज़ी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गो. प्रसाद : देखना क्या। जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ-हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ-हँ!

गो. प्रसाद : और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा।

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस,

SCERT TELANGANA

खुद-ब-खुद मिला समझिए।

गो. प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिलकुल ठीक (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या ?

गो.प्रसाद : यह पढ़ाई-लिखाई के बारे में!...जी हाँ, साफ़ बात है साहब, हमें ज़्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस हद से हद मैट्रिक पास होनी चाहिए...क्यों शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गो.प्रसाद : और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं, कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है, तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुअट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेज़ी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं।...हँ...हँ...हँ।
(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं)

गो. प्रसाद : हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ़ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीज़ों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय लीजिए।

शंकर : धन्यवाद। पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) चाय लीजिए। आप?

गो. प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं, चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन..

गो. प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

रामस्वरूप : हँ...हँ (मेज़ को एक तरफ़ सरका देते हैं। फिर अंदर से दरवाज़े की तरफ़ मुँह कर ज़रा ज़ोर से) अरे, ज़रा पान भिजवा देना...! ...सिगरेट मँगवाऊँ?

गो. प्रसाद : जी नहीं!
(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू

SCERT TELANGANA

गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखे छिपाकर उसे ताक रहे हैं।)

रामस्वरूप : ...हँ...हँ...यही,...हँ...हँ, आपकी लड़की है। लाओ बेटी पान मुझे दो। (उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है। और नाक पर रखा हुआ सोने की रिम वाला चश्मा दिखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)

(गोपाल प्रसाद और शंकर-एक साथ) चश्मा!

रामस्वरूप : (ज़रा सकपकाकर) जी, वह तो...वह...पिछले महीनें में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गो. प्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज़ किया न।

गो. प्रसाद : हूँ। (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी।

(उमा बैठती है।)

गो.प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी नहीं। चेहरे पर भी छवि है।...हाँ कुछ गाना-बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी, और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ। (उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गानी शुरू कर देती है। स्वर में ज़ाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा।

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफ़ी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा! (उमा बैठती है।)

गो.प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेटिंग-वेटिंग भी..

उमा : (चुप)

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तसवीर टँगी हुंई है, कुत्ते वाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ! यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के ज़िम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीज़ें भी। हँ...हँ...हँ।

SCERT TELANGANA

गो. प्रसाद : ठीक।...लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-विनाम भी जीते हैं?
(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं। लेकिन उमा चुप है उसी तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दो, उमा। (गोपाल प्रसाद से) हँ-हँ, ज़रा शरमाती है, इनाम तो इसने...

गो.प्रसाद : (ज़रा रूखी आवाज़ में) ज़रा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा : (हलकी लेकिन मज़बूत आवाज़ में) क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज़ बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ़ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना..

रामस्वरूप : (चौंककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबूजी!...ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे पूछिए कि क्या लड़कियों का दिल नहीं होता? क्या उनको चोट नहीं लगती? क्या बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर...?

गो.प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज़्ज़त उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज़ आवाज़ में) जी हाँ, और हमारी बेइज़्ज़ती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और ज़रा अपने इन साहबज़ादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गए थे!

शंकर : बाबू जी, चलिए।

गो.प्रसाद : लड़कियों के होस्टल में?...क्या तुम कालेज में पढ़ी हो? (रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, कालेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँक कर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज़्ज़त, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो.प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ़ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए...मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ (बेंत ढूँढ़कर उठाते हैं।) बी.ए. पास? उफ़्फ़ोह! गज़ब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ बेटे, चलो... (दरवाज़े की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, ज़रूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-यानी बैकबोन, बैकबोन! (बाबू गोपाल

SCERT TELANGANA

प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना)

प्रेमा : उमा, उमा...रो रही है!

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी, मक्खन...

(सब रतन की तरफ़ देखते हैं और परदा गिरता है।)

प्रश्न-

1. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर ''एक हमारा ज़माना था...'' कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते है। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?
2. रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उज़ागर करता है।
3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?
4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिज़नेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखें।
5. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की-समाज को इनमें से कैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है? कारण बताइए।
6. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पस्ट कीजिए।
7. इस एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-III

9. ग्राम श्री

रचनाकार

सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में सन् 1900 में हुआ। उनकी शिक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई। आज़ादी के आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने कालेज छोड़ दिया। छायावादी कविता के प्रमुख स्तंभ रहे सुमित्रानंदन पंत का काव्य-क्षितिज 1916 से 1977 तक फैला है। सन् 1977 में उनका देहावसान हो गया।

वे अपनी जीवन दृष्टि के विभिन्न चरणों में छायावाद, प्रगतिवाद एवं अरविंद दर्शन से प्रभावित हुए। वीणा, ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, पल्लव, युगांत, स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा आदि उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पंत की कविता में प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों की पहचान है। उन्होंने आधुनिक हिंदी कविता को एक नवीन अभिव्यंजना पद्धति एवं काव्यभाषा से समृद्ध किया। भावों की अभिव्यक्ति के लिए सटीक शब्दों के चयन के कारण उन्हें शब्द शिल्पी कवि कहा जाता है।

प्रस्तावना प्रसंग

ओ शहर की भीड़ अब मुझे क्षमा दो,
लौटकर मैं गाँव जाना चाहता हूँ।
गाँव की वह धूल जो भूली नहीं है,
फिर उसे माथे लगाना चाहता हूँ।
– राम अवतार त्यागी

प्रश्न

1. आजकल शहर की ज़िंदगी कैसी है?
2. गाँव और शहर के रहन-सहन में क्या अंतर है?
3. कवि गाँव की धूल माथे पर क्यों लगाना चाहता है?

भूमिका

ग्राम श्री कविता में पंत ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का मनोहारी वर्णन किया है। खेतों में दूर तक फैली लहलहाती फसलें, फल-फूलों से लदी पेड़ों की डालियाँ और गंगा की सुंदर रेती कवि को रोमांचित करती है। उसी रोमांच की अभिव्यक्ति है यह कविता।

SCERT TELANGANA

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली!
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली!

रंग रंग के फूलों में रिलमिल
हँस रही सखियाँ मटर खड़ी
मखमली पेटियों सी लटकीं
छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी!
फिरती है रंग रंग की तितली
रंग रंग के फूलों पर सुंदर,
फूले फिरते हैं फूल स्वयं
उड़ उड़ वृंतों से वृंतों पर!

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली!

SCERT TELANGANA

महके कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली,
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम,
आलू, गोभी, बैंगन, मूली!

पीले मीठे अमरूदों में
अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ी,
पक गए सुनहले मधुर बेर,
अँवली से तरु की डाल जड़ी!
लहलह पालक, महमह धनिया,
लौकी औ' सेम फलीं, फैलीं
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिरचों की बड़ी हरी थैली!

बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती
सुंदर लगती सरपत छाई
तट पर तरबूज़ों की खेती
अँगुली की कंघी से बगुले
कलँगी सँवारते हैं कोई,

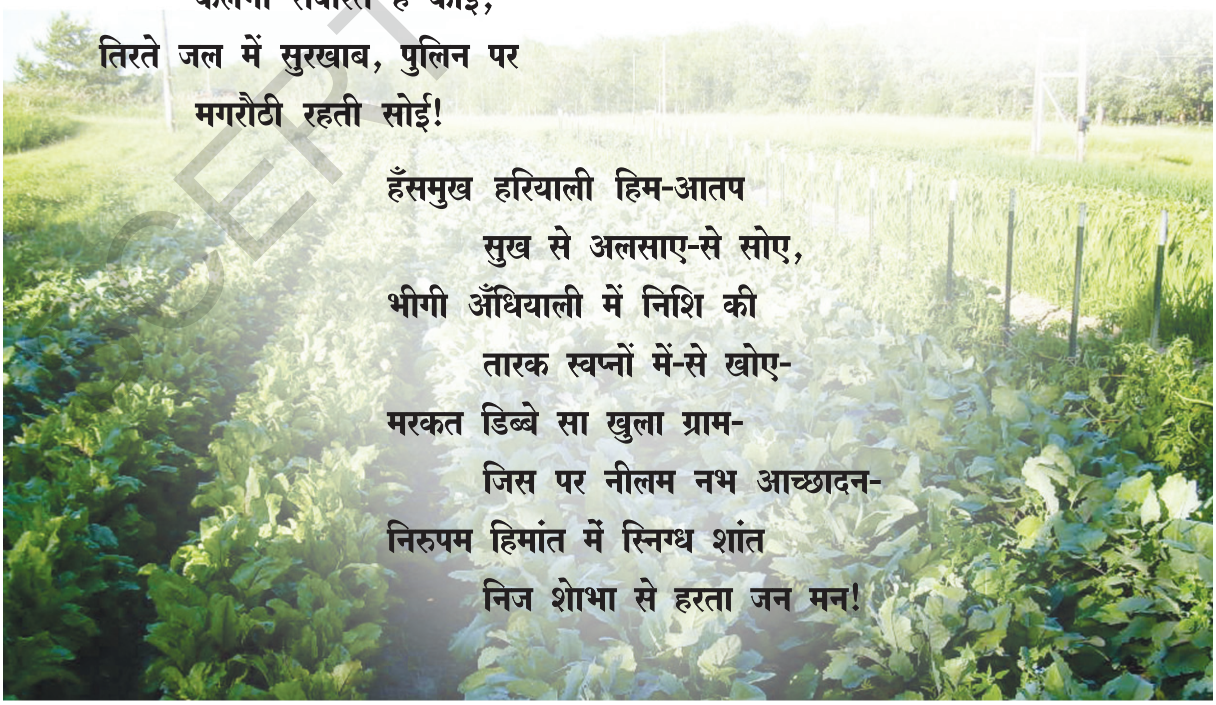

तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर
मगरौठी रहती सोई!

हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोए-
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम-
जिस पर नीलम नभ आच्छादन-
निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन मन!

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा के बारे में बताइए।
2. शहरों के पर्यावरण में प्रदूषण की मात्रा काफ़ी बढ़ चुकी है। गाँव और शहर के पर्यावरण की तुलना करते हुए चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. हरियाली की कौन–कौन सी विशेषताएँ बतायी गयी हैं?
2. गाँव की कौनसी शोभा जन–मन को हर रही हैं?
3. निम्नलिखित भाव प्रकट करनेवाली कविता की पंक्तियाँ लिखिए।
   क. हरियाली की विशेषता
   ख. फलों–तरकारियों के खेतों का वर्णन
4. वसंत ऋतु में प्रकृति के बदलाव को दर्शानेवाली पंक्तियाँ रेखांकित कीजिए।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. कवि ने गाँव को 'जन-मन को हरने वाला' क्यों कहा है?
2. गाँव की तुलना मरकत डिब्बे से क्यों की गई?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।
   क. हिल हरित रुधिर है रहा झलक
   ख. बालू के साँपों से अंकित
      गंगा की सतरंगी रेती
   ग. हँसमुख हरियाली हिम आतप
      सुख से अलसाए सोए
4. कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है? उदाहरण सहित बताइए।
5. अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखायी देते हैं?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

कविता पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

सोने का संसार।
उषा छिप गई नभस्थली में, देकर यह उपहार।

SCERT TELANGANA

लघु-लघु कलियाँ भी प्रभात में, होती हैं साकार।
प्रात: समीरण कर देता है, नवजीवन संचार।
लोल-लोल लहलही लताएँ, स्वर्णमयी सुकुमार।
झुकी जा रही हैं ले तन में, नव यौवन का भार।
भ्रमर छूटकर पंकज दल से, करने लगे विहार।

-गोपाल शरण सिंह

1. **हमें प्रात: समय सोने का संसार कौन देता है?**

   क. रात ख. संध्या ग. उषा घ. सूर्य

2. **'प्रात: समीरण' क्या करता है?**

   क. नये जीवन का संचार करता है। ख. ज्ञानोदय करता है।
   ग. सुख देता है। घ. रात का स्मरण कराता है।

3. **लताएँ क्यों झुक जाती हैं?**

   क. नवयौवन के भार से ख. हवाओं के चलने से
   ग. विनम्रता से घ. फल-फूलों के भार से

4. **उषाकाल में भ्रमर क्या कर रहा है?**

   क. नवजीवन संचार ख. मंजुल वंदनवार
   ग. विहार घ. गीतों का गायन

अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आपको कौन सी ऋतु पसंद है? क्यों?
2. इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है, वह भारत के किस क्षेत्र से संबंधित हो सकता है? अपने उत्तर का कारण बताइए।
3. कुछ लोग खुले प्राकृतिक वातावरण में काम करते हैं, तो कुछ वातानुकूलित कार्यालयों में। आप अपने भावी जीवन में कहाँ काम करना पसंद करेंगे? कारण सहित बताइए।
4. क्या नदियों, झीलों, फूलों आदि प्राकृतिक तत्वों को देखकर कभी आपका मन उल्लसित हुआ है? क्या सबको आप जैसी ही अनुभूति होती होगी? अपने विचार लिखिए।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

SCERT TELANGANA

2. पंतजी प्रकृति वर्णन के बेजोड़ कवि माने जाते हैं। कविता के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

आप जहाँ रहते हैं उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौंदर्य का कविता या गद्य में वर्णन कीजिए।

❖ प्रशंसा

भारत गाँवों का देश है। जनगणना-2011 के अनुसार लगभग सत्तर प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। गाँव का वातावरण स्वच्छ एवं सुंदर होता है। फिर भी आज लोग गाँव छोड़कर शहर में बसना चाहते हैं। जो देश के लिए समस्या बनती जा रही है। इसकी रोकथाम के लिए अपने विचार व्यक्त कीजिए।

भाषा की बात

1. पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।

   यह + के = इसके

   यह + की = इसकी

2. इस कविता पाठ में **हिमांत** शब्द मूलतः हिम + अंत से मिलकर बना है। इसी प्रकार निर्मल निः + मल से बना है। दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास आने के कारण इनके मेल से जो विकार होता है उसे संधि कहते हैं। संधि से बने शब्दों के पाँच उदाहरण दीजिए।

परियोजना कार्य

ग्रामीण उत्थान के लिए कार्य करनेवाले किसी एक समाजसेवी के बारे में जानकारी प्राप्त करके लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-III

10. साँवले सपनों की याद

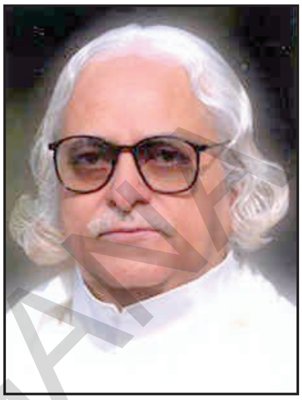

रचनाकार

जाबिर हुसैन का जन्म सन् 1945 में गाँव नौनहीं राजगिर, जिला नालंदा, बिहार में हुआ। अंग्रेज़ी भाषा एवं साहित्य के प्राध्यापक रहे। सक्रिय राजनीति में भाग लेते हुए 1977 में मुंगेर बिहार विधानसभा से सदस्य निर्वाचित हुए और मंत्री बने। वे बिहार विधान परिषद के सभापति भी रह चुके हैं।

जाबिर हुसैन हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी-तीनों भाषाओं में समान अधिकार के साथ लेखन करते रहे हैं। उनकी हिंदी रचनाओं में **जो आगे हैं, डोला बीबी का मज़ार, अतीत का चेहरा, लोगां, एक नदी रेत भरी** प्रमुख हैं।

अपने लंबे राजनैतिक-सामाजिक जीवन के अनुभवों में उपस्थित आम आदमी के संघर्षों को उन्होंने अपने साहित्य में प्रकट किया है। संघर्षरत आम आदमी और विशिष्ट व्यक्तित्वों पर लिखी गयी उनकी डायरियाँ चर्चित-प्रशंसित हुई हैं। जाबिर हुसैन ने डायरी विधा में एक अभिनव प्रयोग किया है जो अपनी प्रस्तुति, शैली और शिल्प में नवीन है।

प्रस्तावना प्रसंग

पीपल की ऊँची डाल पर
बैठी चिड़िया गाती है।
तुम्हें ज्ञात अपनी बोली में
क्या संदेश सुनाती है?
उसके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं परवाह नहीं।
जग का सारा माल हड़प कर
जीने की भी चाह नहीं।

-आरती प्रसाद

प्रश्न

1. कल्पना कीजिए कि पशु-पक्षी इन्सानों के बारे में क्या सोचते होंगे?
2. पक्षियों को लोभ क्यों नहीं होता?
3. हम प्रकृति का आनंद किस प्रकार उठा सकते हैं?

भूमिका

प्रस्तुत पाठ जून 1987 में प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सालिम अली की मृत्यु के तुरंत बाद डायरी शैली में लिखा गया संस्मरण है। सालिम अली की मृत्यु से उत्पन्न दुख और अवसाद को लेखक ने **साँवले सपनों की याद** के रूप में व्यक्त किया है। सालिम अली का स्मरण करते हुए लेखक ने उनका व्यक्ति-चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ भाषा की रवानी और अभिव्यक्ति की शैली दिल को छूती है ।

SCERT TELANGANA

सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ अग्रसर है। कोई रोक-टोक सके, कहाँ संभव है।

इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर, सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफ़र का बोझ उठाए। लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की ज़िंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो ज़िंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वो प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज़ का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता (फव्वारा) फूटता महसूस कर सकता है?

एहसास की ऐसी ही एक ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर जन्मे मिथक का नाम है, सालिम अली।

पता नहीं, इतिहास में कब कृष्ण ने वृंदावन में रासलीला रची थी और शोख गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाया था। कब माखन भरे भाँड़े फोड़े थे और दूध-छाली से अपने मुँह भरे थे। कब वाटिका में, छोटे-छोटे किंतु घने पेड़ों की छाँह में विश्राम किया था। कब दिल की धड़कनों को एकदम से तेज़ करने वाले अंदाज़ में बंसी बजाई थी। और, पता नहीं, कब वृंदावन की पूरी दुनिया संगीतमय हो गई थी। पता नहीं, यह सब कब हुआ था। लेकिन कोई आज भी वृंदावन जाए तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटना-क्रम की याद दिला देगा। हर सुबह, सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर सब किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब

SCERT TELANGANA

वाटिका का माली सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा। वृंदावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या?

मिथकों की दुनिया में इस सवाल का जवाब तलाश करने से पहले एक नज़र कमज़ोर काया वाले उस व्यक्ति पर डाली जाए जिसे हम सालिम अली के नाम से जानते हैं। उम्र को शती तक पहुँचने में थोड़े ही दिन तो बच रहे थे। संभव है, लंबी यात्राओं की थकान ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया हो, और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी उनकी मौत का कारण बनी हो। लेकिन अंतिम समय तक मौत उनकी आँखों से वह रोशनी छीनने में सफल नहीं हुई जो पक्षियों की तलाश और उनकी हिफ़ाज़त के प्रति समर्पित थी। सालिम अली की आँखों पर चढ़ी दूरबीन उनकी मौत के बाद ही तो उतरी थी।

उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली ज़मीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नज़रों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने के बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफ़ी मदद पहुँचाई थी। तहमीना स्कूल के दिनों मे उनकी सहपाठी रही थीं।

अपने लंबे रोमांचकारी जीवन में ढेर सारे अनुभवों के मालिक सालिम अली एक दिन केरल की 'साइलेंट वैली' को रेगिस्तानी हवा के झोंकों से बचाने का अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले थे। वे प्रधानमंत्री थे। चौधरी साहब गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का असर जानने वाले नेता थे। पर्यावरण के संभावित खतरों का जो चित्र सालिम अली ने उनके सामने रखा, उसने उनकी आँखें नम कर दी थीं।

आज सालिम अली नहीं हैं। चौधरी साहब भी नहीं हैं। कौन बचा है, जो अब सोंधी माटी पर उगी फसलों के बीच एक नए भारत की नींव रखने का संकल्प लेगा? कौन बचा है, जो अब हिमालय और लद्दाख की बरफ़ीली ज़मीनों पर जीने वाले पक्षियों की वकालत करेगा?

SCERT TELANGANA

सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम रखा था 'फाल ऑफ ए स्पैरो' (Fall of a Sparrow) मुझे याद आ गया, डी एच लॉरेंस की मौत के बाद लोगों ने उनकी पत्नी फ्रीडा लॉरेंस से अनुरोध किया कि वह अपने पति के बारे में कुछ लिखें। फ्रीडा चाहती तो ढेर सारी बातें लॉरेंस के बारे में लिख सकती थीं। लेकिन उसने कहा- मेरे लिए लॉरेंस के बारे में कुछ लिखना असंभव-सा है। मुझे महसूस होता है, मेरी छत पर बैठने वाली गोरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। मुझसे भी ज्यादा जानती है। वो सचमुच इतना खुला-खुला और सादा-दिल आदमी था। मुमकिन है, लॉरेंस मेरी रगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो। लेकिन मेरे लिए कितना कठिन है, उसके बारे में अपने अनुभवों को शब्दों का जामा पहनाना। मुझे यकीन है, मेरी छत पर बैठी गोरैया उसके बारे में, और हम दोनों ही के बारे में, मुझसे ज़्यादा जानकारी रखती है।

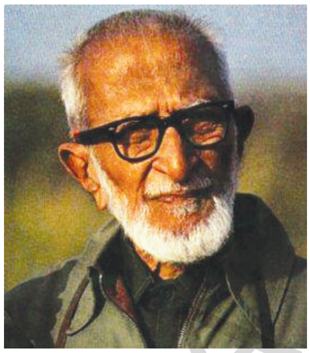

जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे। बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गोरैया सारी ज़िंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही। ज़िंदगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गये थे।

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वो आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएँगे।

जब तक वो नहीं लौटते क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए!

मेरी आँखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. कोई कुत्ता, बिल्ली अथवा खरगोश तो कोई तोता, कबूतर अथवा मुर्गी पालना पसंद करते हैं? आपको कौनसा पशु या पक्षी पालना पसंद है? और क्यों?
2. पक्षी कीड़े-मकोड़ों को खा जाते हैं, जिससे हमारी फसलें सुरक्षित रहती हैं। इसी प्रकार चर्चा कीजिए कि पक्षी पर्यावरण के संरक्षण में किस प्रकार सहायक हैं?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. किस घटना ने सलीम अली के जीवन की दिशा बदल दी और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?
2. पाठ पढ़कर उन वाक्यों को रेखांकित कीजिए जिन्हें पर्यावरण के संभावित खतरों को चित्रित करने के लिए सलीम अली ने तत्कालीन प्रधानमंत्री के सामने प्रस्तुत किया।
3. पाठ पढ़िए। सही विकल्प चुनिए।

   i. सलीम अली कौन से हुजूम में चल रहे हैं?

   क. यात्रियों का हुजूम   ख. विद्यार्थियों का हुजूम

   ग. साँवले सपनों का हुजूम   घ. सुनहरे पक्षियों का हुजूम

   ii. भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा। इस पंक्ति में कोई कौन है?

   क. सलीम अली   ख. लेखक

   ग. प्रधानमंत्री   घ. कृष्ण

   iii. सलीम अली को किससे प्यार था?

   क. प्रकृति   ख. जीवन

   ग. प्राणी   घ. वनस्पति

   iv. सलीम अली के लिए प्रकृति में हर तरफ कैसी दुनिया पसरी थी?

   क. वैभवपूर्ण दुनिया   ख. सुनहरी दुनिया

   ग. सौंदर्यपूर्ण दुनिया   घ. हँसती-खेलती दुनिया

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. लेखक ने सलीम अली की मृत्यु के बाद लिखे प्रस्तुत संस्मरण का शीर्षक 'साँवले सपनों की याद' क्यों रखा होगा?

SCERT TELANGANA

2. सलीम अली ने यह क्यों कहा कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं?

3. आशय स्पष्ट कीजिए।

क. वो लारेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

ख. कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दुबारा कैसे गा सकेगा!

ग. सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने के बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे।

4. सलीम अली के निधन से पूर्व की उनकी परिस्थिति पर लेखक ने किस प्रकार प्रकाश डाला?

5. "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लारेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है।" लारेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन (आर्केस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठायी, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंच वाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गये हैं और किसी के इंद्रधनुषी पंख बिखर गये हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अद्धर्मृत लघुगीतों में न अब संगीत है न सौंदर्य। परंतु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

पक्षी जगत में ही नहीं पशु जगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि है। परंतु इसका भी गतिमय सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा और विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और इतना आकर्षण क्यों?

– महादेवी वर्मा (सोना हिरणी)

1. शिकारी मनुष्य अपनी किस सफलता पर नाच उठता है?
2. लेखिका ने हिरण के आँखों की तुलना किससे की है?
3. लेखिका ने जीवन का श्रेष्ठतम रूप किसे माना है?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कुछ लोग पक्षियों का शिकार करके अपने घरों की शोभा बढ़ाते हैं। इस संदर्भ में आप अपने विचार प्रकट करें।
2. पक्षियों के निरीक्षक अथवा बर्ड वॉचर की गतिविधियों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. प्रस्तुत पाठ सलीम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइए।
2. इस पाठ के लेखक ने सलीम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. सलीम अली की अंतिम यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

टी.वी. के विभिन्न चैनलों जैसे– एनिमल किंगडम, डिस्कवरी चैनल, एनिमल प्लानेट आदि पर दिखाये जानेवाले कार्यक्रम देखकर समाचार पत्र में छापने के लिए एक लेख तैयार कीजिए।

❖ प्रशंसा

लेखक ने मानव की एक भूल पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वह प्रकृति की नज़र से नहीं आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। मनुष्य प्रकृति को अपनी उपयोगिता की दृष्टि से देखेगा तो उसमें बिगाड़ आना स्वाभाविक है। इसमें सुधार के सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

रेखांकित शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार <u>**साँवले सपनों**</u> का एक हुजूम मौत की <u>**खामोश वादी**</u> की तरफ अग्रसर है।
2. <u>**भीड़–भाड़ की ज़िन्दगी**</u> और <u>**तनाव के माहौल**</u> से सलीम अली का ये <u>**आखिरी पलायन**</u> है।
3. दूर <u>**क्षितिज तक फैली**</u> ज़मीन और झुके आसमान को छूनेवाली उनकी नज़रों में कुछ–कुछ वैसा ही जादू था जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है।

परियोजना कार्य

अपने घर या विद्यालय के नज़दीक आपको अक्सर किसी पक्षी को देखने का मौका मिलता होगा। उस पक्षी का नाम, भोजन, खाने का तरीका, रहने की जगह आदि के आधार पर एक चित्रात्मक विवरण तैयार करें।

SCERT TELANGANA

इकाई-III

11. एक कुत्ता और एक मैना

रचनाकार

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में गाँव 'आरत दूबे का छपरा', बलिया (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा शांतिनिकेतन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। सन् 1979 में उनका देहांत हो गया।

साहित्य का इतिहास, आलोचना, शोध और उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी जी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। **अशोक के फूल, कुटज, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, हिंदी साहित्य की भूमिका, कबीर** उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उन्हें **साहित्य अकादमी पुरस्कार** एवं **पद्मभूषण अलंकरण** से सम्मानित किया गया।

दूविवेदी जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में उच्च कोटि की रचनाएँ कीं। उनके ललित निबंध विशेष उल्लेखनीय हैं। जटिल, गंभीर और दर्शन प्रधान बातों को भी सरल, सुबोध एवं मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करना दूविवेदी जी के लेखन की विशेषता है। उनका रचना-कर्म एक सहृदय विद्वान का रचना-कर्म है जिसमें शास्त्र के ज्ञान, परंपरा के बोध और लोकजीवन के अनुभव का सृजनात्मक सामंजस्य है।

प्रस्तावना प्रसंग

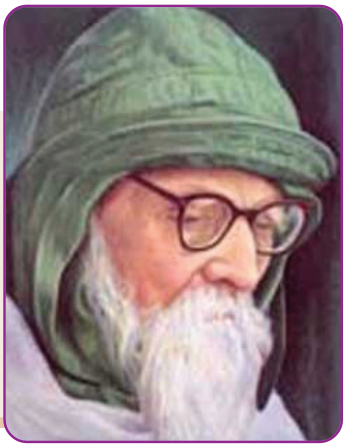

एक बार विनोबा जी देहातों में भ्रमण कर रहे थे। तभी एक ग्रामीण ने दूसरे से कहा– "अरे! तू जाणता है यो कौण है?" दूसरे ने कहा– "ना रे! मैं तो ना जाणता। होगा कोई साधु।" पहले ने कहा– "अरे वाह! तू ना जाणता? यो गाँधी महात्मा हैं।" यह सुनकर दूसरा ग्रामीण बहुत हँसा और कहा– "तू भी खूब है, अरे गाँधी महात्मा तो मर गये।" इस पर पहले ने बड़े विश्वास के साथ कहा– "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"

प्रश्न

1. आप के विचार में महात्मा लोगों की क्या विशेषताएँ होती हैं?
2. "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"–ग्रामीण ने ऐसा क्यों कहा?
3. आप ऐसे कौन-कौन से काम करना चाहेंगे जिससे आप का नाम सदा याद किया जाए?

भूमिका

'एक कुत्ता और एक मैना' निबंध में न केवल पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय प्रेम प्रदर्शित है, बल्कि पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम, भक्ति, विनोद और करुणा जैसे मानवीय भावों का विस्तार भी है। इसमें रवींद्रनाथ की कविताओं और उनसे जुड़ी स्मृतियों के ज़रिए गुरुदेव की संवेदनशीलता, आंतरिक विराटता और सहजता के चित्र तो उकेरे ही गए हैं, पशु-पक्षियों के संवेदनशील जीवन का भी बहुत सूक्ष्म निरीक्षण है। यह निबंध सभी जीवों को प्रेम की प्रेरणा देता है।

SCERT TELANGANA

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, तै पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्ध और क्षीणवपु रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गये थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी। 'दर्शन' को मैं जो यहाँ विशेष रूप से दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ, उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था तो प्रायः वे यह कहकर मुस्कुरा देते थे कि 'दर्शनार्थी हैं क्या?' शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी बाँग्ला में बात करता था, जो वस्तुतः हिंदी-मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था तो कहा करता था, 'एक भद्र लोक आपनार दर्शनेर जन्य ऐसे छेन।' यह बात हिंदी में जितनी प्रचलित है, उतनी बाँग्ला में नहीं। इसलिए गुरुदेव जरा मुसकरा देते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी यह भाषा बहुत अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता था तो वे हँसकर पूछते थे 'दर्शनार्थी लेकर आए हो क्या? यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ होते थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवा नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे। अस्तु मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा। कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव वहाँ बडे आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गयछ तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुसकराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो गये। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, ''देखा तुमने, यह आ गये। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।''

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने

उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह-दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी- ''प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।'' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह आँख मूँदकर अपरिसीम आनंद, 'वह मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी-सी घटना थी, आज वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गई है। एक आश्चर्य की बात और इस प्रसंग में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते (कोलकाता) से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के दूवार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर चुपचाप बैठा भी रहा।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह

SCERT TELANGANA

अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार कहा, ''अच्छा साहब, आश्रम के कौए क्या हो गयछ? उनकी आवाज़ सुनायी ही नहीं देती?'' न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह खबर थी और न मुझे ही। बाद में मैंने लक्ष्य किया कि सचमुच कई दिनों से आश्रम में कौए नहीं दिख रहे हैं। मैंने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि ये भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं। एक लेखक ने कौओं की आधुनिक साहित्यिकों से उपमा दी है, क्योंकि इनका मोटो है 'मिसचिफ् फार मिसचिफ् सेक' (शरारत के लिए ही शरारत)। तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के उद्देश्य से ही था? प्रायः एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिये।

एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, ''देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है। ''गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण-भाव एकदम नहीं दिखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है। तीन-चार वर्ष से मैं एक नए मकान में रहने लगा हूँ। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों ओर एक-एक सूराख छोड़ रखा है। यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा। सो, एक मैना-दंपत्ति नियमित भाव से प्रतिवर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं। भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते। हैरान होकर हम सूराखों में ईंटें भर देते हैं, परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं। पति-पत्नी जब कोई एक तिनका लेकर सूराख में रखते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आयीं तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर ज़रा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही परों से साफ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गान शुरू कर दिया। हम लोगों की तो उन्हें परवा ही नहीं रहती। अचानक इसी समय अगर पति देवता भी कोई कागज़ का या गोबर का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब क्या कहना! दोनों के नाच-गान और आनंद-नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी ज़रा हम लोगों की ओर मुखातिब होकर लापरवाही-भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानो मुसकराकर हमारी ओर देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता; पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं;

पत्नी- यह लोग यहाँ कैसे आ गये जी?

SCERT TELANGANA

पति- उँह बेचारे आ गयछ हैं, तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!

पत्नी- लेकिन फिर भी इनको इतना तो खयाल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति- आदमी जो हैं, इतनी अकल कहाँ?

पत्नी- जाने भी दो।

पति- और क्या!

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था, जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछड़े बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है। हाय, क्यों इसकी ऐसी दशा है! शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार हैः

''उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है? पहले दिन देखा था सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा जैसे एक पैर से लँगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज़ सवेरे देखता हूँ- संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ़ जाती है बरामदे में। नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया है? कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं। उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखतीं।'' इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत साफ होकर सामने आ जाती है। कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा कि किस प्रकार कवि की आँखें उस बिचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गईं, सोचता हूँ तो हैरान हो रहता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले जाया करती है उस डाल के कोने में, जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, जब हवा में बाँस के पत्ते झरझराते रहते हैं, पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है नींद तोड़ने वाला संध्यातारा! कितना करुण है उसका गायब हो जाना!

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. लोग अनेक प्रकार के जानवर घर में पालते हैं। कुछ शौक से तो कुछ उपयोग से। इनका ठीक प्रकार से रख-रखाव न होने के कारण कई प्रकार की बीमारियों के फैलने की भी आशंका होती है। चर्चा कीजिए और बताइए कि जानवरों को पालते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
2. पाठ में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता दर्शायी गई है। सामान्यतः महान लोगों में प्रकृति के प्रति विशेष संवेदनशीलता पाई जाती है। अच्छा इंसान प्रकृति के सभी तत्वों के प्रति सद्भाव रखता है। इस बारे में अपने विचार बताइए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?
2. लेखक की बातें सुनकर गुरुदेव क्यों मुसकरा रहे थे?
3. कुत्ते की किस विशेषता पर गुरुदेव मुग्ध थे?
4. कौए के संबंध में लेखक की कौन-सी धारणा गलत निकली?
5. लेखक ने मैना को विधुर पति या आहत मैना क्यों माना?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।" पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

शांतिनिकेतन के कला-विद्यालय में श्रीमंत परिवार का एक शिक्षार्थी प्रविष्ट हुआ। उसे अपना कार्य अपने हाथों करने की आदत नहीं थी। कुछ ही दिनों में उसके कमरे में धूल

SCERT TELANGANA

जम गयी। दीवारों पर जाले लग गये। एक दिन वह भोजन करने के बाद लौटने पर यह देख कर दंग रह गया कि सभी वस्तुएँ सही जगहों पर रखी हैं, रंग का सामान और कूचियाँ सुव्यवस्थित हैं, समीप ही धूपबत्ती जल रही है। यह क्रम कई दिनों तक चालू रहा। एक दिन वह भोजन करके अपने कमरे में जरा जल्दी लौट आया। उसने देखा, कला-विभाग के आचार्य नंदलाल बसु उसका कमरा साफ कर रहे हैं। नंदलाल बाबू कहने लगे, ''तुम मेरे छात्र हो। तुम्हारे सब प्रकार के कल्याण का दायित्व मुझ पर है। तुम बचपन से स्वच्छता में पले हो, परंतु उसके लिए तुम्हें नौकरों के सहारे रहना पड़ा है। स्वाभाविक है कि मलिन स्थान पर तुम्हारा चित्त विकल रहता होगा और तुम वांछित कार्य नहीं कर पाते होगे। कला केवल रंग-रेखाओं की रचना मात्र नहीं है, उसके लिए तुम्हारे जीवन में सुरुचि की आवश्यकता है।

प्रश्न 1. विद्‌यार्थी अपने दैनिक कार्य सही समय पर क्यों नहीं कर पाता होगा?

2. आचार्य नंदलाल बसु ने छात्र का कमरा क्यों साफ किया?

3. इस गद्‌यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. पशु-पक्षियों के आवास अब मनुष्यों ने छीन लिए हैं। न तो जंगल पर्याप्त मात्रा में बचे हैं, न पेड़। इस कारण अनेक पशु-पक्षी लुप्त होते जा रहे हैं? इस संबंध में क्या प्रयास किये जाने चाहिए।
2. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की क्या विशेषताएँ थीं?
3. पाठ में आधुनिक साहित्यकारों की तुलना कौओं से करने का संदर्भ आया है। पाठ के आधार पर बताइए कि एक साहित्यकार में कौन-कौन से गुणों का होना अनिवार्य है?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. प्रकृति हमें क्या-क्या संदेश देती है?
2. महान बनने के लिए व्यक्ति में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

SCERT TELANGANA

❖ **सृजनात्मक कार्य**

जीव-जंतुओं से प्रेम करने का तात्पर्य प्रकृति के प्रति सजग होना भी है। आज आधुनिकता एवं रूढ़िवादिता दोनों ही प्रकृति के लिए खतरा बन गई हैं। इस संबंध में एक लेख लिखिए।

❖ **प्रशंसा**

पक्षियों को दाने डालना, गायों को रोटी खिलाना, कैद परिंदों को आज़ाद करना, जीव-जंतुओं की सेवा करना आदि पुण्य कार्य माना जाता है। आप बताइए कि पशु-पक्षियों का संरक्षण क्यों करना चाहिए?

भाषा की बात

1. -गुरुदेव ज़रा मुसकरा दिए।
   -मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ।
   ऊपर दिए गए वाक्यों में एक वाक्य में अकर्मक क्रिया है और दूसरे में सकर्मक। इस पाठ को ध्यान से पढ़कर सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य छाँटिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए।
   i. मीना कहानी सुनाती है।
   ii. अभिनव सो रहा है।
   iii. गाय घास खाती है।
   iv. मोहन ने भाई को गेंद दी।
   v. लड़कियाँ रोने लगीं।
3. नीचे पाठ में से युग्म शब्दों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जैसे-
   समय-असमय, अवस्था-अनवस्था
   इन शब्दों में 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाए गए हैं। पाठ में से कुछ शब्द चुनिए और 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

परियोजना कार्य

पशु-पक्षियों के बारे में लिखी कविताओं का संग्रह करें और चित्रों के साथ उन्हें प्रदर्शित करें।

SCERT TELANGANA

इकाई-III

12. उपभोक्तावाद की संस्कृति

रचनाकार

श्यामाचरण दुबे का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से मानव विज्ञान में पीएच.डी. की। वे भारत के अग्रणी समाज वैज्ञानिक रहें हैं। उनका देहांत सन् 1996 में हुआ।

मानव और संस्कृति, परंपरा और इतिहास बोध, संस्कृति तथा शिक्षा, समाज और भविष्य, भारतीय ग्राम, संक्रमण की पीड़ा, विकास का समाजशास्त्र, समय और संस्कृति हिंदी में उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। प्रो. दुबे ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया तथा अनेक संस्थानों में प्रमुख पदों पर रहे। जीवन, समाज और संस्कृति के ज्वलंत विषयों पर उनके विश्लेषण एवं स्थापनाएँ उल्लेखनीय हैं। भारत की जनजातियों और ग्रामीण समुदायों पर केंद्रित उनके लेखों ने बृहत समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। वे जटिल विचारों को तार्किक विश्लेषण के साथ सहज भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तावना प्रसंग

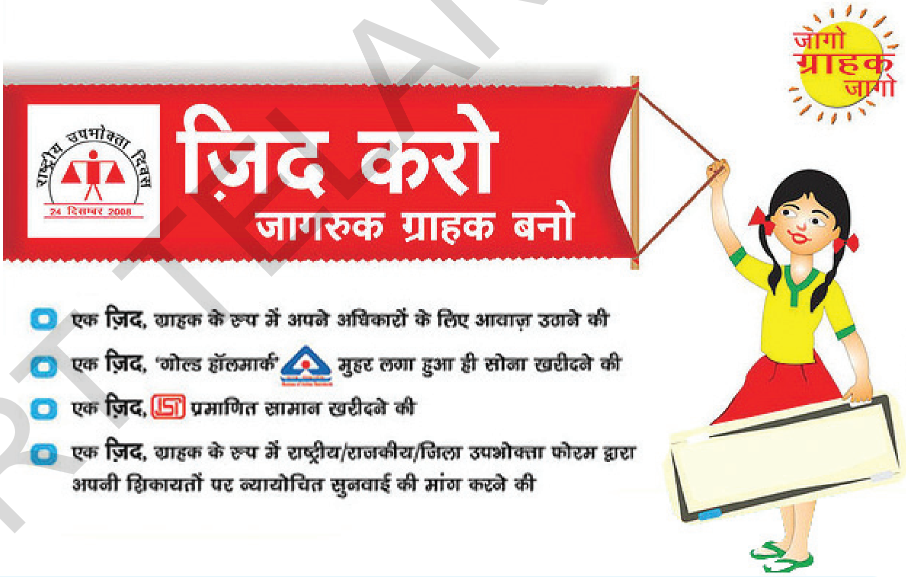

प्रश्न

1. इस विज्ञापन से हमें क्या संदेश मिलता है?
2. उत्पादों की गुणवत्ता को हम किन चिह्नों द्वारा पहचान सकते हैं?
3. अपने किसी एक पसंदीदा विज्ञापन के बारे में बताइए।

भूमिका

उपभोक्तावाद की संस्कृति निबंध बाजार की गिरफ़्त में आ रहे समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करता है। लेखक का मानना है कि हम विज्ञापन की चमक-दमक के कारण वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं, हमारी निगाह गुणवत्ता पर नहीं है। संपन्न और अभिजन वर्ग द्वारा प्रदर्शनपूर्ण जीवन शैली अपनाई जा रही है, जिसे सामान्य जन भी ललचाई निगाहों से देखते हैं। यह सभ्यता के विकास की चिंताजनक बात है, जिसे उपभोक्तावाद ने परोसा है। लेखक की यह बात महत्वपूर्ण है कि जैसे-जैसे यह दिखावे की संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति और विषमता भी बढ़ेगी।

SCERT TELANGANA

धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन-शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन-दर्शन-उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर ज़ोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है; आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गयी है। उपभोग-भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए हैं, पर आप भूल जाते हैं कि जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

विलासिता की सामग्रियों से बाजार भरा पड़ा है, जो आपको लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती हैं। दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को ही लीजिए। टूथ-पेस्ट चाहिए? यह दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, यह मुँह की दुर्गंध हटाता है। यह मसूड़ों को मज़बूत करता है और यह 'पूर्ण सुरक्षा' देता है। वह सब करके जो तीन-चार पेस्ट अलग-अलग करते हैं, किसी पेस्ट का 'मैजिक' फार्मूला है। कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है, कोई ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत तथा मान्य वनस्पति और खनिज तत्वों के मिश्रण से बना है। जो चाहे चुन लीजिए। यदि पेस्ट अच्छा है तो ब्रुश भी अच्छा होना चाहिए। आकार, रंग, बनावट, पहुँच और सफ़ाई की क्षमता में अलग-अलग, एक से बढ़कर एक। मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए माउथ वाश भी चाहिए। सूची और भी लंबी हो सकती है पर इतनी चीजों का ही बिल काफ़ी बड़ा हो जाएगा, क्योंकि आप शायद बहुविज्ञापित और कीमती ब्रांड खरीदना ही पसंद करें। सौंदर्य प्रसाधनों की भीड़ तो चमत्कृत कर देने वाली है- हर माह उसमें नए-नए उत्पाद जुड़ते जाते हैं। साबुन ही देखिए। एक में हलकी खुशबू है, दूसरे में तेज़। एक दिन भर आपके शरीर को तरोताज़ा रखता है, दूसरा पसीना रोकता है, तीसरा जर्म्स से आपकी रक्षा करता है। यह लीजिए शुद्ध गंगाजल में बना साबुन। चमड़ी को नर्म रखने के लिए यह लीजिए सिने स्टार्स के सौंदर्य का रहस्य, उनका मनपसंद साबुन। सच्चाई का अर्थ समझना चाहते हैं, यह लीजिए शरीर को पवित्र रखना चाहते हैं। यह लीजिए- महँगी हैं, पर आपके सौंदर्य में निखार ला देगी। सभ्रांत महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस-तीस हज़ार की सौंदर्य सामग्री होनी तो मामूली बात है। पेरिस से परफ़्यूम मँगाइए, इतना ही और खर्च हो जाएगा। ये प्रतिष्ठा-चिह्न हैं, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं। पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं हैं पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ़्टर शेव और कोलोन बाद में आए। अब तो इस सूची में दर्जन-दो दर्जन चीज़ें और जुड़ गई हैं।

छोड़िए इस सामग्री को। वस्तु और परिधान की दुनिया में आइए। जगह-जगह बुटीक खुल गए हैं, नए-नए डिज़ाइन के परिधान बाजार में आ गए हैं। ये ट्रेंडी हैं और महँगे भी। पिछले वर्ष के फैशन इस वर्ष? शर्म की बात है। घड़ी पहले समय दिखाती थी। उससे यदि यही काम लेना हो तो चार-पाँच सौ में मिल जाएगी। हैसियत जताने के लिए आप पचास-साठ हज़ार से लाख-डेढ़ लाख की घड़ी भी ले सकते हैं। संगीत की समझ हो या नहीं, कीमती म्यूज़िक सिस्टम ज़रूरी है। कोई बात नहीं यदि आप उसे ठीक तरह चला भी न सकें। कंप्यूटर काम के लिए तो खरीदे ही जाते हैं, महज़ दिखावे के लिए उन्हें खरीदने

SCERT TELANGANA

वालों की संख्या भी कम नहीं है। खाने के लिए पाँच सितारा होटल हैं। वहाँ तो अब विवाह भी होने लगे हैं। बीमार पड़ने पर पाँच सितारा अस्पतालों में आइए। सुख-सुविधाओं और अच्छे इलाज के अतिरिक्त यह अनुभव काफ़ी समय तक चर्चा का विषय भी रहेगा, पढ़ाई के लिए पाँच सितारा पब्लिक स्कूल हैं, शीघ्र ही शायद कॉलेज और यूनिवर्सिटी भी बन जाए। भारत में तो यह स्थिति अभी नहीं आई पर अमरीका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध भी कर सकते हैं- एक कीमत पर। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे। चाहे तो फव्वारे होंगे और मंद ध्वनि में निरंतर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमरीका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है। प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं। चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों। यह है एक छोटी-सी झलक उपभोक्तावादी समाज की। यह विशिष्टजन का समाज है पर सामान्यजन भी इसे ललचाई निगाहों से देखते हैं। उनकी दृष्टि में, एक विज्ञापन की भाषा में, यही है राइट च्वाइस बेबी।

अब विषय के गंभीर पक्ष की ओर आएँ। इस उपभोक्ता संस्कृति का विकास भारत में क्यों हो रहा है?

सामंती संस्कृति के तत्व भारत में पहले भी रहे हैं। उपभोक्तावाद इस संस्कृति से जुड़ा रहा है। आज सामंत बदल गए हैं, सामंती संस्कृति का मुहावरा बदल गया है।

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें; परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ़्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य-निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी।

अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर

SCERT TELANGANA

का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं। हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़?

गाँधीजी ने कहा था कि हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाज़े-खिड़की खुले रखें पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को ही हिला रही है। यह एक बड़ा खतरा है। भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. आज दूरदर्शन या अन्य टी.वी. चैनलों पर विविध प्रकार के लुभावने विज्ञापन देखे जा सकते हैं। इनमें से कुछ अंधविश्वास को भी प्रेरित करते हैं। कुछ को देखते ही पता चल जाता है कि इनमें सचाई नहीं है। इससे बहुत से लोग छले भी जाते हैं। लोगों को इस संबंध में किस प्रकार जागरूक किया जा सकता है? चर्चा कीजिए।
2. "आज के व्यापारिक प्रतिस्पर्धा युग में विज्ञापनों में बातें बढ़ा-चढ़ा कर कहना अनिवार्य है।" इसके पक्ष-विपक्ष में वाद-विवाद कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - प्रतिष्ठा के लिए वस्तुएँ खरीदना
   - उपभोक्तावाद से जन्मा संकट
2. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?
3. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?
4. व्यक्ति-केंद्रिकता से क्या अभिप्राय है? लेखक ने इसके बारे में क्या कहा है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. उपभोक्तावाद से क्या अभिप्राय है? अपने विचार लिखिए।
2. "जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित हो रहे हैं।" आशय स्पष्ट कीजिए।
3. प्रतिष्ठा के हास्यास्पद रूप से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
4. गांधीजी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

SCERT TELANGANA

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत पद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ।
जी माल देखिए दाम बताऊँगा।
बे काम नहीं है काम बताऊँगा।

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें
यह गीत गज़ब का है, ढा कर देखें
यह गीत ज़रा सूने में लिखा था
यह गीत वहाँ पूने में लिखा था।
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है
यह गीत बढ़ाने से बढ़ जाता है।
यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
यह मसान में भूत भगाता है।
यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर
यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़ूर
मैं सीधे-सीधे और अटपटे गीत बेचता हूँ।
जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ।

– भवानी प्रसाद मिश्र

1. कवि अपने गीतों की क्या विशेषता बता रहा है?
2. इस कविता में विज्ञापन की झलक दिखायी देती है। इस दृष्टि से कवि कहाँ तक सफल हुआ है?
3. क्या गीत बेचे जा सकते हैं? इस बारे में अपने विचार दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कोई वस्तु आपके लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर आप उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं? क्यों?
2. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट कीजिए।
3. आज के विज्ञापनों में अश्लीलता बढ़ती जा रही है। इसके रोकथाम के क्या उपाय किए जाने चाहिए?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।
2. विज्ञापन में भाषा का विशेष चमत्कार होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्यौहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

SCERT TELANGANA

❖ सृजनात्मक कार्य

आप प्रतिदिन टी.वी. पर ढेरों विज्ञापन देखते-सुनते हैं और उनमें से कुछ आपकी ज़बान पर चढ़ जाते हैं। आप अपनी पसंद की किन्हीं दो वस्तुओं पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

❖ प्रशंसा

आज के युग को विज्ञापन युग भी कहा जा सकता है। यह सही है कि व्यापारिक विज्ञापन अधिकतर आडंबरपूर्ण होते हैं। लेकिन विज्ञापनों के माध्यम से जनता को जागरूक भी किया जाता है। शिक्षा, पोलियो, उपभोक्ता जागरूकता आदि कार्यक्रमों का प्रचार भी इन्हीं विज्ञापनों के जिम्मे है। आज के समाज में विज्ञापनों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

1. 'धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।' इस वाक्य में 'बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है? धीरे-धीरे? तो धीरे-धीरे शब्द क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। वाक्य में जिन शब्दों से हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कब, कितनी और कहाँ हो रही है, वे शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

क. ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

ख. धीरे-धीरे, ज़ोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज़्यादा, यहाँ, उधर, बाहर- इन क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

ग. नीचे दिए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिए-

1. कल रात से निरंतर बारिश हो रही है।
2. पेड़ पर लगे पके आम देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।
3. रसोईघर से आती पुलाव की हल्की खुशबू से मुझे ज़ोरों की भूख लग आयी।
4. उतना ही खाओ जितनी भूख है।
5. विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाज़ार भरा पड़ा है।

परियोजना कार्य

समाचार पत्रों के विज्ञापन पढ़िए। अपनी पसंद के कुछ विज्ञापन संकलित कीजिए। 'विज्ञापन विधा' के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

SCERT TELANGANA

माटी वाली

उपवाचक

- विद्यासागर

शहर के सेमल का तप्पड़ मोहल्ले की ओर बने आखिरी घर की खोली में पहुँचकर उसने दोनों हाथों की मदद से अपने सिर पर धरा बोझा नीचे उतारा। मिट्टी से भरा एक कंटर। माटी वाली। टिहरी शहर में शायद ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसे वह न जानती हो या जहाँ उसे न जानते हों, घर के कुल निवासी, बरसों से वहाँ रहते आ रहे किराएदार, उनके बच्चे तलक। घर-घर में लाल मिट्टी देते रहने के उस काम को करने वाली वह अकेली है। उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं। उसके बगैर तो लगता है, टिहरी शहर के कई एक घरों में चूल्हों का जलना तक मुश्किल हो जाएगा। वह न रहे तो लोगों के सामने रसोई और भोजन कर लेने के बाद अपने चूल्हे-चौके की लिपाई करने की समस्या पैदा हो जाएगी। भोजन जुटाने और खाने की तरह रोज़ की एक समस्या। घर में साफ़, लाल मिट्टी तो हर हालत में मौजूद रहनी चाहिए। चूल्हे-चौकों को लीपने के अलावा साल-दो साल में मकान के कमरों, दीवारों की गोबरी-लिपाई के लिए भी लाल माटी की ज़रूरत पड़ती रहती है। शहर के अंदर कहीं माटाखान है नहीं। भागीरथी और भीलांगना, दो नदियों के तटों पर बसे हुए शहर की मिट्टी इस कदर रेतीली है कि उससे चूल्हों की लिपाई का काम नहीं किया जा सकता। आने वाले नए-नए किराएदार भी एक बार अपने घर के आँगन में उसे देख लेते हैं तो अपने आप माटी वाली के ग्राहक बन जाते हैं। घर-घर जाकर माटी बेचने वाली नाटे कद की एक हरिजन बुढ़िया-माटी वाली।

शहरवासी सिर्फ़ माटी वाली को नहीं, उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। रद्दी कपड़े को मोड़कर बनाए गए एक गोल डिल्ले के ऊपर लाल, चिकनी मिट्टी से छुलबुल भरा कनस्तर टिका रहता है। उसके ऊपर किसी ने कभी कोई ढक्कन लगा हुआ नहीं देखा। अपने कंटर को इस्तेमाल में लाने से पहले वह उसके ऊपरी ढक्कन को काटकर निकाल फेंकती है। ढक्कन के न रहने पर कंटर के अंदर मिट्टी भरने और फिर उसे खाली करने में आसानी रहती है। उसके कंटर को ज़मीन पर रखते-रखते सामने के घर से नौ-दस साल की एक छोटी लड़की कामिनी दौड़ती हुई वहाँ पहुँची और उसके सामने खड़ी हो गई।

"मेरी माँ ने कहा है, ज़रा हमारे यहाँ भी आ जाना।"

"अभी आती हूँ।"

घर की मालकिन ने माटी वाली लड़की को अपने कंटर की माटी कच्चे आँगन के एक कोने पर उड़ेल देने को कह दिया।

"तू बहुत भाग्यवान है। चाय के टैम पर आई है हमारे घर। भाग्यवान आए खाते वक्त।" वह रसोई में गई और दो रोटियाँ लेती आई। रोटियाँ उसे सौंपकर वह फिर अपनी रसोई में घुस गई।

माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज़्यादा सोचने का वक्त नहीं था। घर की मालकिन के अंदर जाते ही माटी वाली ने इधर-उधर तेज़ निगाहें दौड़ाईं। हाँ, इस वक्त वह अकेली थी। उसे कोई देख नहीं रहा था। उसने फ़ौरन अपने सिर पर धरे डिल्ले के कपड़े के मोड़ों को हड़बडी में एक झटके में

SCERT TELANGANA

खोला और उसे सीधा कर दिया। फिर इकहरा। खुल जाने के बाद वह एक पुरानी चादर के एक फटे हुए कपड़े के रूप में प्रकट हुआ। मालकिन के बाहर आँगन में निकलने से पहले उसने चुपके से अपने हाथ में थामी दो रोटियों में से एक रोटी को मोड़ा और उसे कपड़े पर लपेटकर गाँठ बाँध दी। साथ ही अपना मुँह यों ही चलाकर खाने का दिखावा करने लगी। घर की मालकिन पीतल के एक गिलास में चाय लेकर लौटी। उसने वह गिलास बुढ़िया के पास ज़मीन पर रख दिया।

''ले, सद्दा-बासी साग कुछ है नहीं अभी। इसी चाय के साथ निगल जा।''

माटी वाली ने खुले कपड़े के एक छोर से पूरी गोलाई में पकड़कर पीतल का वह गरम गिलास हाथ में उठा लिया। अपने होंठों से गिलास के किनारे को छुआने से पहले, शुरू-शुरू में उसके अंदर रखी गरम चाय को ठंडा करने के लिए सू-सू करके, उस पर लंबी-लंबी फूँकें मारीं। तब रोटी के टुकड़ों को चबाते हुए धीरे-धीरे चाय सुड़कने लगी।

''चाय तो बहुत अच्छा साग हो जाती है ठकुराइनजी।''

''भूख तो अपने में एक साग होती है बुढ़िया। भूख मीठी कि भोजन मीठा?''

''तुमने अभी तक पीतल के गिलास सँभालकर रखे हैं। पूरे बाज़ार में और किसी घर में अब नहीं मिल सकते ये गिलास।'' ''इनके खरीदार कई बार हमारे घर के चक्कर काटकर लौट गए। पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गई चीज़ों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता। हमें क्या मालूम कैसी तंगी के दिनों में अपनी जीभ पर कोई स्वादिष्ट, चटपटी चीज़ रखने के बजाय मन मसोसकर दो-दो पैसे जमा करते रहने के बाद खरीदी होंगी उन्होंने ये तमाम चीज़ें, जिनकी हमारे लोगों की नज़रों में अब कोई कीमत नहीं रह गई है। बाज़ार में जाकर पीतल का भाव पूछो ज़रा, दाम सुनकर दिमाग चकराने लगता है। और ये व्यापारी हमारे घरों से हराम के भाव इकट्ठा कर ले जाते हैं, तमाम बर्तन-भाँडे। काँसे के बरतन भी गायब हो गए हैं, सब घरों से।''

''इतनी लंबी बात नहीं सोचते बाकी लोग। अब जिस घर में जाओ वहाँ या तो स्टील के भाँडे दिखाई देते हैं या फिर काँच और चीनी मिट्टी के।''

''अपनी चीज़ का मोह बहुत बुरा होता है। मैं तो सोचकर पागल हो जाती हूँ कि अब इस उमर में इस शहर को छोड़कर हम जाएँगे कहाँ!''

''ठकुराइन जी, जो ज़मीन-जायदादों के मालिक हैं, वे तो कहीं न कहीं ठिकाने पर जाएँगे ही। पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा! मेरी तरफ़ देखने वाला तो कोई भी नहीं।'' चाय खत्म कर माटी वाली ने एक हाथ में अपना कपड़ा उठाया, दूसरे में खाली कंटर और खोली से बाहर निकलकर सामने से घर में चली गई। उस घर में भी, 'कल हर हालत में मिट्टी ले आने' के आदेश के साथ उसे दो रोटियाँ मिल गईं। उन्हें भी उसके अपने कपड़े के एक दूसरे छोर से बाँध लिया। लोग जानें तो जानें कि वह ये रोटियाँ अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही हैं। उसके घर पहुँचते ही अशक्त बुड्ढा कातर नज़रों से उसकी ओर देखने लगता है। वह घर में रसोई बनने का इंतज़ार करने लगता है। आज वह घर पहुँचते ही तीन रोटियाँ अपने बुड्ढे के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही चेहरा खिल उठेगा बुड्ढे का।

साथ में ऐसा भी बोल देगी, ''साग तो कुछ है नहीं अभी।''

और तब उसे जवाब सुनाई दे देगा, ''भूख मीठी कि भोजन मीठा?''

SCERT TELANGANA

उसका गाँव शहर के इतना पास भी नहीं है। कितना ही तेज़ चलो फिर भी घर पहुँचने में एक घंटा तो लग ही जाता है। रोज़ सुबह निकल जाती है वह अपने घर से। पूरा दिन माटाखान में मिट्टी खोदने, फिर विभिन्न स्थानों में फैले घरों तक उसे ढोने में बीत जाता है। घर पहुँचने से पहले रात घिरने लगती है। उसके पास अपना कोई खेत नहीं। ज़मीन का एक भी टुकड़ा नहीं। झोपड़ी, जिसमें वह गुज़ारा करती है, गाँव के एक ठाकुर की ज़मीन पर खड़ी है। उसकी ज़मीन पर रहने की एवज़ में उस भले आदमी के घर पर भी माटी वाली को कई तरह के कामों की बेगार करनी होती है।

नहीं, आज वह एक गठरी में बदल गए अपने बुड्ढे को कोरी रोटियाँ नहीं देगी। माटी बेचने से हुई आमदनी से उसने एक पाव प्याज़ खरीद लिया। प्याज़ को कूटकर वह उन्हें जल्दी-जल्दी तल लेगी। बुड्ढे को पहले रोटियाँ दिखाएगी ही नहीं। सब्ज़ी तैयार होते ही परोस देगी उसके सामने दो रोटियाँ। अब वह दो रोटियाँ भी नहीं खा सकता। एक ही रोटी खा पाएगा या हद से हद डेढ़। अब उसे ज़्यादा नहीं पचता। बाकी बची डेढ़ रोटियों से माटी वाली अपना काम चला लेगी। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी है। मन में यह सब सोचती, हिसाब लगाती हुई वह अपने घर पहुँच गई।

उसके बुड्ढे को अब रोटी की कोई ज़रूरत नहीं रह गई थी। माटी वाली के पाँवों की आहट सुनकर हमेशा की तरह आज वह चौंका नहीं। उसने अपनी नज़रें उसकी ओर नहीं घुमाईं। घबराई हुई माटी वाली ने उसे छूकर देखा। वह अपनी माटी को छोड़कर जा चुका था।

टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब ने उससे पूछा कि वह रहती कहाँ है।

''तुम तहसील से अपने घर का प्रमाणपत्र ले आना।''

''माटी कहाँ से लाती हो?''

''माटाखान से लाती हूँ माटी।''

''वह माटाखान चढ़ी है तेरे नाम? अगर है तो हम तेरा नाम लिख देते हैं।''

''माटाखान तो मेरी रोज़ी है साहब।''

''बुढ़िया हमें ज़मीन का कागज़ चाहिए, रोजी का नहीं।''

''बाँध बनने के बाद मैं क्या खाऊँगी साहब?''

''इस बात का फैसला तो हम नहीं कर सकते। वह बात तो तुझे खुद ही तय करनी पड़ेगी।''

टिहरी बाँध की दो सुरंगों को बंद कर दिया गया है। शहर में पानी भरने लगा है। शहर में आपाधापी मची है। शहरवासी अपने घरों को छोड़कर वहाँ से भागने लगे हैं। पानी भर जाने से सबसे पहले कुल श्मशान घाट डूब गए हैं। माटीवाली अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी है। गाँव के हर आने-जाने वाले से एक ही बात कहती जा रही है- ''गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।''

प्रश्न-

1. माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज़्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था?
2. 'भूख मीठी कि भोजन मीठा' से क्या अभिप्राय है?
3. माटी वाली का रोटियों का इस तरह हिसाब लगाना उसकी किस मजबूरी को प्रकट करता है?
4. 'गरीब आदमी का शमशान नहीं उजड़ना चाहिए।' इस कथन का आशय स्पस्ट कीजिए।
5. 'विस्थापन की समस्या' पर एक अनुच्छेद लिखिए ।

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

13. खुशबू रचते हैं हाथ

रचनाकार

अरुण कमल का जन्म बिहार के रोहतास ज़िले के नासरीगंज में 15 फरवरी 1954 को हुआ। वे पटना विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे हैं। इन्हें इनकी कविताओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इन्होंने कविता-लेखन के अलावा कई पुस्तकों और रचनाओं का अनुवाद भी किया है।

अरुण कमल की प्रमुख कृतियाँ हैं: अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार (चारों कविता संग्रह) तथा कविता और समय (आलोचनात्मक कृति)। इनके अलावा अरुण कमल ने मायकोव्यस्की की आत्मकथा और जंगल बुक का हिंदी में और हिंदी के युवा कवियों की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद किया, जो 'वॉयसेज' नाम से प्रकाशित हुआ।

अरुण कमल की कविताओं में नए बिंब, बोलचाल की भाषा, खड़ी बोली के अनेक लय-छंदों का समावेश है। इनकी कविताएँ जितनी आपबीती हैं, उतनी ही जनबीती भी। इनकी कविताओं में जीवन के विविध क्षेत्रों का चित्रण है। इस विविधता के कारण इनकी भाषा में भी विविधता के दर्शन होते हैं। ये बड़ी कुशलता और सहजता से जीवन-प्रसंगों को कविता में रूपांतरित कर देते हैं।

प्रस्तावना प्रसंग

बाज़ लोग जिनका कोई नहीं होता
और जो कोई नहीं होते,
कहीं के नहीं होते–
झुण्ड बाँधकर चलाते हैं फावड़े
और देखते-देखते उनके
ऊबड़-खाबड़ पैरों तक
धरती की गहराइयों से
एक दम उमड़े आते हैं
पानी के सोते।

– अनामिका

प्रश्न

1. कवि ने 'बाज़ लोग' किसे कहा है?
2. मज़दूरों का हमारे विकास में क्या योगदान रहा है?
3. मज़दूर हमारे लिए अथक परिश्रम करते हैं, फिर भी उनकी स्थिति दयनीय क्यों है?

भूमिका

प्रस्तुत कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' सामाजिक विषमताओं को बेनकाब करती है। यह किसकी और कैसी कारस्तानी है कि जो वर्ग समाज में सौंदर्य की सृष्टि कर रहा है और उसे खुशहाल बना रहा है, वही वर्ग अभाव में, गंदगी में जीवन बसर कर रहा है? लोगों के जीवन में सुगंध बिखेरनेवाले हाथ भयावह स्थितियों में अपना जीवन बिताने पर मजबूर हैं! क्या विडंबना है कि खुशबू रचनेवाले ये हाथ दूरदराज़ के गंदे और बदबूदार इलाकों में जीवन बिता रहे हैं। स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान करनेवाले ये लोग इतने उपेक्षित हैं! आखिर कब तक?

SCERT TELANGANA

कई गलियों के बीच
कई नालों के बीच
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

उभरी नसोंवाले हाथ
घिसे नाखूनोंवाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ

गंदे कटे-पिटे हाथ
ज़ख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।
यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा गुलाब खस और रातरानी
अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. हम जो कुछ भी पहनते, ओढ़ते व खाते-पीते हैं, वह हम तक बहुत लोगों के सहयोग से पहुँचता है। समाज में एक-दूसरे के सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. हम जो खूबसूरत चीज़ें देखते हैं, ज़रूरी नहीं कि उन्हें तैयार करने वालों की ज़िंदगी भी वैसी ही खूबसूरत हो। इसके कारणों पर विमर्श कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?
2. जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?
3. 'खुशबू रचनेवाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में कहाँ-कहाँ रहते हैं?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. भाव स्पष्ट कीजिए।

   क. पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
      जूही की डाल से खुशबूदार हाथ

   ख. 'दुनिया की सारी गंदगी के बीच
      दुनिया की सारी खुशबू
      रचते रहते हैं हाथ'

2. 'खुशबू रचते हैं हाथ' लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या रहा होगा?
3. 'खुशबू रचते हैं हाथ' कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत पद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

लिखा हुआ था सीट पर- वरिष्ठ नागरिक।
पसरे हुए थे, उसमें दो बलिष्ठ नागरिक।
हमने कहा- ऐ नौजवानो! सीट छोड़िए।
आपे से बाहर हो गये वे धृष्ट नागरिक।

जोश-ए-जवानी में अक्सर भूलते हैं लोग,
एक दिन उन्हें भी होना है, वरिष्ठ नागरिक।
दिल हैं उनके छोटे, और सोच उनकी तंग,
औरों को जो समझते हैं, कनिष्ठ नागरिक।
खुदगर्ज़ियों और लालचों की अंधी दौड़ में,
एक-दूसरे का कर रहे, अनिष्ट नागरिक।

प्रश्न 1. इस कविता को उचित शीर्षक दीजिए।
2. वे नौजवान आपे से बाहर क्यों हो गये?
3. आजकल वरिष्ठ नागरिकों की क्या समस्याएँ हैं?
4. आप के दृष्टिकोण से वरिष्ठ नागरिकों को क्या-क्या सुविधाएँ मिलनी चाहिए?
5. भारतीय संस्कृति में बड़े-बुजुर्गों के सम्मान को विशेष महत्व दिया गया है। स्पष्ट कीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कार्यालय के कर्मचारियों एवं मज़दूरों की जीवनशैली में क्या अंतर होता है?
2. कुछ व्यवसायों में सम्मान अधिक है किंतु आमदनी कम; कुछ में आमदनी अधिक है किंतु सम्मान कम। आप किसे श्रेष्ठ मानेंगे? कारण सहित बताइए।
3. मानव के विकास में मज़दूरों का क्या योगदान है?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवि अरुण कमल ने खुशबू रचते हैं हाथ के माध्यम से किस व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की चेष्टा की है?
2. मज़दूरों की स्थिति में सुधार लाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए जाने चाहिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

भारत में बढ़ती हुई बेरोज़गारी को दूर करने के लिए हस्तकलाकारों को किस प्रकार की सुविधाएँ मिलनी चाहिए, ताकि कला भी जीवित रहे और उनके जीवन स्तर में भी सुधार आए। इस विषय पर प्रकाश डालते हुए 'हस्तकला का संरक्षण' विषय पर एक निबंध लिखिए।

SCERT TELANGANA

❖ प्रशंसा

इस कविता में निचले स्तर के मज़दूरों की स्थिति का चित्रण है। इस प्रकार के मज़दूर हमारे जीवन को सुखमय व सौंदर्यपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गलियों, पार्कों व सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता एवं सुंदरता इन्हीं मज़दूरों से कायम है। इन अमूल्य कार्यों का महत्व बताइए।

भाषा की बात

1. पर्याय की दृष्टि से बेमेल शब्द बताइए।
   - दुनिया, विश्व, संसार, प्रकृति, जग
   - हाथ, कर, काया, हस्त, भुजा
   - कमल, जलज, राजीव, नयन, पंकज
2. पाठ में बदबू एवं खुशबू शब्द का अत्यंत सुंदर प्रयोग हुआ है। बदबू और खुशबू एक-दूसरे के विपरीतार्थी हैं। ये शब्द क्रमशः बद और खुश उपसर्ग से बने हैं। इन उपसर्गों से दो-दो अन्य शब्द बनाइए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

अगरबत्ती बनाना, माचिस बनाना, मोमबत्ती बनाना, लिफ़ाफ़े बनाना, पापड़ बनाना, मसाले कूटना आदि में से किन्हीं दो लघु उद्योगों के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए। चार्ट पर प्रस्तुत कीजिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

14. ल्हासा की ओर

रचनाकार

राहुल सांकृत्यायन का जन्म सन् 1893 में गाँव पंदहा, ज़िला आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनका मूल नाम केदार पांडेय था। उनकी शिक्षा काशी, आगरा और लाहौर में हुई। सन् 1930 में उन्होंने श्रीलंका जाकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। तब से उनका नाम राहुल सांकृत्यायन हो गया। राहुल जी पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, तिब्बती, चीनी, जापानी, रूसी सहित अनेक भाषाओं के जानकार थे। उन्हें महापंडित कहा जाता था। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया।

राहुल सांकृत्यायन ने उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, जीवनी, आलोचना, शोध आदि अनेक विधाओं में साहित्य-सृजन किया। इतना ही नहीं उन्होंने अनेक ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद भी किया। **मेरी जीवन यात्रा (छह भाग), दर्शन-दिग्दर्शन, बाइसवीं सदी, वोल्गा से गंगा, भागो नहीं दुनिया को बदलो, दिमागी गुलामी, घुमक्कड़ शास्त्र** उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। साहित्य के अलावा दर्शन, राजनीति, धर्म, इतिहास, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर राहुल जी द्वारा रचित पुस्तकों की संख्या लगभग 150 है। राहुल जी ने बहुत सी लुप्तप्राय सामग्री का उद्धार कर अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है।

यात्रावृत्त लेखन में राहुल जी का स्थान अन्यतम है। उन्होंने घुमक्कड़ी का शास्त्र रचा और उससे होने वाले लाभों का विस्तार से वर्णन करते हुए मंजिल के स्थान पर यात्रा को ही घुमक्कड़ का उद्देश्य बताया। घुमक्कड़ी से मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं अज्ञात स्थलों की जानकारी के साथ-साथ भाषा एवं संस्कृति का भी आदान-प्रदान होता है। राहुल जी ने विभिन्न स्थानों के भौगोलिक वर्णन के अतिरिक्त वहाँ के जन-जीवन की सुंदर झाँकी प्रस्तुत की है।

प्रस्तावना प्रसंग

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही मन में लगी
आह क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।...

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

– हरिऔध

प्रश्न

1. बूँद को क्या चिन्ता थी?
2. घर से निकलकर बूँद मोती बन गई। यदि वह घर से न निकलती तो क्या होता?
3. साहस करके घर से बाहर निकलने वाले लोग ही कुछ कर पाते हैं। स्पष्ट कीजिए।

भूमिका

संकलित अंश राहुल जी की प्रथम तिब्बत यात्रा से लिया गया है जो उन्होंने सन् 1929-30 में नेपाल के रास्ते की थी। उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी, इसलिए उन्होंने यह यात्रा एक भिखमंगे के छद्म वेश में की थी। इसमें तिब्बत की राजधानी ल्हासा की ओर जाने वाले दुर्गम रास्तों का वर्णन उन्होंने बहुत ही रोचक शैली में किया है। इस यात्रा-वृत्तांत से हमें उस समय के तिब्बती समाज के बारे में भी जानकारी मिलती है।

SCERT TELANGANA

वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज़ें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फ़ौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फ़ौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफ़ें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्न श्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते; नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोङी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार बरतन (खोटी) में रखके आपको दे देगी। यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि सारा मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोङी मे चाय मथकर ला सकते हैं। चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक-मक्खन डालने की ज़रूरत होती है।

परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे; किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी, और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोपड़े मे ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छङ् पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

अब हमें सबसे विकट डाँड़ा थोङ्ला पार करना था। डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह-सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव-गिराव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों

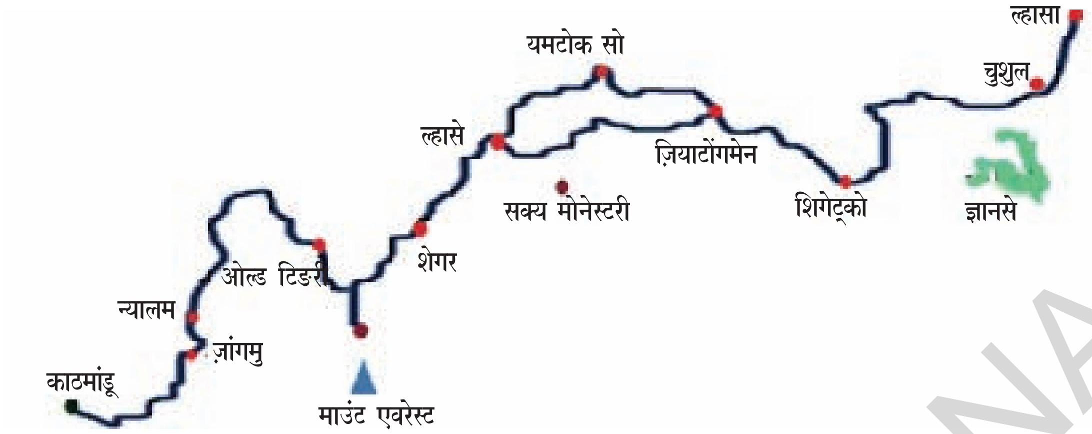

के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सज़ा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफ़िया-विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं। डाकू यदि जान से न मारे तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है। गाँव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोङ्ला के पास खून हो गया। शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते, क्योंकि हम भिखमंगे थे और जहाँ-कहीं वैसी सूरत देखते, टोपी उतार जीभ निकाल, ''कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा'' कहते भीख माँगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊँची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते? और अगला पड़ाव 16-17 मील से कम नहीं था। मैंने सुमति से कहा कि यहाँ से लङ्कोर तक के लिए दो घोड़े कर लो, सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगें।

दूसरे दिन हम घोड़ों पर सवार होकर ऊपर की ओर चले। डाँड़े से पहिले एक जगह चाय पी और दोपहर के वक्त डाँड़े के ऊपर जा पहुँचे। हम समुद्रतल से 17-18 हज़ार फीट ऊँचे खड़े थे। हमारी दक्खिन तरफ़ पूरब से पच्छिम की ओर हिमालय के हज़ारों श्वेत शिखर चले गए थे। भीटे की ओर दीखने वाले पहाड़ बिलकुल नंगे थे, न वहाँ बरफ़ की सफ़ेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ़ बहुत कम बरफ़ वाली चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देवता का स्थान था, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों की सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों से सजाया गया था। अब हमें बराबर उतराई पर चलना था। चढ़ाई तो कुछ दूर थोड़ी मुश्किल थी, लेकिन उतराई बिलकुल नहीं। शायद दो-एक और सवार साथी हमारे साथ चल रहे थे। मेरा घोड़ा कुछ धीमे चलने लगा। मैंने समझा कि चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है, और उसे मारना नहीं चाहता था। धीरे-धीरे वह बहुत पिछड़ गया और मैं दोन्क्विक्स्तो की तरह अपने घोड़े पर झूमता हुआ चला जा रहा था। जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे। जब मैं ज़ोर देने लगता, तो वह सुस्त पड़ जाता। एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे, मैं बाएँ का रास्ता ले मील-डेढ़ मील चला गया। आगे एक घर में पूछने से पता लगा कि लङ्कोर का रास्ता दाहिने वाला था। फिर लौटकर उसी को पकड़ा। चार-पाँच बजे के करीब मैं गाँव से मील-भर पर

SCERT TELANGANA

था, तो सुमति इंतज़ार करते हुए मिले। मंगोलों का मुँह वैसे ही लाल होता है और अब तो वह पूरे गुस्से में थे। उन्होंने कहा- ''मैंने दो टोकरी कंडे फूँक डाले, तीन-तीन बार चाय को गरम किया।'' मैंने बहुत नरमी से जवाब दिया- ''लेकिन मेरा कसूर नहीं है मित्र! देख नहीं रहे हो, कैसा घोड़ा मुझे मिला है! मैं तो रात तक पहुँचने की उम्मीद रखता था।'' खैर, सुमति को जितनी जल्दी गुस्सा आता था, उतनी ही जल्दी ठंडा भी हो जाता था। लङ्कोर में वे एक अच्छी जगह पर ठहरे थे। यहाँ भी उनके अच्छे यजमान थे। पहिले चाय-सत्तू खाया गया, रात को गरमागरम थुक्पा मिला।

अब हम तिङ्री के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखायी पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिङरी-समाधि-गिरि। आसपास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बत्तियों के गंडे खतम नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खतम हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा, यह तो हफ्ता-भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले की गंडे बाँट दो, मगर आसपास के गाँवों में मत जाओ; इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रुपये दे दूँगा। सुमति ने स्वीकार किया। दूसरे दिन हमने भरिया ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था, लेकिन अब 10-11 बजे की तेज़ धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप भी बहुत कड़ी मालूम होती है, यद्यपि थोड़े से भी मोटे कपड़े से सिर को ढाँक लें, तो गरमी खतम हो जाती है। आप 2 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बरफ़ हो रहा है। फिर हमने पीठ पर अपनी-अपनी चीज़ें लादीं, डंडा हाथ में लिया और चल पड़े। यद्यपि सुमति के परिचित तिङ्री में भी थे, लेकिन वह एक और यजमान से मिलना चाहते थे, इसलिए आदमी मिलने का बहाना कर शेकर विहार की ओर चलने के लिए कहा। तिब्बत की ज़मीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज़्यादा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हर एक जागीरदार कुछ खेती खुद भी कराता है, जिसके लिए मज़दूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इंतज़ाम देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ खयाल करना चाहिए था। यहाँ एक अच्छा मंदिर था जिसमें कन्जुर (बुद्धवचन-अनुवाद) की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी हुई थीं, मेरा आसन भी वहीं लगा। वह बड़े मोटे कागज़ पर अच्छे

अक्षरों में लिखी हुई थीं, एक-एक पोथी 15-15 सेर से कम नहीं रही होगी। सुमति ने फिर आसपास अपने यजमानों के पास जाने के बारे में पूछा, मैं अब पुस्तकों के भीतर था, इसलिए मैंने उन्हें जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन वह गए। मैंने समझा था 2-3 दिन लगेंगे, लेकिन वह उसी दिन दोपहर बाद चले आए। तिङ्री गाँव वहाँ से बहुत दूर नहीं था। हमने अपना-अपना सामान पीठ पर उठाया और भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल पड़े।

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. यदि आपको मौका मिले तो आप किस क्षेत्र की यात्रा पर जाना चाहेंगे? क्यों? यह प्रश्न अपने मित्रों से भी पूछिए।
2. "हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था।"-उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित? विचार व्यक्त करें।
3. क्या आपके किसी परिचित को घुमक्कड़ी/यायावरी का शौक है? उसके इस शौक का उसकी पढ़ाई/काम पर क्या प्रभाव पड़ता होगा? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - नेपाल-तिब्बत मार्ग
   - डाँड़ा थोङ्ला का वन
   - तिब्बत की तेज़ धूप
2. लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस प्रकार पिछड़ गए?
3. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

SCERT TELANGANA

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. थोड्ला के पहले आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?
2. उस समय तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय रहता था?
3. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आम दिनों में समुद्र किनारे के इलाके बेहद सुंदर लगते हैं। समुद्र लाखों लोगों को भोजन देता है और लाखों उससे जुड़े दूसरे कारोबारों में लगे हैं। दिसंबर 2004 को सुनामी या समुद्री भूकंप से उठने वाली तूफ़ानी लहरों के प्रकोप ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि कुदरत की देन सबसे बड़े विनाश का कारण भी बन सकती है।

प्रकृति कब अपने ही ताने-बाने को उलट कर रख देगी, कहना मुश्किल है। हम उसके बदलते मिज़ाज को उसका कोप कह लें या कुछ और, मगर यह अबूझ पहेली अकसर हमारे विश्वास के चीथड़े कर देती है और हमें यह अहसास करा जाती है कि हम एक कदम आगे नहीं, चार कदम पीछे हैं। एशिया के एक बड़े हिस्से में आनेवाले उस भूकंप ने कई द्वीपों को इधर-उधर खिसकाकर एशिया का नक्शा ही बदल डाला। प्रकृति ने पहले भी अपनी ही दी हुई कई अद्भुत चीज़ें इंसान से वापस ले ली हैं जिसकी कसक अभी तक है।

दुख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है। वह हमारे जीवन में ग्रहण लाता है, ताकि हम पूरे प्रकाश की अहमियत जान सकें और रोशनी को बचाए रखने के लिए जतन करें। इस जतन से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। सुनामी के कारण दक्षिण भारत और विश्व के अन्य देशों में जो पीड़ा हम देख रहे हैं, उसे निराशा के चश्मे से न देखें। ऐसे समय में भी मेघना, अरुण और मैगी जैसे बच्चे हमारे जीवन में जोश, उत्साह और शक्ति भर देते हैं। 13 वर्षीय मेघना और अरुणा दो दिन अकेले खारे समुद्र में तैरते हुए जीव-जंतुओं से मुकाबला करते हुए किनारे आ लगे। इंडोनेशिया की रिजा पड़ोसी के दो बच्चों को पीठ पर लादकर पानी के बीच तैर रही थी कि एक विशालकाय साँप ने उसे किनारे का रास्ता दिखाया। मछुवारे की बेटी मैगी ने रविवार को समुद्र का भयंकर शोर सुना, उसकी शरारत को समझा, तुरंत अपना बेड़ा उठाया और अपने परिजनों को उसमें बिठाकर उतर आई समुद्र में, 41 लोगों को लेकर। महज 18 साल की यह जलपरी चल पड़ी पगलाए सागर से दो-दो हाथ करने। दस मीटर से ज़्यादा

SCERT TELANGANA

ऊँची सुनामी लहरें जो कोई बाधा, रुकावट मानने को तैयार नहीं थीं, इस लड़की के बुलंद इरादों के सामने बौनी ही साबित हुईं।

जिस प्रकृति ने हमारे सामने भारी तबाही मचाई है, उसी ने हमें ऐसी ताकत और सूझ दे रखी है कि हम फिर से खड़े होते हैं और चुनौतियों से लड़ने का रास्ता ढूँढ़ निकालते हैं। इस त्रासदी से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए जिस तरह पूरी दुनिया एकजुट हुई है, वह इस बात का सबूत है कि मानवता हार नहीं मानती।

प्रश्न 1. कौन-सी आपदा को सुनामी कहा जाता है?

2. 'दुख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है।' आशय स्पष्ट कीजिए।
3. मैगी, मेघना और अरुण ने सुनामी जैसी आपदा का सामना किस प्रकार किया?
4. प्रस्तुत गद्यांश में 'दृढ़ निश्चय' और 'महत्व' के लिए किन शब्दों का प्रयोग हुआ है?
5. इस गद्यांश का एक शीर्षक नाराज़ समुद्र हो सकता है। आप कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?
2. पहाड़ी क्षेत्रों में यातायात के साधन कम होते हैं। होते भी हैं तो अनोखे। इस बारे में अपने विचार लिखिए।
3. लेखक ने यह यात्रा सन् 1929-30 में की थी। वर्तमान समय में यदि तिब्बत की यात्रा की जाए तो राहुल जी की यात्रा कैसे भिन्न होगी?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. इस यात्रा-वृत्तांत के आधार पर लेखक के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।
2. प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय तिब्बती समाज कैसा था?

❖ सृजनात्मक कार्य

आपने भी किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी? यात्रा के दौरान हुए अनुभवों को यात्रा-वृत्तांत रूप में लिखकर प्रस्तुत करें।

SCERT TELANGANA

❖ प्रशंसा

पर्यटन यात्राएँ ज़रूरी नहीं की सुखद ही हों। कुछ यात्राएँ कष्टकारी भी होती हैं। लेकिन राहों की चुनौतियाँ यात्रा के रोमांच को बढ़ा देती हैं। अनुमान लगाइए कि लोग साहसिक यात्राएँ क्यों करते होंगे?

भाषा की बात

1. 'मैं अब पुस्तकों के भीतर था।' नीचे दिए गए विकल्पों में से कौनसा विकल्प इस वाक्य का अर्थ बतलाता है–

   क. लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

   ख. लेखक पुस्तकों के शैल्फ़ के भीतर चला गया।

   ग. लेखक के चारों ओर पुस्तकें ही थीं।

   घ. पुस्तक में लेखक का परिचय व चित्र छपा था।

2. किसी भी बात को अनेक प्रकार से कहा जा सकता है, जैसे–

   – सुबह होने से पहले हम गाँव में थे।

   – पौ फटने वाली थी कि हम गाँव में थे।

   – तारों की छाँव रहते–रहते हम गाँव पहुँच गए।

   नीचे दिए गए वाक्य को अलग–अलग तरीके से लिखिए–

   जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।

3. ऐसे शब्द जो किसी अंचल यानी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होते हैं उन्हें आंचलिक शब्द कहा जाता है। उदाहरण– कुची–कुची प्रस्तुत पाठ में से आंचलिक शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

4. पाठ में कागज़, अक्षर, मैदान के आगे क्रमशः मोटे, अच्छे और विशाल शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से उनकी विशेषता उभर कर आती है। पाठ में से कुछ ऐसे ही शब्द छाँटिए जो किसी की विशेषता बता रहे हों।

परियोजना कार्य

किसी एक पर्यटन स्थल का चित्र एवं उससे संबंधित जानकारी प्राप्त कीजिए। उसके बारे में लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

15. बच्चे काम पर जा रहे हैं

रचनाकार

राजेश जोशी का जन्म सन् 1946 में मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ ज़िले में हुआ। उन्होंने शिक्षा पूरी करने के बाद पत्रकारिता शुरू की और कुछ सालों तक अध्यापन किया। राजेश जोशी ने कविताओं के अलावा कहानियाँ, नाटक, लेख और टिप्पणियाँ भी लिखीं। साथ ही उन्होंने कुछ नाट्य रूपांतर भी किए हैं। कुछ लघु फिल्मों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया। उन्होंने भर्तृहरि की कविताओं की अनुरचना भूमि का कल्पतरू यह भी एवं मायकोवस्की की कविता का अनुवाद पतलून पहिना बादल नाम से किया है। कई भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेज़ी, रूसी और जर्मन में भी राजेश जी की कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं।

राजेश जोशी के प्रमुख काव्य संग्रह हैं- एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी का चेहरा, नेपथ्य में हँसी और दो पंक्तियों के बीच। उन्हें माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

राजेश जोशी की कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती हैं। वे जीवन के संकट में भी गहरी आस्था को उभारती हैं। उनकी कविताओं में स्थानीय बोली-बानी, मिज़ाज और मौसम सभी कुछ व्याप्त हैं। उनके काव्यलोक में आत्मीयता और लयात्मकता है तथा मनुष्यता को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष भी। दुनिया के नष्ट होने का खतरा राजेश जोशी को जितना प्रबल दिखाई देता है, उतना ही वे जीवन की संभावनाओं की खोज के लिए बेचैन दिखाई देते हैं।

प्रस्तावना प्रसंग

बाल मज़दूर

होटलों में काम करते,
सड़कों पर गाड़ी धोते,
भीख माँगते, बोझ ढोते,
कचड़ा बीनते, कपड़ा बुनते,
गंदे मटमैले चीथड़ों में
कभी घृणा से, कभी करुणा से,
देखा होगा तुमने मुझे अनजाने में।

प्रश्न

1. कविता के भाव कौन प्रकट कर रहा है?
2. कविता में बाल मज़दूर क्या कह रहा है?
3. बालकों से मज़दूरी क्यों नहीं करवानी चाहिए?
4. बाल मज़दूरी समाप्त करने के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

भूमिका

प्रस्तुत कविता में बच्चों से बचपन छीन लिए जाने की पीड़ा व्यक्त हुई है। कवि ने उस सामाजिक-आर्थिक विडंबना की ओर इशारा किया है जिसमें कुछ बच्चे खेल, शिक्षा और जीवन की उमंग से वंचित हैं।

SCERT TELANGANA

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?

कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेलकूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं। इस विषय पर वाद–विवाद आयोजित कीजिए।
2. कहा जाता है कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। अतः बच्चों का भविष्य देश का भविष्य है। बच्चों की अशिक्षा देश के भविष्य को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन–मस्तिष्क पर जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।
2. कवि ने इस कविता में कौन–कौन सी भयानक परिस्थितियों की बात कही है? क्यों?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. भाव स्पष्ट कीजिए।

क. हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

ख. भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल
पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे? कवि की दृष्टि से उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछना चाहिए।
3. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

SCERT TELANGANA

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

कविता पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भर दाने को

भूख मिटाने को

मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता

पथ पर आता।

साथ में दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,

बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाए।

भूख से सूख ओठ जब जाते,

दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते?

घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,

और झपट पड़ने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

1. भिक्षुक की दशा कैसी है?
2. भिक्षुक के भीख माँगने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?
3. "भूख से सूख ओठ जब जाते,
   दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते?" भाव स्पष्ट कीजिए।
4. भीख माँगते समय भिखारी के बच्चों के मन में क्या-क्या विचार आते होंगे?
5. आप ऐसे गरीबों की सहायता किस प्रकार करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से सभी बच्चे क्यों वंचित हैं?
2. दिन–प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा सा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?
3. आपने अपने शहर में बच्चों को कब–कब और कहाँ–कहाँ काम करते हुए देखा है?
4. काम पर जाते हुए बच्चे के स्थान पर अपने–आप को रखकर देखिए। आपको जो महसूस होता है उसे लिखिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. आज बहुत से ऐसे सरकारी आवासीय विद्यालय हैं, जहाँ बच्चों के लिए मुफ़्त खाने, रहने व पढ़ने की व्यवस्था है। सोचिए और बताइए कि किन कारणों से गरीबों के बच्चे ऐसे विद्यालयों का लाभ नहीं उठा पाते?
2. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके होने चाहिए?

❖ सृजनात्मक कार्य

बाल श्रम की रोकथाम पर नाटक तैयार कर उसकी प्रस्तुति कीजिए।

❖ प्रशंसा

आज बच्चों के अधिकारों के लिए बच्चों व बड़ों सब में जागरूकता आ रही है। इसके लिए कानून भी बनाए गए हैं। ऐसे कानूनों से समाज को क्या लाभ होगा?

भाषा की बात

1. इस कविता में अनेक प्रकार से प्रश्न पूछे गए हैं। इससे पता चलता है कि प्रश्न पूछना भी एक कला है। इससे भी भाषा में सौंदर्य उत्पन्न होता है। पाठ में आए प्रश्न रेखांकित कीजिए। उन्हें अलग–अलग तरह से पूछिए। कुछ अन्य सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में ऐसे ही कलात्मक प्रश्नों का निर्माण कीजिए।

परियोजना कार्य

बाल श्रम की रोकथाम के लिए लोगों के सुझाव जानने के लिए दस प्रश्न बनाइए। अपने मित्रों से इनके उत्तर पूछिए। उनके उत्तर संक्षिप्त में लिखिए।

SCERT TELANGANA

इकाई-IV

16. मेरे बचपन के दिन

रचनाकार

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फ़र्रूखाबाद शहर में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई। प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफ़ी प्रयत्न किए। सन् 1987 में उनका देहांत हो गया।

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक थीं। नीहार, **रश्मि**, **नीरजा**, **यामा**, **दीपशिखा** उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। कविता के साथ-साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं। **अतीत के चलचित्र**, **स्मृति की रेखाएँ**, **पथ के साथी**, **श्रृंखला की कड़ियाँ** उनकी महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं। महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना के पीछे एक ओर आज़ादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है। हिंदी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र को बुलंदियों तक पहुँचाने का श्रेय महादेवी वर्मा जी को है। उनके संस्मरणों और रेखाचित्रों में शोषित, पीड़ित लोगों के प्रति ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी आत्मीयता एवं अक्षय करुणा प्रकट हुई है। उनकी भाषा-शैली सरल एवं स्पष्ट है तथा शब्द चयन प्रभावपूर्ण और चित्रात्मक है।

प्रस्तावना प्रसंग

आ चल के तुझे
मैं ले के चलूँ
एक ऐसे गगन के तले।

जहाँ ग़म भी न हो
आँसू भी न हो
बस प्यार ही प्यार पले।

प्रश्न

1. कवि बच्चों को कैसे स्थान पर ले जाना चाहता है?
2. बच्चों को कैसा व्यवहार अच्छा लगता है?
3. बचपन के संस्कारों का हमारे व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है?

भूमिका

मेरे बचपन के दिन में महादेवी वर्मा जी ने अपने बचपन के उन दिनों को स्मृति के सहारे लिखा है जब वे विद्यालय में पढ़ रही थीं। इस अंश में लड़कियों के प्रति सामाजिक रवैये, विद्यालय की सहपाठिनों, छात्रावास के जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसंगों का बहुत ही सजीव वर्णन है।

SCERT TELANGANA

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं।

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा। जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता था। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरी माता जबलपुर से आईं तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएँगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवें दर्जे में भर्ती हुई। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था।

वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएँ रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवें दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। सुन-सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरंभ किया। यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्रा जी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा-छिपाकर लिखती थी मैं। एक दिन उन्होंने कहा, 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो?' तो मैंने डर के मारे कहा, 'नहीं'। अंत में उन्होंने मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी ली और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज़ लिए और एक हाथ से मुझको पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आयीं कि ये कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई। क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे। जब और लड़कियाँ खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे। उस समय एक पत्रिका निकलती थी- 'स्त्री दर्पण'- उसी में भेज देते थे। अपनी तुकबंदी छप जाती थी। फिर यहाँ कवि-सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे। हिंदी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के

SCERT TELANGANA

संघर्ष का केंद्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिन्दी का भी प्रचार चलता था। कवि-सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिऔध जी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

एक बार की घटना याद आती है कि एक कविता पर मुझे चाँदी का एक कटोरा मिला। बड़ा नक्काशीदार, सुंदर। उस दिन सुभद्रा नहीं गई थीं। सुभद्रा प्रायः नहीं जाती थीं कवि-सम्मेलन में। मैंने उनसे आकर कहा, 'देखो, यह मिला।'

सुभद्रा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।' उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब खर्च में से एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने' फिर बोलीं, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में' -फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं। तब उनकी जगह एक मराठी लड़की ज़ेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रहीं। वह कोल्हापुर से आई थी। ज़ेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ़ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। ज़ेबुन मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं- ज़ीनत बेगम। ज़ेबुन जब 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर-लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी जी से टोके बिना न रहा जाता था- 'वाह! देसी कौवा, मराठी

SCERT TELANGANA

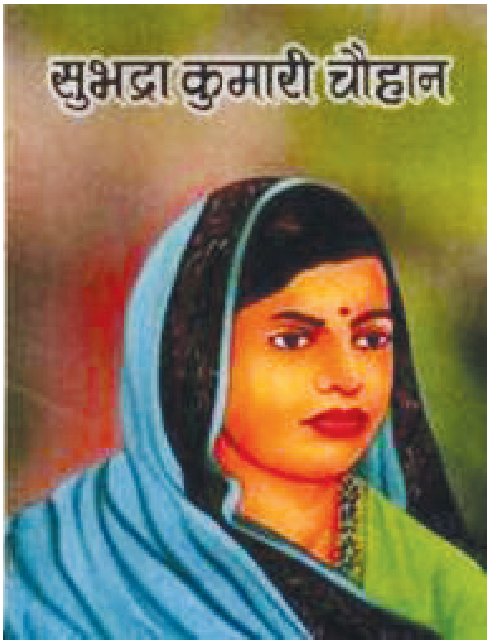

बोली!' ज़ेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौआ मराठी बोलता है।' ज़ेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाउज़ पहनती थी। कहती थी, हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!'

उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं वे आपस में अवधी बोलती थीं; बुंदेलखंड की आती थीं, वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आई तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी-कभी बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं। बचपन का एक और भी संस्कार था कि हम जहाँ रहते थे वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे बेचारे एक बँगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में हम लोग रहते थे। बेगम साहिबा कहती थीं- 'हमको ताई कहो! हम लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे हमारी माँ को चची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं, राखी के दिन बहनें राखी बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं- 'भाई भूखा बैठा है, राखी बँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा, 'देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े-वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को वह दुलहन कहती थीं। कहने लगीं, 'दुलहन, जिनके ताई-चाची नहीं होती हैं वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छह महीने तक चाची-ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुंदर है। मैं अपनी तरफ़ से इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।'

वही प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया। उनके यहाँ भी हिंदी चलती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलते थे। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वो सपना खो गया।

शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. महादेवी वर्मा के बचपन के दिन लगभग सौ वर्ष पहले थे। आज के बच्चों के बचपन एवं महादेवी वर्मा के बचपन की परिस्थितियों की तुलना कीजिए।
2. महादेवी वर्मा के बचपन के दिनों में लड़कियों को पढ़ने की स्वतंत्रता अधिक न थी। इसके क्या कारण हो सकते हैं? चर्चा कीजिए।
3. आज समाज विकास की चरम सीमा पर पहुँच चुका है, फिर भी लड़कियों की शिक्षा के प्रति उतनी सजगता नहीं है जितनी लड़कों की शिक्षा के प्रति। इसका क्या कारण है? इसके लिए क्या किया जाना चाहिए? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - लेखन की प्रेरणा
   - देश–सेवा की अभिलाषा
   - रक्षा बंधन का त्यौहार और धार्मिक सद्भाव
2. लेखिका उर्दू–फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाईं?
3. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
4. मनमोहन कौन थे? उनका नाम किसने रखा था?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?
2. "शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की स्थिति कुछ और होती।" आशय स्पष्ट कीजिए।
3. लेखिका ने छात्रावास के जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है उसे अपनी मातृभाषा में लिखिए।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बात सन् 1945-46 की है, जब पाकिस्तान नहीं बना था। उन दिनों लाहौर के एक कॉलेज में गणित के प्रोफ़ेसर थे– अनिलेंद्र गंगोपाध्याय। बहुत सज्जन, कर्मठ और छात्रों के प्रिय। इन मास्टर साहब का भी एक प्रिय छात्र था, बहुत ही होनहार और मेधावी।

SCERT TELANGANA

पैंतीस साल का लंबा समय गुजरता चला गया। मास्टर साहब बँटवारे के बाद कलकत्ता में आ बसे। इस लंबे दौर में वह मेधावी छात्र विज्ञान के क्षेत्र में नए आयाम खोलता हुआ, सम्मान-दर-सम्मान पाता हुआ सर्वोच्च सम्मान तक पहुँचा।

एक दिन वह छात्र अचानक अपने वयोवृद्ध और रुग्ण श्रद्धेय मास्टर साहब से मिलने आ गया। समय की दूरी को मिटाकर जब गुरु और शिष्य मिले, तो वह मिलन का दृश्य अद्भुत था।

शिष्य ने नोबेल पुरस्कार में मिले अपने स्वर्ण पदक को गुरु के चरणों में भेंटकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा, "मास्टर साहब, आपने जो कुछ मुझे पढ़ाया था, वह इतना अधिक था कि उससे अधिक और कुछ मैंने नहीं पढ़ा। यह पदक आपके उसी ज्ञान की देन है, जो आपने मुझे दिया।"

वयोवृद्ध और रुग्ण मास्टर साहब ने भावविभोर होकर स्वर्णपदक को अपने हाथ में उठा लिया। वह उसे देर तक गौर से देखते रहे और फिर अपने शिष्य को आशीर्वाद देते हुए उसे सौंप दिया। प्रो. अनिलेंद्र गंगोपाध्याय का यह मेधावी छात्र और कोई नहीं, बल्कि पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी प्रो. अब्दुल सलाम थे। प्रो. सलाम गत दिनों भारत की यात्रा पर आए थे।

1. भारत की यात्रा पर कौन आए थे?
2. इस घटना के बाद प्रो. अनिलेंद्र अपने शिष्य प्रो.सलाम के बारे में क्या सोचते होंगे?
3. इस घटना से हमें क्या सीख मिलती है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. ज़ेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थी। उनके स्थान पर यदि आप होतीं/होतें तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?
2. महादेवी वर्मा को काव्य प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का कोई पुरस्कार मिला हो और वह देशहित में या किसी आपदा निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/करेंगी?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. "मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। इस कथन के आलोक में आप यह अनुमान लगाएँ कि-

SCERT TELANGANA

- उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?
- लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

सृजनात्मक कार्य

महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस-पटल पर भी अपने बचपन की कोई स्मृति उभर कर आई होगी, उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

प्रशंसा

बचपन के दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक बच्चा किसी न किसी को अपना आदर्श मानता है, कोई अपने माता-पिता को, कोई गुरु को, कोई किसी महापुरुष को तो कोई अपने संगी साथियों को ही। वह उनका अनुकरण भी करता है। बेहतर भविष्य के लिए बचपन में जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

1. पाठ से निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।
   विद्वान, अनंत, निरपराधी, दंड, शांति।
2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यय अलग कीजिए और मूल शब्द बताइए-
   उदाः निराहारी = निर् + आहार + ई
   सांप्रदायिकता, अप्रसन्नता, अपनापन, किनारीदार, स्वतंत्रता
3. निम्नलिखित उपसर्ग/प्रत्यय की सहायता से दो-दो शब्द बनाइए।
   उपसर्ग - अन्, अ, सत्, स्व, दुर्
   प्रत्यय - दार, हार, वाला
4. पाठ में आए सामासिक शब्द छाँटकर विग्रह कीजिए।
   पूजा-पाठ = पूजा और पाठ

परियोजना कार्य

"लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा होगा?" यह प्रश्न पाँच अलग-अलग व्यवसाय के लोगों से पूछिए और उनके उत्तर लिखिए।

SCERT TELANGANA

अनोखा उपाय

उपवाचक

- रावूरि भरद्वाज

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हस्तिनगर था। हस्तिनगर का राजा कुमारवर्मा था। वह एक अच्छा शासक था। कुमारवर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फसलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढे सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

राज्य में पशुओं का चारा भी मिलना मुश्किल हो गया। कई किसान अपने-अपने पालतू जानवर सस्ते दामों पर बेचने लगे। ऐसी हालत में राजभंडार का अनाज प्रजा में बाँट दिया जाने लगा। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से अनाज उधार लिया जाने लगा। फिर भी राजा को भविष्य की चिंता सता रही थी। राजा उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगा लेकिन इसका कोई पता नहीं चला। राजा के मन में ये सवाल उठ रहे थे कि अड़ोस-पड़ोस के सभी राज्य हरे-भरे हैं। वहाँ की प्रजा भी सुखी है। लेकिन न जाने इस राज्य में ऐसा क्यों हो रहा होगा...? क्या कारण हो सकते हैं...? इस समस्या का हल कैसे किया जायेगा...?

राजा कुमारवर्मा ने इस समस्या के हल की चर्चा के लिए कई बुद्धिमानों, हाज़िर जवाबदारों और विद्वानों को बुलवाया। चर्चा में कुछ बुद्धिमानों ने बताया- ''हे महाराज, भूलें कई तरह की होती हैं। कुछ भूलें सरलता से पहचानी जाती हैं तो कुछ पहचानी नहीं जातीं।'' कुछ हाज़िरजवाबदारों ने बताया- ''हे राजन! कुछ भूलों का आभास होता है और कुछ का आभास भी नहीं होता।'' कुछ विद्वानों ने बताया- ''हे प्रभु, कुछ भूलें सुधार के रूप में हो जाती हैं तो कुछ सुधार भी भूलों के रूप में बदल जाते हैं। ऐसी ही कोई जानी-अनजानी बात छिपी होगी जिससे आज राज्य में यह समस्या उत्पन्न हुई है।

राजा कुमारवर्मा ने पूछा- ''अब आप ही बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?''

सभी ने विचार-विमर्श कर राजा को यह सलाह दी- ''सभी तरह से खुशहाल किसी राज्य के राजा से भेंट करें। वहाँ के शासन नियमों का पता करें यहाँ के शासन नियमों में सुधार करें। इससे राज्य की समस्या का हल अवश्य हो सकता है।''

राजा कुमारवर्मा को यह उपाय अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने पड़ोसी राज्य के महाराज सत्यसिंह से भेंट करने का निर्णय लिया और सेवकों से संदेश भेजा- ''राजाधिराज, महाराज सत्यसिंह जी को सादर प्रणाम। हमारे राज्य में अकाल से जनता त्रस्त है। इस समस्या के हल के लिए आपकी उचित सलाह व आपके शासन नियमों की जानकारी के लिए हम आपके यहाँ पधारना चाहते हैं। आशा है कि आप हमारा निवेदन स्वीकारें।''

SCERT TELANGANA

महाराज सत्यसिंह ने अपने संदेश में लिखा- ''आप और हम पड़ोसी राजा हैं। किसी भी समस्या में एक-दूसरे का हाथ बँटाना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि हैं। अतिथि के रूप में आपका सत्कार करने का सौभाग्य हमें मिल रहा है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।''

इस प्रत्युत्तर के पढ़ते ही राजा कुमारवर्मा को अपने राज्य की समस्या का हल करने का कुछ हद तक उपाय मिल ही गया था। फिर भी राजा स्वयं पड़ोसी राज्य के राजा से भेंट करना चाहते थे।

देखते-देखते वह दिन आ ही गया। राजा कुमारवर्मा का पड़ोसी राज्य में भव्य स्वागत हुआ। राज्य देखकर राजा आश्चर्यचकित होने लगे। चारों तरफ जलाशय भरे हुए थे। नदियाँ लबालब थीं। नहरें बह रही थीं। ठंडी हवाएँ सन-सना रही थी। खेत भरी हरियाली से भिन-भिना रहे थे। फूलों के चमन खुश्बू से महक रहे थे। बाग-बगीचे फल-फूलों से लदे थे। ये सारी चीज़ें देखकर राजा कुमारवर्मा को बेहद खुशी हुई।

महाराज कुमारवर्मा की भेंट महाराज सत्यसिंह से हुई। ''मित्र आपका राज्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। मुझे लगता है कि जिन शासन नियमों को मैं नहीं जानता, उनका आप पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी है। मैं भी अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सुशासन का हितोपदेश दीजिए।''

महाराज सत्यसिंह ने पहले तो मना कर दिया। किंतु राजा कुमारवर्मा के अनुरोध पर उन्होंने कहा- ''नहीं महाराज, मुझे मजबूर मत कीजिए। मैं दोषी हूँ। जो दोषी होता है, उसे हितोपदेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। मैं एक बार अपने अंगरक्षक के साथ इसी तरह उपवन में चर्चा कर रहा था। तभी मुझे राजमाता के पास ज़रूरी बात करने के लिए जाना पड़ा। मैंने अंगरक्षकों को अपने लौटने तक वहीं खड़े रहने का आदेश दिया था। राजमाता से बात करते-करते रात हो गयी। वहीं पर मैंने भोजन किया। सो गया। अगले दिन सुबह उठकर देखा तो खूब बारिश हो रही थी। सेवकों ने बताया कि देर रात से बारिश हो रही है। जब मैंने उपवन लौटकर देखा तो अंगरक्षक उसी स्थान पर भीगते हुए खड़े हैं। मैं बातचीत में इतना निमग्न हो गया था कि अंगरक्षकों को जाने के लिए भी नहीं कह सका। यह मेरी भूल थी। अतः ऐसी भूल करने वाले राजा को हितोपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। मुझे क्षमा कीजिए।''

राजा कुमारवर्मा ने महाराज सत्यसिंह की इस घटना को पूरे ध्यान से सुना। उन्हें लगा कि राजमाता ही उन्हें हितोपदेश दे सकती है। उन्होंने राजमाता के दर्शन किये और अपनी इच्छा बतायी।

''पुत्र, सच कहूँ तो मैं भी दोषी हूँ। एक बार मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी के लिए सुंदर ज़ेवर बनवाये। मेरे मन में ज़ेवर के प्रति लालच पैदा हो गया। यदि मैं अपने पुत्र या बहू से ज़ेवर माँगती, तो वे कभी मना नहीं करते। एक राजमाता का ज़ेवरों के प्रति आकर्षण होना दोष है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति लालच रखना भी ग़लत है। ऐसी भूल करने वाली मैं, स्वयं को हितोपदेश करने के योग्य नहीं

SCERT TELANGANA

समझती।''

राजा कुमारवर्मा आश्चर्य में पड़ गया। बाद में राजगुरु से भेंट की और उनसे उपदेश के लिए निवेदन किया।

तब राजगुरु ने कहा, ''महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। मैं इसके योग्य नहीं। एक बार सुदूर देश से एक पंडित आया था। राजदर्शन करना चाहा। उसके पांडित्य की जाँच करने का समय न होने के कारण मैंने राजा को यह कह दिया कि वह बड़ा पंडित है। राजा मुझ पर असीम विश्वास रखते हैं। उन्होंने पंडित को ढेर सारा इनाम दिया। आगे चलकर मुझे पता चला कि वह पंडित केवल औसत था। मेरे आलस के कारण मैं राजा को उचित मार्गदर्शन न कर सका। ऐसी भूल करने वाला मैं, स्वयं को हितोपदेश के योग्य नहीं समझता।''

कुमारवर्मा बड़ी सोच में पड़ गया।

इन तीन घटनाओं से उसे यह सीख मिली कि हमें छोटी से छोटी भूल भी नहीं करनी चाहिए। यदि हमसे कोई भूल हो तो उसे सुधार लेना चाहिए।

राजा ने इस सीख का पालन किया। कुछ ही दिनों में उसका राज्य खुशहाल बन गया।

(वर्ष 2012 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री रावूरि भरद्वाज तेलुगु के प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंगारु कुंदेलु' से ली गयी है। इसका अनुवाद श्री सय्यद मतीन अहमद ने किया है।)

प्रश्न :

1. राजा कुमारवर्मा के राज्य में अकाल की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई होगी?
2. अकाल की समस्या के परिष्कार के लिए राजा ने क्या-क्या उपाय सोचे होंगे?
3. राजा सत्यसिंह ने राजा कुमारवर्मा का स्वागत कैसे किया?
4. आपकी दृष्टि में किसकी भूल सबसे बड़ी थी और क्यों?
5. राजा कुमारवर्मा की जगह पर यदि आप होते तो अकाल की समस्या से कैसे जूझते?

SCERT TELANGANA

शब्द संपदा

अनंत	- जिसका अंत न हो
अनुकंपा	- दया
अपरिसीम	- असीमित
अपव्यय	- फ़िजूलखर्ची
अभियोग	- आरोप
अल्पव्यस	- कम उम्र
अवमूल्यन	- मूल्य गिरा देना
अवली	- छोटा आँवला
अस्तगामी	- डूबता हुआ
अस्मिता	- अस्तित्व, पहचान
अहेतुक	- अकारण, बिना किसी कारण के
आबशार	- निर्झर, झरना
इतिहासवेत्ता	- इतिहास का जानकार
ईषत	- थोड़ा, कुछ-कुछ, आंशिक रूप से
उछाह	- उत्सव, आनंद
उन्मत्त	- मतवाला
उपनिवेश	- वह विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्र के लोग आकर बस गए हों
कंडे	- गाय भैंस के गोबर से बने उपले जो ईंधन के काम आते हैं।
कांजीहौस	- मवेशीखाना, वह स्थान जहाँ लावारिस(काइन हाउस) जानवर रखे जाते हैं।
काबा	- मुसलमानों का पवित्र स्थान
कारनै	- कारण
किंकिणी	- करधनी
कुलेल (कल्लोल)	- क्रीड़ा
केलि	- क्रीड़ा
कौड़ी न पाई	- कुछ प्राप्त न हुआ
क्षरण	- नाश
क्षीणवपु	- दुबला पतला, कमज़ोर शरीर
खीनाँ	- क्षीण हुआ
	खुलेगी साँकल बंद द्वार की- चेतना व्यापक होगी, मन मुक्त होगा
गंडा	- मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा
गण्य	- गणनीय, सम्मानित
गदना	- बनाना

SCERT TELANGANA

गराँव - फुँदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है।
गोई - जोड़ी

चिरी - फाड़ी हुई
चुवै - रिसता है

छद्‌म - बनावटी

जनमिया - जन्म लेकर
जूआ (जुआ) - बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी
जेब टटोली - आत्मलोचन किया

झख मारना - मजबूर होना, वक्त बरबाद करना

टाटी - टट्टी, परदे के लिए लगाए हुए बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला
टिटकार - मुँह से निकलने वाला टिक-टिक का शब्द

डाँड़ा - ऊँची ज़मीन

तात्कालिक - उसी समय का
तितल्ले - तीसरी मंजिल

थान - पशुओं के बाँधने की जगह
थुक्‌पा - सत्तू या चावल के साथ मूली, हड्डी और माँस के साथ पतली लेई की तरह पकाया हुआ खाद्य-पदार्थ
थूँनी - स्तंभ, टेक
थोङ्‌ला - तिब्बती सीमा का एक स्थान
दावानल - जंगल की आग
दोनों चिटें - जेनम गाँव के पास पुल से नदी पार करने के लिए जोङ्पोन् (मजिस्ट्रट) के हाथ की लिखी लमयिक् (राहदारी) जो लेखक ने अपने मंगोल दोस्त के माध्यम से प्राप्त की
दिग्भ्रमित - रास्ते से भटकना, दिशाहीन
दुलीचा - कालीन,छोटा आसन
दोन्विवक्स्तो - स्पेनिश उपन्यासकार सार्वेतेज (17 वीं शताब्दी) के उपन्यास 'डॉन विवक्ज़ोट' का नायक, जो घोड़े पर चलता था।

धृष्ट - लज्जारहित, निःसंकोच

नक्काशीदार - बेल-बूटे के काम से युक्त
निरचू - थोड़ा भी
निरापद - सुरक्षित
निराहार - बिना कुछ खाए-पिए
निर्वासन - देश निकाला
नैसर्गिक - सहज, स्वाभाविक

SCERT TELANGANA

पनहिया - पशु बाँधने की रस्सी
पछाई - पालतू पशुओं की एक नस्ल
परमधाम - स्वर्ग
परमार्थ - दूसरों की भलाई
पराकाष्ठा - अंतिम सीमा
परितृप्ति - पूरी तरह संतोष प्राप्त करना
परिधान - वस्त्र
प्रगल्भ - वाचाल, बोलने में संकोच न करने वाला
प्रतिमान - मानदंड
प्रतिवाद - विरोध
प्रतिष्ठित - सम्मानित
प्रतिस्पर्धा - होड़
पलायन - दूसरी जगह चले जाना, भागना
प्राणपण - जान की बाजी

बटमार - रास्ते में यात्रियों का लूट लेने वाला
बालिंडा - छप्पर की मज़बूत मोटी लकड़ी
बिड़ाल - बिलाव
बूठा - बरसा

भग्नावशिष्ट - खंडहर
भाँडा फूटा - भेद खुला

मरकत - पन्ना नामक रत्न
मर्म भेदी - अतिदुखद, दिल को लगने वाला
मल्लयुद्ध - कुश्ती
मसलहत - हितकर
माझी - नाविक, ईश्वर, गुरू
मिथक - प्राचीन पुराकथाओं का तत्व, जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ को वहन करता है
मुकुलित - अधखिला
मुखातिब - संबोधित
यूथभ्रष्ट - समूह या झुंड से निकला या निकाला हुआ

रगेदना - खदेड़ना
रस्सी कच्चे धागे की - कमज़ोर और नाशवान सहारे

लहरिया - रंग-बिरंगी धारियों वाली विशेष प्रकार की साड़ी जो सामान्यतः तीज, रक्षाबंधन आदि त्योहारों पर पहनी जाती है।

वर्चस्व - प्रधानता
वशीकरण - वश में करना
वाइस चांसलर- कुलपति

SCERT TELANGANA

वाख - वाणी,शब्द या कथन
वादी - घाटी
विग्रह - अलगाव
विज्ञापति - प्रचारित/सूचित
विषाद - उदासी
वृंत - डंठल
व्याली - सर्पिणी

शती - सौ वर्ष का समय
शोख - चंचल

सनई - एक पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सी बनाई जाती है।
समभावी - समानता की भावना
सरपत - घास-पात, तिनके
सर्वव्यापक - सबमें रहने वाला
साबिक़ा - वास्ता, सरोकार
सहिष्णुता - सहनशीलता
साहिब - स्वामी, ईश्वर
सुजान - चतुर, ज्ञानी
सुभर - अच्छी तरह भरा हुआ
सुरखाब - चक्रवाक पक्षी
सुरा - शराब
सुषुम सेतु - सुषुम्ना नाड़ी रूपी पुल, हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक नाड़ी (सुषुम्ना) जो नासिका के मध्य भाग में स्थित है
सोंधी - सुगंठित, मिट्टी पर पानी पड़ने से उठने वाली गंध
सौंदर्य प्रसाधन - सुंदरता बढ़ाने वाली सामग्री
स्वान (श्वान) - कुत्ता

हरना - आकर्षिक करना
हरारत - उष्णता या गर्मी
हिमकर - चन्द्रमा
हिम-आतप - सर्दी की धूप
हुकृंति - हुंकार
हुजूम - जनसमूह, भीड़

SCERT TELANGANA